Published by Vallabhadas Tribhuvandas Gandhi, Secretary,
Jaina Atmananda Sabha, Bhavanagar.

Printer:—Ramchandra Yesu Shedge, Nirnaya-sagar Press,
23, Kolbhat Lane, Bombay.

आ शुभकार्यमां मदद आपनार सद्गृहस्थोनां शुभनाम.

रुपीया.

७१. झवेरी दलीचंद फूलचंद.

५१. झवेरी नगीनदास कपूरचंद, ह. बाई रुक्मिणीबाई.

५१. शेठ गोविंदजी रुगनाथ.

५१. झवेरी हेमचंद मोहनलाल.

५१. मारवाडी लखमीचंद वेद.

५१ शेठ साकरचंद मोतीलालना मरहूम पत्नी जीवीबाईना स्मरणार्थे.

२५ शेठ चतुरभुज हेमराज.

२५ „ पोपटलाल मूलजी.

२५ „ हंसराज कपूरचंद.

२१ „ खीमचंद मूलजी.

२१. शेठ जमनादास मूळजी.

२०. शेठ गिरधरलाल बापुलाल कापडीया.

१५. शेठ गिरधरलाल वीरचंद.

१५. शेठ नरोत्तमदास मोतीचंद भावनगरवाला.

१५. शेठ वल्लभदास लालचंद.

२२)= परचुरण, सद्गृहस्थो तरफथी.

आत्मकान्तिप्रकाश–अनुक्रमणिका.



सझाय-संग्रह-अनुक्रमणिका-

मुनिश्रीवल्लभविजयजी विरचित ।

सज्झाय संग्रह ।

१०८ श्रीहंसविजयजी महाराज विरचित ।

मुनिश्रीचतुरविजयजी विरचित ।

गवैया प्राणसुख विरचित ।

ॐ

महामुनिराज श्रीमद्विजयानन्दसूरि-
प्रसिद्धनाम-श्री आत्मारामजी-महाराजजी विरचित
द्वादश भावना स्वरूप।

दोहरा।

पावन भावन मन वसी, सब दुःख मेटनहार।
श्रवण सुनत सुख होतहै, भवजल तारनहार ॥ १ ॥

१ अथ अनित्य भावना

(सवैया-इकतीसा)

संध्यारंग छिनभंग सजन सनेही संग
उडत पतंगरंग चंद रविसंगमें।
तन कन धन जन उदधितरंग मन
सुपनेकी संपतमें रांक रमे रंगमें।
देखते ही तोरे भोरे रंकको रे तोरे भये
राजन भिखारी भये हीन दीन नंगमें।
वादरकी छाया माया देखते विनस जात।
भोरे चिदानंद भूलो काहेकी तरंगमें ॥ १ ॥
इंद चंद सुर विंद आनन आनंद चंद
नरनको इंद सोहे नीके नीके वेसमें।
उत्तम उत्तंग जोध जगमें अभंग सोध
घूमत मतंग रंग राजत हमेसमें।
रंभा तरुखंभा जैसी माननी अनुप ऐसी
रसक दसक दिन माने सुख एसमें।

परले पवन तृण उडत गगन जैसे
खबर न काहु वाहु गये काहु देसमें ॥ २ ॥

२ अथ दूसरी अशरण भावना ।

मात तात दारा भ्रात सजन सनेही जात
कोउ नही त्रात भ्रात नीके देख जोयके ।
तन धन जोबन अनंगरंग संग रसे
करम भरम बीज गये मूढ बोयके ।
नाम न निशान थान रान खान लेखियत
दरव गरव भरे जरे नंगे होयके ।
त्राता नही कोउ ऐसे वलवंत जंत संत
अंतकाल हाथ मल गये सब रोयके ॥ १ ॥
साजन सुहाये लाख प्रेमके सदनवीच
हसे मोह फसे कसे नीके रंग लसे हैं ।
माननीके प्रेम लसे फसे धसे कीच वीच
मीचके हिंडोले हीच मूढ रंग रसे हैं ।
चपलासी झमक अनित वाजी जगतकी
रुंखनमे वास रात पंखी चहचसे हैं ।
मोहकी मरोर मोर ठानत अधिक ओर
छोर सव जोर सिर काल वली हसे हैं ॥ २ ॥

३ अथ तीसरी संसार भावना ।

राजा रंक सुर कंक सुंदर सरूप भंक
रतिपतिरूप भूप कुष्ठ सरवंग है ।

अरि मरी मित धरी तात मात नारी करी
रामा मात खरी करी धूआ वरी रंग है।
उलट पलट नटवटकेसो खेल रच्यो
मच्यो जगजालमे निहाल बहु रंग है।
एते माहे तेरो जेरो कोउ नही भ्रम फेरो
गेरो चिदानंद मेरो तूही सरवंग है ॥ १ ॥
रंग चंग सुख मंग रागलाग मोहे सोहे
छिनकमें दोहे जोहे मौतही मरदके।
नीके बाजे गाजे साजे राजे दरवारहीमें
छिनकमें कूक हूक सुनीये दरदके।
जगमें बिहाल लाल फिरत अनादि काल
सारमेय थाल जैसे चाटत छरदके।
मद भरे मरे खरे जंगरमे परे जरे
देखत नजरे धरे छरे है गरदके ॥ २ ॥

४ अथ चौथी एकत्व भावना।

एक टेक पकर फकर मत मान मन
जगतसरूप सब मिथ्या अंधकूप है।
चारों गत भटक पटक सब रूप रंग
यति मति सति रति छति एकरूप है।
करमको घेरो गेरो नाना कछु नही तेरो
मात तात भ्रात तेरो नाही कर चूप है!
चिदानंद सुखकंद राकाके पूरन चंद
आतमसरूप मेरे तूही निज भूप है ॥ १ ॥

आथ साथ नाही चरे काहेको गेरत गरे
संगी रंगी साथी तेरे जाथी दुःख लहीए ।
एकरो चकेरो तेरो संगी साथी नही नेरो
मेरो मेरो करत अनंत दुःख सहीए ।
ऊखरमें मेह तैसो सजनसनेह जेह
खेहके वनाये गेह नेह कहा चहीए ।
जान सब ज्ञान कर वासन विषम हर
इहां नही तेरो घर जातें तोसो कहीए ॥ २ ॥

५ अथ पांचमी अन्यत्व भावना ।

तेल तिल संग जैसे अगनि वसत संग
रंग है पतंग अंग एक नाही कीन है ।
दधिनेह अभ्रमेह फूलमें सुगंध जेह
देह गेह चित एह एक नही भीन है ।
करमके संग एक रंग ढंग तंग हूआ
डोलत सछंद मंद गंद भरे दीन है ।
आतम सरूप धाया पुग्गलकी छोर माया
आपने सदन आया पाया सब धीन है ॥ १ ॥
काया माया वाप ताया सुत सुता मित भाया
सजन सनेही गेही एही तासो अन है ।
ताज वाज राज साज मान गान थान लाज
मीत प्रीत रीत चींत काहुका ए धन है ।
चेतन चंगेरो मेरो सबसे एकेरो हेरो
डेरो हुं वसेरो तेरो फेरे नेरो मन है ।

आपने सरूप लग माया काया जान ठग
उभग उमग पग मोखमें लगन है ॥ २ ॥

६ अथ छट्ठी अशुचि भावना ।

षट चार द्वार खूले गंदगीके संग झूले
हिले मिले खिले चित कीट जूं पुरीसके ।
हाड चाम खेल घाम काम आम आठो जाम
लपट दपट पट कोथरी भरी सके ।
गंदगीमें जंदगी है बंदगी करत नत
तत्त बात आत जात रात दिन जीसके ।
मैली थैली मेली वेली वैली बदफैली जैली
अंत काल मूढ तेऊ मूए दांत पीसके ॥ १ ॥
जननीके खेत सृग रेतको करत हार
उरध चरन करी धरी देह दीनरे ।
सातो धात पिंड धरी चमक दमक घरी
मद भरी मरी खरी कारी बाजी छीनरे ।
प्रीय मीत जार कर छरनमें राख कर
आन बैठे निज घर साथ दीया कीनरे ।
छरद करत फिर चाटत रसक अत
आतम-अनुप तोहे उपजे ना घीनरे ॥ २ ॥

७ अथ सातमी आश्रव भावना ।

हिंसा झूठ चोरी गोरी कोरी केरे रंग रस्यो
क्रोध मान माया लोभ खोभ घेरो देतु है ।

राग देस ठगभेस नारी राज भक्त देस
कथन करन कर्म भ्रमका स हेतु है ।
चंचल तरंग अंग भामनीके रंग चंग
उडत विहंग मन अति गरभेतु है ।
मोहमें मगन जग आतम धरमठग
चले जग मग जिय ऐसे दुःख लेतु है ॥ १ ॥
नाक कान रान काट वाटमे उचाट ताट
सहे गहे वंदी रहे दुःख भय मानने ।
जोग रोग सोग भोग वेदना अनेक थोग
परे विललाये दुःख लीये पीये जानने ।
अपने कमाये पाप भोगनमें आये आप
अंग जरे कुष्ट भरे इंदुवत आनने ।
आपने करम करी दुःख रोग पीर परी
मिथ्यामति कहे एतो किये भगवानने ॥ २ ॥

८ अथ आठमी संवर भावना ।

हिरदेमें ज्ञान धर पाप पंथ परिहर
निहचे सरूप कर डर जर करसे ।
आवत महान अघ रोध कर हो अनघ
आपने विकार तज भज कर भरसे ।
करम पटल ढग तिनमांही देइ अग
निकसत गुनदग आप पर ठरसे ।
करम भरम जावे मोद मन वोध पावे
ऐसा रस रसीया ते आरसकूं परसे ॥ १ ॥

सत मत नव तत भेदाभेद वितहित
मीत जीत तीन नित तीन तेरे बोधके ।
तीन चीन मीन लीन उदक प्रवीन पीन
खीन दीन हीन तज रजकसुं सोधके ।
सत्ताको सरूप जान परणत भ्रम मान
निजगुन तान जेही महानंद सोधके ।
भ्रमजाल परहरे काहुकी न भीत करे
संजमके वारे मारे कर्म सारे रोधके ॥ २ ॥

९ अथ नवमी निर्जरा भावना ।

जैसे न्यारी सुध रीत छानत कनक पीत
डारत असुध लीत मोद मन कर्यो है ।
तैसेही सुधार यार करम पहार डार
मार मार चार यार लार तेरे पर्यो है ।
जौंलो चित रीत नाही तौंलो मिटे भीत नांही
कुगर डगर बीच लूटवेको खर्यो है ।
आतम सियाने वीर करमकी मिटे पीर
परम अजीत जीत सिवगढ चर्यो है ॥ १ ॥
सत जत सील तप करम भरम कप
वासना सनेह गेह चितमें न धरीये ।
नरक निगोद रोग भोगत अनंत काल
माया भ्रमजाल लाल भवदधि तरीये ।
संकटमें पर्यो दुःख भर्यो मर्यो वसुधामें
चर्यो जग छोर भोर अब मन डरीये ।

चारत कंकन धर दोस इष्ट दूर कर
अरहत ध्यान कर मोख वधू वरीये ॥ २ ॥

१० अथ दशमी लोक स्वरूप भावना।

जामाधार नराकार भामरी करत यार
लोकाकार रूप धार कह्या करतारने ।
राज दस चार जान ऊंच ताको परिमान
अधो विसतार राज सात है पतारने ।
घटत घटत मृत मंडलमें एक राज
पंचम सुरग मध्य पांच राज धारने
आदि अंत नही संत स्वयंसिद्ध रूप एतो
षट द्रव्य वास एही आपत उचारने ॥ १ ॥
नरक भवन खिति तनु वात घन मिति
वसत पतारवार करमके दोषमें ।
खिति आप तेज वात वन रन त्रस घन
विगल तिगल पसु पंखी अहि रोषमें ।
नर नारी भेसधारी धरमविहारी सारी
वीतराग ब्रह्मचारी नारी धन तोषमें ।
सुरगन सुख मन नाटक करत घन
धन धन प्रभु सिद्ध पूरे सुख मोषमें ॥ २ ॥

अथ ग्यारहमीधर्म भावना।

खिमा कर तोष कर कपट लपट हर
मान अरि मारकर भार सब छोरके ।

सत परिमान कर पाप सब छारकर
करम इंधन जर तपधूनी जोरके ।
तपोधन दान कर सील मीत चित धर
निजगुन वासकर दस धम्म दोरके ।
आतम सियाने माने एह धम्मरूप जाने
पाने जाने दोरे भोरे कलमल तोरके ॥ १ ॥
असी चार लाख जोन खाली तिहां रही कोन
वार ही अनंत जंत जिहां नही जाया है ।
नवे नवे भेष धार रांक ढांक नर नार
दुःख भुख मूक घूक ऊंच नीच पाया है ।
राजा राना दाना माना सूरवीर धीर छाना
अंतकाल रोया सब काल बाज खाया है ।
तोहे समझाया अब औसर पुनीत पाया
निजगुन धाया सोइ वीरप्रभु गाया है ॥ २ ॥

१२ अथ बारमी बोधिदुर्लभ भावना ।

सुंदर रसीली नार नाककी वसनहार
आप अवतार मार सुंदर दिदार रे ।
इंद चंद धरणिंद माधव नरिंद चंद
वसन भूषन वृंद पाए बहु वाररे ।
जगतके ख्याल रंग बदरंग लालमाल
मुगता ऊजाल डाल रिदेबीच हाररे ।
एतो सब पाये मन भाये काम जगतके
एक नहीं पाये विभु वीरवचताररे ॥ १ ॥

॥ अर्हम् ॥

॥ पंचतीर्थपूजा ॥



॥ दोहरा ॥

वीरजिनंद नमी करी, सिमरी सारदमाय ।
पंचतीर्थ पूजा रचुं, दर्शन शुद्धि उपाय ॥ १ ॥
तरना होवे जीवका, तीरथ कहिये तेह ।
पूजन करिये सुधकरी, मन वाणी अरु देह ॥ २ ॥
तीरथ नहि जग एक है, मैं तो एक हि एक ।
भक्ति शक्ति पूजन करूं, तीरथ पांच विवेक ॥ ३ ॥
जंगम थावर भेदसे, तीरथ दो सुखकार ।
जंगम तीरथ जानिए, विचरे उग्र विहार ॥ ४ ॥
जंगम तीरथ तारते, घर अंगण पद धार ।
नमन करो शुभभावसे, धन्य साधु अनगार ॥ ५ ॥
थावर तीरथ थिर रहे, आवे नहि चल आप ।
तिसकारण तीरथ भवी, जाय खपावे पाप ॥ ६ ॥
तीर्थंकर गणधर यती, फरसी भूमी जेह ।
उत्तम उत्तम संगसे, कहिये तीरथ एह ॥ ७ ॥
अष्टापद सिधगिरि नमू, आबू अरु उज्जंत ।
तीर्थ समेतशिखर नमू, होय कर्मको अंत ॥ ८ ॥
पंच तीर्थके आदिके, अक्षर साथ मिलाय ।
करिये जाप सदा भवी, नमः असिआउसाय ॥ ९ ॥

अट्ठावय आईगिरी, आबू तह उज्जंत ।
मोक्खगिरी मिल आदिवर्ण, भवि ॐकार सुमंत ॥ १० ॥
उत्कृष्टी सव द्रव्यसु, आठ जघन परिमान ।
भविजन भावे कीजिये, पूजा श्रीभगवान ॥ ११ ॥

(१) अष्टापदतीर्थपूजा ।

दोहरा ।

अष्टापद कैलास है, जास धवलगिरि नाम ।
ऋषभदेव जस मंडनो, पूरण सुखको धाम ॥ १ ॥

सारंग–केहरवा ।

(हमे दम देके सोतन घर जाना–चाल)

मेरे मन तीर्थ अष्टापद माना ।
अष्टापद माना अष्टापद माना मेरे मन तीर्थ–अंचली ॥
समवसरे प्रभु ऋषभ जिनंदा ।
पूछा भरत प्रभुजीने वखाना–मेरे० १ ॥
अवसरपिणीमें मुझ सम होसी ।
वीस तीन जिन और सयाना–मेरे० २ ॥
भरते मणिमय विंव वनाये ।
निज निज देहरु रूप सुहाना–मेरे० ३ ॥
सुंदर मंदिर कांति मनोहर ।
देख सुनत भविजन मन माना–मेरे० ४ ॥
आदि जिनेश्वर मोक्ष सधारे ।
देव किया ओच्छव निरवाना–मेरे० ५ ॥
आतमलक्ष्मी तीर्थ अनुपम ।
वल्लभ हर्ष प्रभुगुण गाना–मेरे० ६ ॥

दोहरा ।

संभवजिनवर आदि ले, चार आठ दस दोय ।
दक्षिणदिशि आदि क्रमे, चउपासे जिन जोय ॥ १ ॥

झींझोटी–दादरा ।

(जाओ जाओ सैयां मोसे न बोलो)

पूजो पूजो प्रभु तीर्थपति जग तारक भाव धरी ।
और नहीं जग कोई विना प्रभु वारक भाव अरि० पू०
पूजा प्रभुकी करी, सफल वो ही घरी ।
नाणुं मिले पिण टाणुं मिलेनहीं वात कही ए खरी पू० १॥
आतमशक्ति वरी, तिस भव मुक्ति ठरी,
यात्रा करे जो अष्टापद तीरथ भूचर आप चरी । पू० २॥
प्रभु तारण तरण तरी, तुम तीरथ भाव धरी ।
चक्री सगरसुत रक्षा निजातम कारण तीर्थ करी–पू० ३॥
केवली मुख उच्चरी, करुं आदर पांव परी ।
सूत्र वसुदेव हिंडी आवश्यक पाठको अनुसरी । पू० ४ ॥
आतम लक्ष्मी भरी, खोट न आवे जरी ।
हर्ष अनुपम वल्लभ तीरथ तीर्थपति सिमरी–पू० ५ ॥

काव्य ।

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ।
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय-
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

मंत्र ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-

निवारणाय श्रीमते अष्टापदतीर्थमंडनाय श्रीऋषभादि-चतुर्विंशतिजिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

गीत।

पंजावीठेका ठुमरी। रागिणी सरपरदा।

(गोपाल मेरी करुणा क्यों नहीं आवे–चाल)

महावीरप्रभु मुखसे यूं फरमावे–महावीर–अंचली।
अष्टापद तीरथ करे यात्रा रे। तिस भव मोक्षे जावे–म० १॥
गौतमस्वामी सुनकर आए रे। यात्रासे सुख पावे–म० २ ॥
पन्नरसो तापस प्रतिवोधे रे। शिवपुर वो भी जावे–म०३ ॥
दर्शन शुद्धि कारण भवियां रे। तीरथ भेटो भावे–म० ४ ॥
आतमलक्ष्मी निजगुण प्रगटे रे। वल्लभ हर्ष मनावे–म०५ ॥

(२) श्रीसिद्धाचलतीर्थपूजा।

दोहरा।

विमलाचल विमला करे, सिद्धाचल भवि सिद्ध।
शत्रुंजय अरि जयकरे, प्रगटे आतम रिद्ध ॥ १ ॥

देश–त्रिताल–लावणी।

(कर पकर प्रीतयुत वोलत नार सयानी। चाल)
शत्रुंजय तीरथनाथ नमो भविप्रानी,
नहीं तीरथ जगमें और कोई इस सानी। श–अं० ॥
जस महिमाका नहीं पार जाउं वलिहारी,
आदिजिन आए पूर्व नवाणु वारी।
हुए सिद्ध प्रथम जिनराज प्रथम गणधारी,

तिस कारण पुंडरिक नाम जपे नर नारी ।
महिमा सीमंधर देवने जास वखानी—नहीं० १ ॥
पांडव षट् देवकी पुत्र भरत बलवंता,
श्रीरामचंद्र निर्वान ध्यान भगवंता ।
नारद शुक सेलक पुत्र थावच्चा संता,
हुआ सिद्ध अनंता जीव करी भव अंता ।
सिद्धाचल साचा नाम प्रभुकी वानी—नहीं० २ ॥
सुंदर नव तत्वस्वरूप टूंक नव जानो,
उत्तमगुण श्रीब्रह्मचर्य वाड नव मानो ।
नवपद महिमा नहीं पार ध्यान मन आनो,
आतमलक्ष्मी निजरूप हर्षको टानो ।
मुक्तिवल्लभ जिनदेव तीर्थ फरमानी—नहीं० ३ ॥

दोहरा ।

शाश्वत शिवसुख संपजे, तिण शाश्वत गिरि नाम ।
वंदन पूजन भावसे, लीजे पद अभिराम ॥ १ ॥

(काफी—त्रिताल—प्रभु मोरे अवगुन चित्त न धरो)

भविजन अर्चन तीर्थ करो ।
समता सुमति धार हिये निज, भवभव पाप हरो—भ० अं०
तीरथयात्रा मनमल धोवा, निर्मल नीर झरो ।
पुरुषोत्तमगुण सिमरन करके, पुण्यभंडार भरो—भ० १ ॥
तनसे नीचा मनसे ऊंचा, इसविध तीर्थ चरो ।
ऋषभ जिनंद जुहारी धारी, मन भवसिंधु तरो । भ० २ ॥
तीर्थंकर गणधर मुनि पुंगव, फरसे तीर्थ बरो ।

सुर सुरपति नर नरपति सम्यग–दृष्टि माने खरो। भ० ३।
कंचनगिरि कंचनसम निर्मल, आतमरूप धरो।
शत्रुंजय शत्रुको जीती, फिर भवमें न फरो। भ० ४॥
जिनपूजन तीरथ सेवासे, आतम लक्ष्मी वरो।
हर्ष अनुपम वल्लभ प्रभुके, चरनन नित्य परो। भ० ५॥

काव्य।

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः।
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय–
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम्॥ १॥

मंत्र।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्री सिद्धगिरितीर्थमंडनाय श्रीमते श्रीऋषभदेव-जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा॥ २॥

गीत।

(दरबारी कानडा–ताल दादरा ठुमक चलत रामचंद्र)

पुजन करत तीर्थराज आनके सुमतियां–पु० अं०॥
हिल मिलकर मिलत भाय, शुद्ध धर्म मन मनाय,
गावो गावो जिनंदराय, गुणगणकी वतियां–पु० १॥
ठुमक ठुमक नाच नाच, एक चित्त तान राच,
एक एही प्रभुसे जाच, न फिरूं चउगतियां–पु० २॥
संघसाथ भरतराय, छैः री पारी तीरथ आय,
औरभी यही ठाठ बनाय, आवत संघ ततियां–पु० ३॥

आतम लक्ष्मी कारण ईस, तीर्थ पूजे अहरनीस,
हर्ष पामी नामी सीस, वल्लभ प्रभु नतियां—पु० ४ ॥

(३) अर्बुदाचलतीर्थपूजा ।

दोहरा ।

अर्बुदगिरि तीरथ नमू, आदिजिनंद दयाल ।
विमलसाह मंत्री कियो, मंदिर अति हि रसाल ॥ १ ॥

(पहाडी—लावणी—जो घरि जावे प्रभुके ध्यानमें)

जो दिन जावे भविका तीर्थमें उत्तम वो मानी ।
सारमें सार यही सागारमें अनगारमें आचारमें
परमार्थ पिछानी—जो दिन० अंचली ॥
गाम आबू देलवारे, अनुपम मंदिर चारे,
करन यात्रा पुण्यवारे, समकितदृष्टि होवे जो
सागारमें अनगारमें आचारमें परमार्थ पिछानी—जो० १ ॥
विमल मंत्री बनवाया, मंदिर आदि जिन राया,
नेमि मंदिर सुखदाया, वस्तुपाल तेजपाल होया
सागारमें आचारमें विचारमें परमार्थ पिछानी—जो० २ ॥
चतुर्मुख दर्शन पामी, दर्श करो महावीरस्वामी,
मिले पद आतमरामी, वल्लभ हर्षे लक्ष्मी ज्ञानागारमें
अनगारमें आचारमें परमार्थ पिछानी—जो० ३ ॥

दोहरा ।

मनमोहन जिनघर खरो, मन मोहन जिनदेव ।
मनमोहन पूजा रची, मनमोहन फल लेव ॥ १ ॥

(गजल–कव्वाली । चाहे बोलो या न बोलो)

पूजन तो कर रहाहूं, चाहे तारो या न तारो–अं० ॥
प्रभु तीर्थस्वामी तुम हो, निज तीर्थ आदि तुम हो ।
तुम तीर्थ आ रहाहूं, चाहे तारो या न तारो–पू० १ ॥
प्रभु ध्येय नाम तुमरा, ध्याता है नाम हमरा ।
तुम ध्यान ला रहाहूं, चाहे तारो या न तारो–पू० २ ॥
मंत्री विमलको कीनो, विमलात्मरूप पीनो ।
मैं भी वो चा रहाहूं, चाहे तारो या न तारो–पू० ३ ॥
मंत्रीजी वस्तुपाला, लघु भाई तेजपाला ।
तस नेमि गा रहाहूं, चाहे तारो या न तारो–पू० ४ ॥
मुख चार सुख वर्षे, प्रभु आत्मलक्ष्मी हर्षे ।
वल्लभ तो पा रहाहूं, चाहे तारो या न तारो–पू० ५ ॥

काव्य ।

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ।
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय–
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

मंत्र ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीअर्बुदाचलतीर्थमंडनाय श्रीमते श्रीऋषभादि-जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

गीत ।

(मालकोस–त्रिताल–मुखमोरमोर–)

जिन पूज पूज सुख पाय जात ।

मन शुद्ध साफ कर अपनो गात–जिन० अंचली ॥
तीर्थकी महिमा मेरे मन भाई, देख देख मनुवा हुलसाई ।
किये जात करमनको घात–जिन० १ ॥
मूर्त्ति प्रभुकी रसीली दश चारी, चौद राज ऊपर आधारी।
चले जात भवि दिनन रात–जिन० २ ॥
कुमारपाल सुंदर जिनमंदर, मूलनायक शांतिजिन अंदर।
धन नर नार जो करत जात–जिन० ॥ ३ ॥
पदवी अचल अचलगढ पावे, आतम लक्ष्मी अति हर्षावे ।
वल्लभ ए जिनमतकी बात–जिन० ३ ॥

(४) उज्जयंततीर्थपूजा ।

दोहरा ।

उज्जयंत गिरनार है, रैवतकाचल नाम ।
नेमिनाथ भगवानका, धाम परमपद्धाम ॥ १ ॥

(पीलू–बरवा–ताल केहरवा, नाथ निज नगर देखाडोरे ।)

नाथ गिरनारके पूजोरे । सरण है अनाथ–
करो तुम साथ नाथ गिरनारके पूजोरे । अंचली ॥
दीक्षा केवल मोक्ष ए तीनो, कल्याणक जिन कहियेरे ।
तीर्थंकर श्रीनेमिनाथ, वर्त्तमान सिमरियेरे–सरण० १ ॥
आठ नमीश्वर आदि जिनवर, गत चोवीसी भजियेरे ।
भव्य अनेक गिरिसेवासे, शिवपुर सजियेरे–सरण० २ ॥
मूर्त्ति रत्नमयी प्रभुनेमि, इंद्र पाससे लइयेरे ।
चैत्य बनावी विधिसे भरते, स्थापन करियेरे–सरण० ३ ॥
वल्लभी भंगे शक्र आदेशे, कांति अंबिका हरियेरे ।
पंचम आरा अंते सुरपति, स्वर्गमें धरियेरे–सरण० ४ ॥

कल्याणक ही अनंता इण गिरि, त्रय त्रय पाठ उचरियेरे ।
आतम लक्ष्मी हर्ष चरण जिन, वल्लभ परियेरे–सरण० ५ ॥

दोहरा।

पाठ कल्प गिरनारका, आगामी बावीस ।
पद्मनाभादि जिनवरा, होंगे सिद्ध जगीस ॥ १ ॥
दीक्षा केवल मोक्ष ए, कल्याणक तिग सार ।
होंगे रैवतकाचले, दो जिनके सुखकार ॥ २ ॥

सोरठ–दादरा

दीनके दयाल नेमिनाथ सरन चाउं–दी० अंचली ॥
एक ही नाम जिनवरका, दूसरा न गाउं ।
नाथके तीरथ पर तो, एक चित्त आउं–दी० १ ॥
पूजिये रंग गरव हरी, भावसे जनाउं ।
संपदा वंदन फल हो, आत्मरूप पाउं । दी० २ ॥
ध्यान है सार अरहनका, चित्तमें समाउं ।
आत्मलक्ष्मी वल्लभ सीस, हर्षसे नमाउं–दी० ३ ॥

काव्य ।

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ।
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय–
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

मंत्र ।

ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते श्रीउज्जयंततीर्थमंडनाय श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ४ ॥

गीत ।

(बरवा—कहेरवा धन धन वो जगमें नरनार—)

धन धन नेमिनाथ भगवान
भवोदधिपार लगानेवाले—धन० अंचली ॥
रैवतकाचल सिरदार, तुमे त्यागी राजुल नार ।
झट त्याग दियो संसार, पशुगण जान बचानेवाले—ध० १ ॥
प्रभु नेमि बालकुमार, लियो बचपनसे ब्रह्म धार ।
दियो आवागमन निवार, तरण तारण पद पाने वाले—ध० २ ॥
दीक्षा अरु केवल ज्ञान, हुओ सहसावन मैदान ।
उज्जिंतशिखर निर्वान, तीर्थ गिरनार वसानेवाले—ध० ३ ॥
तीरथयात्रा गुणखान, आतमलक्ष्मीको निदान ।
पूजो हर्षे भगवान, प्रभु वल्लभ गुण गानेवाले—ध० ४ ॥

(५) श्रीसम्मेतशिखरतीर्थपूजा ।

दोहरा ।

पार्श्वनाथके नामसे, ए गिरि जग परसिद्ध ।
तीर्थंकर अनशन करी, वीस हुए हैं सिद्ध ॥ १ ॥

(माढ—ऋपभजी थाने मनरी बातां—)

चेतनजी प्यारा पूजनहारा समेतशिखर गिरिराज—अं० ॥
वीसे टूंके वीस जिनेश्वर सोहेजी म्हाराराज रे
कांइ चरण सुहंकर भविजनके मन मोहेजी म्हारा० १ ॥
तीनसो आठके संगजी म्हाराराज रे कांइ
पद्मप्रभुजी शिववधु वरिया रंगजी म्हारा० २ ॥

पांचसो मुनि परिवरियाजी म्हाराराज रे कांइ
मल्लि सुपारस शिवसुख इणगिरि वरियाजी म्हारा० ३ ॥
एकसो आठसु धर्मजी म्हाराराज रे कांइ
नवसो साथे शांतिनाथ शिव शर्मजी म्हारा० ४ ॥
पारस तेत्तीस साथजी म्हाराराज रे कांइ
आतम लक्ष्मी हर्ष वल्लभ जगनाथजी म्हारा० ५ ॥

दोहरा ।

तीर्थंकर मोक्षे गए, मोक्ष गिरि तिणे नाम ।
कारण कारज नीपजे, आलंबन विसराम ॥ १ ॥

(सोहनी–सिद्धगिरि तीरथपर जानाजी)

सम्मेद शिखर गुण गानाजी । गानाजी सुख
पानाजी सम्मेद शिखर गुण गानाजी । अंचली ॥
चालु चोवीसी वीस सुहंकर ।
तीर्थंकर निर्वानाजी–सम्मेद० १ ॥
अजित संभव अभिनंदन सुमति ।
चंद्र सुविधि नमि मानाजी–सम्मेद० २ ॥
कुंथु अर शीतल श्रेयांसा ।
सुव्रत सहस प्रमानाजी–सम्मेद० ३ ॥
र्सँ मुँनि सहसके साथे मुक्ति ।
विमल अनंत जिन रानाजी–सम्मेद० ४ ॥
आतमलक्ष्मी हर्ष धरीने ।
वल्लभ शिवपुर जानाजी–सम्मेद० ५ ॥

काव्य ।

ख्यातोऽष्टापदपर्वतो गजपदः सम्मेतशैलाभिधः,
श्रीमान् रैवतकः प्रसिद्धमहिमा शत्रुञ्जयो मण्डपः ।
वैभारः कनकाचलोऽर्बुदगिरिः श्रीचित्रकूटादय-
स्तत्र श्रीऋषभादयो जिनवराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम् ॥ १ ॥

मंत्र ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरामृत्यु-निवारणाय श्रीमते श्रीसम्मेतशिखरतीर्थमंडनाय विंशति-जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा ॥ ५ ॥

गीत ।

(कल्याण—चिदानंद विडारोने कुमति जो मेरी)

प्रभुपद पूजो भविजन हितकारी—अंचली ॥
वामा नंदन वंदन पूजन, भवोदधि पार उतारी । प्र० १ ॥
सामलापारस तीरथस्वामी, समेत शिखर बलिहारी—प्र० २॥
वदन कमल पर वीरता सोहे, शशिसम कांति निहारी—प्र० ३॥
निर्मल हंस समा प्रभु राजे, सेवक निजसम कारी—प्र० ४॥
आतमलक्ष्मी प्रभुता प्रगटे, वल्लभ हर्ष अपारी—प्र० ५ ॥

कलश ॥

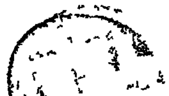
(रेखता)

तीर्थ गुण गाओ आनंदे, तीर्थ भविजीव नित्य वंदे । अं०
तीर्थ दोय भेदसे जानो, शाश्वता अशाश्वता मानो ।
कहे नहीं पार जस आवे, नमो भविजीव शुद्ध भावे ॥ १ ॥

केसरीया भोयणी चंगा, शंखेश्वरापास तारंगा ।
पंचासरा पार्श्व गंधारा, कावी अंतरिक्ष अंजारा ॥ २ ॥
झगडिया पानसर ऊना, राणकपुर मक्षीजी जूना ।
नाडोल नाडलाई वरकाणा, मूछाला वीरजी नाणा ॥ ३ ॥
राजग्रही काशी श्री चंपा, पावापुरी वीर दुःख कंपा ।
मांडव गजपुर माणकस्वामी, चारुप वैभारगिरि नामी ॥ ४ ॥
स्तंभन नवखंडा पल्लविया, नवलक्खा पास सामलिया ।
इत्यादि तीर्थ नहीं पारा, गावो गुण शक्ति अनुसारा ॥ ५ ॥
तपागच्छ नाम दीपाया, श्रीविजयानंद सूरिराया ।
न्यायांभोनिधि विरुद पाया, श्रीआत्माराम जग गाया ॥६॥
विजयलक्ष्मी गुरुदादा, विजय श्री हर्ष गुरुपादा ।
लघु तस शिष्य सुखदाया, वल्लभ पंचतीर्थ गुण गाया ॥ ७ ॥
युग[४] युग[४] वेद[४] कर[२] थाया, संवत महावीर जिनराया ।
आतम वीवीस[२२] छवीसों[२६], कमी विक्रम सय [२०००] वीसा ॥ ८ ॥
एकादशी दिन गुरुवारे, मास माघ पक्ष उजियारे ।
मुंबई श्रीसंघ जयकारी, हुई प्रेरणा मंगलकारी ॥ ९ ॥
मुनि कांति विजय राया, प्रवर्त्तक पदको दीपाया ।
रही इनके चरण छाया, तीर्थगुण लेश दरसाया ॥ १० ॥
सुधारी भूलचुक लेना, सज्जन मोहे जान करदेना ।
मिच्छामिदुक्कडं भाखे, वल्लभ गोडी पार्श्वकी साखे ॥ ११ ॥

॥ इति ॥





उपाध्याय श्रीयशोविजयजी महाराज विरचित
पार्श्वजिन स्तवन

पूजा विधि मांहे भावियेजी, अंतरंग जे भाव ।
ते सवि तुज आगल कहुंजी, साहेब सरल स्वभाव ।
सुहंकर अवधारो प्रभु पास सु० १ ॥
दातण करतां भाविएजी, प्रभु गुण जल मुख सुद्ध ।
उल उतारी प्रमत्तताजी, हो मुज निर्मल बुद्ध । सु० २ ॥
जतना स्नान करीजीएजी, काढो मेल मिथ्यात्व ।
अंगुछो अंग शोषवीजी, जाणुं हुं अवदात । सु० ३ ॥
क्षीरोदकनां धोतियांजी, चिंतवो चित्त संतोष ।
अष्टकर्म संवर भणेजी, आठ पडो मुख कोष । सु० ४ ॥
ओरसीओ एकाग्रताजी, केसर भक्ति कल्लोल ।
श्रद्धा चंदन चिंतवोजी, ध्यान घोल रंगरोल । सु० ५ ॥
भाल वहुं आणा भलीजी, तिलक तणो तेह भाव ।
जे आभरण उतारिएजी, ते उतारो परभाव । सु० ६ ॥
जे निर्माल्य उतारीए जी, ते तो चित्त उपाधि ।
पखाल करतां चिंतवोजी, निर्मल चित्त समाधि । सु० ७॥
अंगलूहणां बे धर्मनाजी, आतम स्वभाव जे अंग ।
जे आभरण पहेराविएजी, ते स्वभाव निज अंग । ८ ॥
जे नव वाड विशुद्धता जी, ते पूजा नव अंग ।
पंचाचार विशुद्धताजी, तेह फूल पंचरंग । सु० ९ ।
दीवो करतां चिंतवोजी, ज्ञान दीपक सुप्रकाश ।

नय चिंता घृत पूरियुंजी, तत्व पात्र सुविशाल । सु० १० ॥
धूप रूप अति कार्यताजी, कृष्णागरुनो जोग ।
शुद्धवासना महमहेजी, ते तो अनुभव योग । सु० ११ ॥
मद स्थानक अड छांडवाजी, तेह अष्ट मंगलीक ।
जे नैवेद्य निवेदीएजी, ते मन निश्चय ठीक । सु० १२ ॥
लवण उतारी भाविएजी, कृत्रिम धर्मनो त्याग ।
मंगल दीवो अति भलोजी, शुद्ध धर्म पर भाग । सु० १३ ॥
गीत नृत्य वाजिंत्रनोजी, नाद अनाहद सार ।
शम रति रमणी जे करीजी, ते साचो थेइकार । सु० १४ ॥
भाव पूजा एम साचवीजी, सत्य वजावो रे घंट ।
त्रिभुवन माहे विस्तरेजी, टाले कर्मनो कंट । सु० १५ ॥
एणीपरे भावना भावतांजी, साहेब जस सुप्रसन्न ।
जन्म सफल जग तेहनो जी, तेह पुरुष धन धन्य । सु० १६
परम पुरुष प्रभु शामलाजी, मानो ए मुज सेव ।
दूर करो भव आमलाजी, वाचक जस कहे देव । सु० १७ ॥



॥ अर्हम् ॥

न्यायांभोनिधि जैनाचार्य श्री १०८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि (आत्मारामजी) महाराज शिष्य प्रवर्त्तकश्री १०८ श्रीकांतिविजयजी महाराज विरचित

स्तवन तथा सज्झाय संग्रह ।



॥ श्रीमहावीरस्वामीनुं स्तवन ॥

॥ ठुमरी ॥

महावीर तेरे पदपंकजमें, मनमधुकर मेरो अटक रह्योरी १
काल अनंत जग झुरत झुरत, ए रस पानसें रोग गयोरी २
दशदिशि भावतिमिर दुख दायक,
दस नख रवि उदयसें दूर गयोरी ॥ ३ ॥
भवि जन मागण मनोवांछित पूरक,
सुरद्रुम समझके स्वरगी थयोरी ॥ ४ ॥
चौसठसुरपति नमनके मिससें, भालकलंकको भूस गयोरी५
समवसरण शोभा पूरणको, चिंतामणि ज्युं चमक रह्योरी६
मुक्तिरमणी मुख इनमे देख्या, हाससें हीरोने सान गह्योरी७
जनम जरामरण मरुतपमें, कांतिसुधारस कुंड भर्योरी ॥८॥

॥ इति ॥

॥ चोवीस जिनस्तवन ॥

(आदित्ये अरिहंत—सातवारनी देशी)

पडवे प्रथम जिनेश्वरो भवि भावोरे,
आ नाभि मरुदेवीनो नंद प्रभु चित्त लावोरे ॥ १ ॥
बीजे ते बहु बलवान अजित जिन रायारे,
जेना काम क्रोध कलि कूड कपट ते पलायारे ॥ २ ॥
त्रीजे त्रिभुवन नाथता प्रभु पामीरे,
संभव सुखकारी आज कहुं शिर नामीरे ॥ ३ ॥
चोथे चित्र चरित्र स्वमुखथी सुनावोरे,
जेथी अभिनंदन पद आश मनने मनावोरे ॥ ४ ॥
पंचमीए प्रेमे करी प्रभु सेवो रे,
आ सुमतिनाथ शिवसाथ जनमनो मेवोरे ॥ ५ ॥
छठ्ठे-छजीवनी कायनी करे जतनारे,
आ पद्मप्रभु जिनराज नमे बहु मतनारे ॥ ६ ॥
सातमे भयनां स्थान सात निवारोरे,
नमे भक्तिभावे भविलोक तेहने तारोरे ॥ ७ ॥
आठम आठ जे कर्म दुःख देनारांरे
आ चंद्रप्रभु मुखचंद्र दिठे न रहेनारांरे ॥ ८ ॥
नवमे नवमंगल मुनिमंडल शिर सोहेरे,
आ सुविधि सुविधि भगवान जगत मन मोहेरे ॥ ९ ॥
दसमे दसदस स्थान समाधि आपोरे,
आ शीतल करो भवि लोक शीतल उल्लापोरे ॥ १० ॥
अगीआरसे अंग अगीआरनी प्रभुवाणीरे,
श्रेयांसे [illegible] सभामां [illegible]रे ॥ ११ ॥

वारसे बार उपांग प्रभुजी भणावोरे,
आ वासुपूज्य भगवान आगम ते गणावोरे ॥ १२ ॥
तेरसे त्रिभुवन नाथ विमल मति दातारे,
आ अनंत धर्म ने शांति कुंथु विख्यातारे ॥ १३ ॥
चउदसे चउदस पूर्वधरोना स्वामीरे,
अर मल्लि सुव्रत नमिनाथ अंतरजामीरे ॥ १४ ॥
पूनमे पूरणानंद नेमी अविकारीरे,
परमेसर पारसनाथ जगत हितकारीरे ॥ १५ ॥
अमासे अंतिम वीर वचन सतकारीरे,
गुरु गौतम ज्ञान भंडार कांति सारीरे ॥ १६ ॥

॥ इति ॥

॥ मुंबई चैत्यपरिपाटी स्तवन ॥

(वढंस—हम क्यों छोड़ चले वन माधो—चाल)

जनमसफलअवहमरोमानुं, मुंबापुरीतीरथमनआनुं-अंचली ।
गोडीपास निरास न कीजे, आश धरि तोरे पास पर्यो रे ।
शरणागत शरणो तोहे दीनो, इतनो कहो मन ठाण ठर्योरे १
वीरे धीर मोहे धीरज दीजो, कर पकडो शिर हाथ धरोरे ।
नयन निहारो नाभिके नंदन, शांतिजिनंद मोहे शांत करोरे२
नेमि निरंजन जनमन रंजन, भवभंजन प्रभु पंच खरोरे ।
पंच जिनालय पायधोनी पर, पाप हरे जिन पाय परो रे ॥ ३ ॥
गुलालवाडी चिंतामणि मलियो, धर्म चिंतामणि सहज थयोरे
लालबाग चिंतामणि पामी, दुरगति दिनडो दूर गयो रे ॥ ४ ॥
गोडीपास सुपास ऋषभप्रभु, दर्श करी मन हर्ष भयो रे ।
वालकेश्वर जिन चैत्य जुहारी, जनम मरण जंजाल गयो रे ॥५

॥ चोवीस जिनस्तवन ॥

(आदित्ये अरिहंत—सातवारनी देशी)

पडवे प्रथम जिनेश्वरो भवि भावोरे,
आ नाभि मरुदेवीनो नंद प्रभु चित्त लावोरे ॥ १ ॥
बीजे ते बहु बलवान अजित जिन रायारे,
जेना काम क्रोध कलि कूड कपट ते पलायारे ॥ २ ॥
त्रीजे त्रिभुवन नाथता प्रभु पामीरे,
संभव सुखकारी आज कहुं शिर नामीरे ॥ ३ ॥
चोथे चित्र चरित्र स्वमुखथी सुनावोरे,
जेथी अभिनंदन पद आश मनने मनावोरे ॥ ४ ॥
पंचमीए प्रेमे करी प्रभु सेवो रे,
आ सुमतिनाथ शिवसाथ जनमनो मेवोरे ॥ ५ ॥
छठ्ठे छजीवनी कायनी करे जतनारे,
आ पद्मप्रभु जिनराज नमे बहु मतनारे ॥ ६ ॥
सातमे भयनां स्थान सात निवारोरे,
नमे भक्तिभावे भविलोक तेहने तारोरे ॥ ७ ॥
आठम आठ जे कर्म दुःख देनारांरे
आ चंद्रप्रभु मुखचंद्र दिठे न रहेनारांरे ॥ ८ ॥
नवमे नवमंगल मुनिमंडल शिर सोहेरे,
आ सुविधि सुविधि भगवान जगत मन मोहेरे ॥ ९ ॥
दसमे दसदस स्थान समाधि आपोरे,
आ शीतल करो भवि लोक शीतल उछापोरे ॥ १० ॥
अगीआरसे अंग अगीआरनी प्रभुवाणीरे,
श्रेयांसे श्रेयसकामी सभामां वखाणीरे ॥ ११ ॥

बारसे बार उपांग प्रभुजी भणावोरे,
आ वासुपूज्य भगवान आगम ते गणावोरे ॥ १२ ॥
तेरसे त्रिभुवन नाथ विमल मति दातारे,
आ अनंत धर्म ने शांति कुंथु विख्यातारे ॥ १३ ॥
चउदसे चउदस पूर्वधरोना स्वामीरे,
अर मल्लि सुव्रत नमिनाथ अंतरजामीरे ॥ १४ ॥
पूनमे पूरणानंद नेमी अविकारीरे,
परमेसर पारसनाथ जगत हितकारीरे ॥ १५ ॥
अमासे अंतिम वीर वचन सतकारीरे,
गुरु गौतम ज्ञान भंडार कांति सारीरे ॥ १६ ॥

॥ इति ॥

॥ मुंबई चैत्यपरिपाटी स्तवन ॥

(वढंस—हम क्यों छोड चले वन माधो—चाल)

जनमसफलअबहमरोमानुं, मुंबापुरीतीरथमनआनुं-अंचली ।
गोडीपास निरास न कीजे, आश धरि तोरे पास पर्यो रे ।
शरणागत शरणो तोहे दीनो, इतनो कहो मन ठाण ठर्योरे १
वीरे धीर मोहे धीरज दीजो, कर पकडो शिर हाथ धरोरे ।
नयन निहारो नाभिके नंदन, शांतिजिनंदे मोहे शांत करोरे २
नेमि निरंजन जनमन रंजन, भवभंजन प्रभु पंच खरोरे ।
पंच जिनालय पायधोनी पर, पाप हरे जिन पाय परो रे ॥ ३ ॥
गुलालवाडी चिंतामणि मलियो, धर्म चिंतामणि सहज थयोरे
लालबाग चिंतामणि पामी, दुरगति दिनडो दूर गयो रे ॥ ४ ॥
गोडीपास सुपास ऋषभप्रभु, दर्श करी मन हर्ष भयो रे ।
वालकेश्वर जिन चैत्य जुहारी, जनम मरण जंजाल गयो रे ॥५

॥ चोवीस जिनस्तवन ॥

(आदित्ये अरिहंत—सातवारनी देशी)

पडवे प्रथम जिनेश्वरो भवि भावोरे,
आ नाभि मरुदेवीनो नंद प्रभु चित्त लावोरे ॥ १ ॥
बीजे ते बहु बलवान अजित जिन रायारे,
जेना काम क्रोध कलि कूड कपट ते पलायारे ॥ २ ॥
त्रीजे त्रिभुवन नाथता प्रभु पामीरे,
संभव सुखकारी आज कहुं शिर नामीरे ॥ ३ ॥
चोथे चित्र चरित्र स्वमुखथी सुनावोरे,
जेथी अभिनंदन पद आश मनने मनावोरे ॥ ४ ॥
पंचमीए प्रेमे करी प्रभु सेवो रे,
आ सुमतिनाथ शिवसाथ जनमनो मेवोरे ॥ ५ ॥
छठ्ठे-छजीवनी कायनी करे जतनारे,
आ पद्मप्रभु जिनराज नमे बहु मतनारे ॥ ६ ॥
सातमे भयनां स्थान सात निवारोरे,
नमे भक्तिभावे भविलोक तेहने तारोरे ॥ ७ ॥
आठम आठ जे कर्म दुःख देनारांरे
आ चंद्रप्रभु मुखचंद्र दिठे न रहेनारांरे ॥ ८ ॥
नवमे नवमंगल मुनिमंडल शिर सोहेरे,
आ सुविधि सुविधि भगवान जगत मन मोहेरे ॥ ९ ॥
दसमे दसदस स्थान समाधि आपोरे,
आ शीतल करो भवि लोक शीतल उल्लापोरे ॥ १० ॥
अगीआरसे अंग अगीआरनी प्रभुवाणीरे,
श्रेयांसे श्रेयसकामी सभामां वखाणीरे ॥ ११ ॥

चाहत चित्त न औरकछु हमरो, छोर तीरथ अरचनको ।
कुमति कुटिल वस हो रह्यो आतम, सुमति पुकारे नाथनको १
द्राविड वारिखिल्ल दश कोटि, मुगति कातिक पूनमको ।
नमि विनमि कोटि दो गये मुगति, दशमी श्वेत फागुणको २
अजित शांती जिन कियोरी चउमासो, तपसि अनेक श्रमणको
मुनिगण शिव सुख रसभर भरियो, आतमराम मगनको ३
पूर्वनवाणु सित अष्टमी फागुण, विचरणो आदि जिनंदको ।
पुंडरिक गणकोटि पंचको लेकर, छडदियो अरिके वतनको ४
पारंगत पद आसो पूनमको, पांडव आदि कोटि विशनको ।
शांब प्रद्युम्न शुक शैलक नारद, गये मुगति राज्य लेननको ५
राम भरत सुभद्र शमीश्वर, नरपति ऋषभ कुलनको ।
केवल रत्न यत्न कर लीनो, तप करी त्यज दियो तनको ६
पांति सहस वसुदेवकी नारी, शिव वधु साथ खेलनको ।
गिरिवर गुणको पार न पावे, केवली करेजो कथनको ॥ ७
उभयलोक आराधक साधक, सुख संपत त्रिभुवनको ।
इहलोके लोकेश धनेश्वर, परमेश्वर तपोधनको लें० ॥८॥
गोपुर नगर कियो है चउमासो, चिंतामणि पास चरणको ।
आतमराम रमण फल दीजो, कांति विजयके भजनको ॥ ९

॥ इति ॥

---

१ संवत् १९४९-नुं चोमासुं गुजरांवाला (पंजाब) मां कर्युं हतुं त्यारे आ स्तवन बनाव्युं हतुं ॥

कोट कोलावे अचिरानंदन, अचिरानंदन नंद वस्योरे ।
वर्धमान वली वामानंदन, झौहरी वजारे समाधि भस्योरे ॥ ६
मांडवी बंदर शोभे सुंदर, अनंत जिनंद अरि अंत करोरे ।
वृषलांछन लांछन नहि तुमरे, लांछन विनु मोहे दान वरोरे ७
भांयखले निर्मले अति सुंदर, आदिजिनंदजीको दरश लियोरे ।
युग-ऋषि-निधि-शशी-वर्ष हर्षे, कार्तिक पूनम स्तवन कियोरे ८
विजयानन्द सूरि महाराजा, सेवक षट् दश अरज करेरे ।
कांतिविजय वल्लभपरिवारा, मास चतुर हृदि ध्यान धरेरे ॥९

॥ इति ॥

॥ मुंबई पायधोनी मंडन श्रीगोडीपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(रामकली—आंगणे कल्प फल्योरे—देशी)

पास गोडीजी मल्योरे मारे तो प्रभु पास गोडीजी मल्यो रे
कांति मनोहर वल्लभ जगने, चतुर ने लाभ फल्योरे—मारे१
सोहन विमल कस्तूर सुगंधी, उमंग कुरंग गल्यो रे-मारे २
मेघ विज्ञान जिन विद्या विचारो, पुण्य समुद्र छल्योरे मा३
गुण सागर भवसागर तारक, आतम कांति कल्यो रे—मारे ४
वेद मुनि निधिशशी दर्शन पामी, मोहको जोर टल्यो रे—मा ५

॥ इति ॥

॥ श्रीसिद्धाचल तीर्थ स्तवन ॥

(वढंस—नाथ कैसे गजको फंद छुडायो)

लेचल मोहे सिद्धगिरिराज मिलनको,
सुख होवत तन अरु मनको ॥ लेचल० अंचली ॥

चाहंत चित्त न औरकछु हमरो, छोर तीरथ अरचनको ।
कुमति कुटिल वस हो रह्यो आतम, सुमति पुकारे नाथनको १
द्राविड वारिखिल्ल दश कोटि, मुगति कातिक पूनमको ।
नमि विनमि कोटि दो गये मुगति, दशमी श्वेत फागुणको २
अजित शांती जिन कियोरी चउमासो, तपसि अनेक श्रमणको
मुनिगण शिव सुख रसभर भरियो, आतमराम मगनको ३
पूर्वनवाणु सित अष्टमी फागुण, विचरणो आदि जिनंदको ।
पुंडरिक गणकोटि पंचको लेकर, छडदियो अरिके वतनको ४
पारंगत पद आसो पूनमको, पांडव आदि कोटि विशनको ।
शांब प्रद्युम्न शुक शैलक नारद, गये मुगति राज्य लेननको ५
राम भरत सुभद्र शमीश्वर, नरपति ऋषभ कुलनको ।
केवल रत्न यत्न कर लीनो, तप करी त्यज दियो तनको ६
पांति सहस वसुदेवकी नारी, शिव वधु साथ खेलनको ।
गिरिवर गुणको पार न पावे, केवली करेजो कथनको ॥ ७
उभयलोक आराधक साधक, सुख संपत त्रिभुवनको ।
इहलोके लोकेश धनेश्वर, परमेश्वर तपोधनको लें० ॥८॥
गोपुर नगर कियो है चउमासो, चिंतामणि पास चरणको ।
आतमराम रमण फल दीजो, कांति विजयके भजनको ॥ ९

॥ इति ॥

---

१ संवत् १९४९–नुं चोमासुं गुजरांवाला (पंजाब) मां कर्युं हतुं त्यारे आ स्तवन बनाव्युं हतुं ॥

॥ गुजरांवालामंडन श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

(वरवा-अथवा पीलू)

आयिकुन नांव तुमची कडे आला,
घेउन दर्श पसंद मन झाला ।
मुलगा जानुन वोलव प्रभु माला,
चिंतामणि सोडुन मि सांगु कोनाला ॥ आ० १ ॥
पाहयला सर्प वीस्तुमदि नाहि मेला,
मंत्र दिला चांगली गति गेला ।
वोधि देउन तुमि कमठ पाठिवला,
फार अपराध मूरख यानी केला ॥ आ० २ ॥
पूरण त्याचे मनोरथ झाले,
वार्षिकदान यानी मांगितले ।
दयानिधि दान देउन दाखिवला,
चिंतामणि चिंतामणि लाजिवला ॥ आ० ३ ॥
कर वर कल्प तरुवर तुमचा,
सेवा केली त्याच्या फल दे सेवकला ।
माजेवेलि मौन करुन का तु वसला,
गुणलेस आस माला नका देउ सगला ॥ आ० ४ ॥
फार फिरुन मि इकडे आला,
नांव नंगर आहे गुंजरांवाला ।
राहिलो सेजारी निजगुण देउ माला,
आतम कांति अमंद रसाला ॥ आ० ५ ॥

॥ इति ॥

॥ अमृतसर मंडन श्रीअरनाथ जिन स्तवन ॥

(अरणिक मुनिवर चाल्या गोचरी–देशी)

अर जिनवरजीरे अरजी उर धरो, सेवक कहे शिर नामीं रे।
तुज विना मुजनेरे अवर न आसरो, शिवदो भव शिवस्वामीरे
तुज मुज मननी रे थइगइ एकता, वचने अति स्वीकार रे।
जाति एकेरे व्यक्ति विभिन्नता, भेदान्वय द्यो प्रहार रे ॥ २
पुद्‌गलरसियोरे वसियो वेगलो, गतिगति गरता कूप रे।
तुज करुणा गुण ग्रही इहां आवियो, द्यो दर्शन निजरूप रे ३
अंतरजामिरे अंतर किम करो, अंतर कारक वारो रे।
निरंतरतारे शुद्ध विरागता, तारक आपी तारो रे। अ० ४
अमृतसर मंडन तुज अंगणे, हठ करी बेठो आज रे।
अमृतवाक्येरे रंजो आतमा, कांतिविजय जयराज रे ॥५॥

॥ इति ॥

॥ अमृतसर मंडन श्रीअरनाथ जिन स्तवन ॥

(अजित जिनंदसुं प्रीतडी–देशी)

अरजिनवर मुज मन वसो, नवि जाजो हो पलभर परधामके।
अंतरअरि तुम वारजो, ज्युं प्रगटे हो निज आतम रामके। १
भावतीर्थपति तीर्थमें, तीर्थोदक हो किधां जे स्नानके।
ते पण तुम सरिखा थया, मुजने पण होजो नाथ निदानके २
हरि हर ब्रह्म पुरंदरा, वळी रवि शशी हो पडिया जस पायके।
ते रतिपति तुम मारियो, तुम वसतां हो मनमथ मम जायके ३
तुममुख देखी भीतिभरे, ते अरिगण हो अंतर समुदायके।
काल अनादि केडे पड्यो, द्दग देज्यो हो जेहथी ते पलायके ४

आ कारण प्रभु आवियो, मत करजो हो ज्युं लागें वारके ।
अमृतसरपति दीजियो, कांतिने हो विजयानंद सारके ।५।

॥ इति ॥

॥ अमृतसर मंडन श्रीशीतलनाथ जिन स्तवन ॥

(माढ)

जीयारे शीतल जिनपति मूर्ति मनहर लागीरे,
सुखकारी महाराज शीतल ।
जिनपति मूर्ति मनहर लागीरे मना—अंचली—
जीयारे मानुं हूं चंदन नंदनवन वैरागी रे सुख० ॥ १ ॥
जीयारे मानुं कपूरे स्थिरपनो दियो त्यागी रे सुख० ॥ २ ॥
जीयारे मानुं कमलदल शीतलजल वडभागी रे सुख० ॥३॥
जीयारे मानुं मुर्छित हिमगिरि गंगा लागी रे सुख० ॥४॥
जीयारे मानुं स्नानोदक स्पर्शी शशी भागी रे सुख० ॥५॥
जीयारे मानुं ऋतु ग्रीष्मादिक एकता जागी रे सुख० ॥६॥
जीयारे मानुं अमृतसर पदपंकज रागी रे सुख० ॥ ७ ॥
जीयारे मानुं कांति आतम पद अनुरागी रे सुख० ॥ ८ ॥

॥ इति ॥

॥ पट्टीनगरमंडन श्रीमनमोहन पार्श्वजिन स्तवन ॥

(लावणी—अपने पदको तजकर—देशी)

पासप्रभु तेरे चरण कमलमें, मन भमरो मेरो लिपटगयो ।
उडता नहीं छडके करें क्या, और कमलरस निकलगयो १
तुमगुण मकराकर मनमेरो, मछलीरूप हो गमन करे ।
कछु पार न पावे, करो कुछ करुणा तो नेडे आवे पा० ॥२
वामानंदन नामहै चंदन, वंदकजन मन ताप हरो ।

अजरामरदाता, करो क्युं देर कर्मको दूर करो पा० ॥ ३ ॥
सेवकको अपनो पद दाता, तूं माता भ्राता ताता ।
सबजीवनके हो, मुझेभी जगगुरुका तुमसे नाता पा० ॥४॥
पट्टी नगर महराज बिराजे, बाजतहै गाजेबाजे ।
उडरहे निसानो, छनाछन छेने बजे दुर्मति लाजे पा० ॥५॥
मनमोहन कामन तुम कीनो, औरनसे मन हरलीनो ।
आगमरस पाई, करो ज्युं आनंदघन होवे पीनो पा० ॥६॥
तपगच्छमंडन दुर्मतिखंडन, मुनि मंडल युत नमन करे ।
आतम गुरुराया, दियो गुण कांतिविजय भंडार भरे ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ पट्टी नगरमंडन श्रीविमलनाथजिनस्तवन ॥

(लावणी–अपने पदको तजकर चेतन–देशी)

जिनपति विमल विमल पद भागी, विमल नामपर है रागी ।
जस सुमति जागी, करे सो पूजन जो है वडभागी ॥ १ ॥
गंगाजल निर्मल तुम वाणी, स्नान करत ज्ञानी प्राणी ।
अंतरगुणखानी, सुने नहीं जो झूठे हें अभिमानी ॥ २ ॥
शांत सूरत मूरत अति नीकी, चंदकी ज्योत पडी फिकी ।
विच काली लिकी, आप हो मुगतिराणी शिर टिकी ॥ ३ ॥
तुंही हमारो अंतरजामी, जगविसरामी गुणधामी ।
निर्नामी स्वामी, पूजें जो होवतहै मुगतिगामी ॥ ४ ॥
करूं ध्यान दिनरात तुमारो, पकड हाथ मुझको तारो ।
आतमपदधारो, कांतिको करदीजो अपनो प्यारो ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

॥ जीरामंडन श्रीचिंतामणिपार्श्वजिन स्तवन ॥

(लावणी–अपने पदको तजकर चेतन–देशी)

चिंतामणि चित चिंता चूरो, मनवंछित हमरो पूरो ।
तूं दानी शूरो, कल्पतरु दूरगयो जानी बूरो ॥ १ ॥
हग दीजे करुणा कुछ कीजे, ज्यूं कारज हमरो सीजे ।
खुशमुख बोलीजे, और कछु दाम धाम नहीं मंगीजे ॥ २ ॥
तूं दिनकर तमहर भविजनको, नंदनवन चंदन घनको ।
रसकस है तनको, इनीसे शीतलता सज्जनमनको ॥ ३ ॥
शीलसुभट खटपटियो जानी, पंचवाण आयो तानी ।
मदनो मदमानी, काटदियो अंग अनंगपद्वी मानी ॥ ४ ॥
ढुंढत ढुंढफिरत अव पायो, जीरा नगरमें जव आयो ।
तनमन वच गायो, वने ज्यूं करलीजो अव गत कायो ॥५॥
घूमें चंद्र वदनपर तोरे, गगन गयो अमृत चोरे ।
किरणोंसे कोरे, लोककी अखियोंको अंजन जोरे ॥ ६ ॥
विजयानंद विजयपदआसा, चरननमें है चौमासा ।
मुनिमंडलपासा, दीजिए कांतिविजयको निज वासा ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीसिद्धाचलजी तीर्थ रायण वृक्ष ऋषभचरण स्तवन ॥

(आसाउरी–कहेरवा–देशी–मधुर स्वर क्यांथी आ संभलाय)

मेरेतो जाना शीतल रायणछाय ॥ अंचली ॥
मरुदेवीनंदन शीतलचंदन, रंजीत ऋषभना पाय मे० ॥१॥
नीलवरण दल निर्मल माला, शिववधु खडीरही आय मे०२
क्यारी कपूर सुधारस सींची, मानुं हिमगिरिराय मे० ॥३॥

सुरतरु सुरसम भोगको दाता, यह निजगुण समुदाय मे०॥
आतम अनुभव रस इहां प्रगटी, कांति सुरनदी काय मे०॥

॥ इति ॥

॥ श्रीपुंडरिक गणधर स्तवन ॥

(असाउरी–कहेरवा–देशी–मधुरस्वर क्यांथी आ संभलाय)

मेरेतो जिना तेरोही चरणं आधार ॥ मे० अंचली ॥
पुंडरिक गणधर पुंडरिकपद धर, पुंडरिकपद करनार ॥१॥
पुंडरिक गिरिपर पुंडरिक पावन, पुंडरिक प्रभुको विहार २
पुंडरिक कमलासन प्रभु राजत, पुंडरिक कमलको हार ॥३
पुंडरिक ध्यावुं पुंडरिक गावुं, पुंडरिक पोवुं हृदि मार ॥४॥
पुंडरिक आतमराम स्वरूपी, पुंडरिक कांति जयकार ॥५॥

॥ इति ॥

॥ वीकानेरमंडन श्रीअजितनाथजिनस्तवन ॥

(प्रभाति–देशी–विमलाचल नितु वंदिए)

अजित जिनेश्वर चरणको, शरणो है हमारे ।
मंगलमाला मौलिमें, मोरी कौन निवारे ॥ अ० १ ॥
मुगति रमणी रमणता, रसरसियो विराजे ।
नीरागी रागी भयो, ईश नाम न लाजे ॥ अ० २ ॥
करुणाकर करुणा करी, मुज निजगुण दीजो ।
त्रिभुवन तारक तारीने, जरा जग जस लीजो ॥अ०३॥
धर्मी धर्म धुरंधरो, परधर्म निवारो ।
धर्म सुधारस पाइने, भवपार उतारो ॥ अ० ४ ॥

संवत देश नव चोवने, आसो कृष्ण उदारा ।
कांति वीकानेर वंदीयो, तृतीया शनिवारा ॥ अ० ५ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीआदि जिनस्तवनं ॥

(देशी–जीरे मारे)

जीरे मारे दरशन दिनमणि आज,
मरुदेवी नंदन मन रम्यो जीरेजी ।
जीरे मारे अंतर तिमिर निवार,
तिमिरारि तिमिरने ना गम्यो जी० ॥ १ ॥
जीरे मारे तूं गुणमणि भंडार,
सुरमणि मृन्मणि थइ गयो जीरेजी ।
जीरे मारे तूं निजपद दातार,
देखी सुरतरु तरु थयो जीरेजी ॥ २ ॥
जीरे मारे समवसरणनी सीख,
भगवती भगवती दिल धरूं जीरेजी ।
जीरे मारे तार्या प्राणी अनेक,
हुं पण आशा ए करूं जीरेजी ॥ ३ ॥
जीरे मारे भरतादिक संतान,
शिव संपत सरिखा कर्या जीरेजी ।
जीरे मारे तुम आगम परिमाण,
भाव भजन भगति भर्या जीरेजी ॥ ४ ॥
जीरे मारे हुं रे अनाथी जीव,
नाथ निहारो नयणथी जीरेजी ।

जीरे मारे आतमरंग कलोल,
कांति कहो निज वयणथी जीरेजी ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ वीकानेर–भीनासर मंडन श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

(देशी–वणजारानी)

चरणनको सरण हमारे, चिंतामणि चिंता टारे ॥ अंचली ॥
प्रभु पास जिनेश्वर प्यारे, दिलसे होवत नहीं न्यारे,
कछु कामन कीनो क्या रे, मतियां वरलीनी वा रे,
औरनको दिल नहीं धारे ॥ चिं० ॥ १ ॥
फणिफण तनपर है सारे, मणिमय तनुतेज उजारे,
मोतनकी माला भारे, चमच्चमक करत चमकारे,
तारापति तरणि हारे ॥ चिं० ॥ २ ॥
शिर मुकुट करत झलकारे, कुंडल दल दिनकर फारे,
त्रिक छत्र बिराजे तारे, भामंडल किरणाकारे,
भविजन मन तिमिर विडारे ॥ चिं० ॥ ३ ॥
तव नाम रटन रटनारे, सुत वामाके मतवारे,
अब कौन हटावन हारे, तारे नरनारी हजारे,
अब हमको क्यों न संभारे ॥ चिं० ॥ ४ ॥
दिये दर्शन रूप दिदारे, नव दश शंत चौलीस वारे,
दिन रहे दिवाली चारे, भीनासर नाथ जुहारे,
कहे कांतिविजय जयकारे ॥ चिं० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीआबूजी तीर्थस्तवन ॥

(देशी–जिनवर पास पियारो फलोधी वालोरे)

जिनवर ऋषभ पियारो, ऋषभ पियारो मोहनगारो
आबू वारोरे के जिनवर० ॥ अंचली ॥
चमत्कार चंद्रोदयेरे, वारी पडियो गगन सतारोरेके ॥ १ ॥
हीरा लाल मोतीलड़ीरे, वारी छत्र करत छनकारोरेके ॥ २ ॥
मणिमंडल मंडित कस्योरे, वारी मुगट करत झलकारोरेके ३
चंद्र सूर कर्पूरकोरे, वारी रसकस मुखपर सारोरेके ॥ ४ ॥
संवत् निधि शशी बावनेरे, कांइ फागण शुक्ल जुहारोरेके ॥ ५
कांतिविजय पद दीजिएरे, कांइ नाथ न होनो न्यारो रेके ६

॥ इति ॥

॥ श्रीबीकानेर चैत्यपरिपाटीस्तवन ॥

(देशी–पनीहारीनी–मारवाड़ी)

तीरथ बीकानेरनी मारा वालाजीरे,
वंदू तीरथमाल हृदयरसाल वालाजी ।
समेतशिखर गोडीश्वरो मारा०,
नाभिनंद दयाल वामालाल वालाजी ॥ १ ॥
भांडासर सुमतीश्वरो मारा०,
चौमुख प्रतिमा चार गोख विहार वालाजी ।
रवि शशी तीहां दर्शन करी मारा०,
भूमंडल करे सार जगत उजार वालाजी ॥ २ ॥
श्रीसिमंधर नेमिनो मारा०,
चैत्य अतिमनोहार त्रिभुवनतार वालाजी ।

वासुपूज्य महावीरजी[९] मारा०,
शांति[१०] चिंतामणि[११] सार जगदाधार वालाजी ॥ ३ ॥
जिनघर पंच पंकज समो मारा०,
बिचमें श्रीमहावीर[१२] मेरूधीर वालाजी ।
पद्मप्रभु[१३] संखेश्वरो[१४] मारा०,
ऋषभजी[१५] शांतिशरीर[१६] मानुं खीर वालाजी ॥ ४ ॥
सप्तम[१७] प्रभुने नित्य नमुं मारा०,
कुंथु[१८] धरम[१९] नो नाथ धरज्यो हाथ वालाजी ।
चंद्रप्रभु[२०] चंदनसमो मारा०,
ऋषभ[२१] अजितनी[२२] गाथ शिवसुखसाथ वालाजी ॥५॥
पासप्रभु[२३] वृषलांछनो[२४] मारा०,
शांति[२५] सुधारस सार दुरगतिवार वालाजी ।
कांतिविजय करजोडीने मारा०,
नवदंश[१९५२] बावन धार नमो निरधार वालाजी ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीआबू तीर्थस्तवन ॥

(देशी पनीहारी–मारवाडी)

आबू अचल निर्मल भलो मारा वालाजीरे,
देलवाडो दिलदार स्वर्ग विसार वालाजी ।
नेमि निरंजन नाथनुं मारा०,
चैत्य अति मनोहार बोधिकार वालाजी ॥ १ ॥
मृगपति आसन शोभतो मारा०,
त्रिभुवन तारणहार गिरिशृंगार वालाजी ।

शांत समाधि रसे भर्यो मारा०,
समरसनो दातार धर्माधार वालाजी ॥ २ ॥
पूरण पुण्ये पामीयो मारा०,
कर करुणा महाराज शिवपुरसाज वालाजी ।
पंचम आरे प्राणीनां मारा०,
क्यूंकर सरसे काज राखो लाज वालाजी ॥ ३ ॥
राजिमती रथनेमिजी मारा०,
ज्युं दीधो आधार त्युं मुझ तार वालाजी ।
पशुपर तुमे करुणा करी मारा०,
मुजपर क्युं न लगार टलवलुं द्वार वालाजी ॥ ४ ॥
यदुपतिनंदन वंदना मारा०,
चंदनशीत शरीर योगी वीर वालाजी ।
कांतिविजय करदीजिए मारा०,
जावे जंगम पीर भांगे भीर वालाजी ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीअचलगढतीर्थ स्तवन ॥

(प्रभाति–देशी–विमलाचल नितु वंदिए)

नयने अचलगिरि निरखियो, मन अति हरखायो ।
मानुं परमाणु पुण्यनो, ए पुंज रचायो न० ॥ १ ॥
मरुदेवीनंदन मंडनो, जस शिरसि सुहायो ।
मेरु चतुर्दश रूपथी, मानुं मिलनको आयो ॥ २ ॥
ऊर्ध्वगति ध्वज दाखवे, जो वंदन आवे ।
मुगतिपुरि आरोहवा, सोपान सोहावे न० ॥ ३ ॥

सिद्धिवधुवरमंडपे, घट कंचनकेरो ।
चउ गतिचूरण चौमुखो, टाले भवफेरो न० ॥ ४ ॥
दुर्गति दुर्मति दुष्कृति, करुणा कर वारो ।
सुरतरु आंगणमें फल्यो, जरा कांति निहारो न० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ सिरोहीचैत्यपरिपाटी स्तवन ॥

(होरी, सामरा सुखदाई—देशी)

प्रभुजीसे प्रीति लगाई, सुमति मोरी अतिहरखाई अंचली॥
पार्स[1] आस पूरे भविजनकी, जीरावलो जग भाई ।
चिंतामणि[2] चित चिंता चूरे, इन बिच क्या है नवाई ॥१॥
शांतिजिनेश्वर[3] मूर्त्ति मनोहर, जगगुरु पदवी पाई ।
नाभिनरेश्वरनंदन[4] निरख्यो, मुगति वधुकी वधाई प्र० ॥२॥
गोडीपास[5] संखेश्वर[6] साहब, कीर्त्ति जगमें गवाई ।
कुंथु[7] कल्पतरु वीर[8] जिनेश्वर, शीतल[9] ऋषभ[10] सवाई ॥ ३ ॥
पद्मप्रभ[11] जिन सुमति[12] सुहंकर, अजित[13] चिंतामणि[14] पाई ।
संभव[15] नेमिजिनंद[16] दयालु, ऋषभ[17] श्रीवीर[18] दुहाई प्र० ॥४॥
नगर सिरोही सुरपुरी मानुं, जिनघर हार हीराई ।
कांतिविजय प्रभुचरणकमलको, दर्शन जगत वडाई ॥५॥

॥ इति ॥

॥ श्रीनवपदजीनुं चैत्यवंदन ॥

महामंत्र अधिराजना, धूरिपदे अरिहंत ।
अतिशय गुणगण गुंफिता, महिमंडल विचरंत ॥१॥

भेद भूभृत भेदीने, सिद्ध थया भगवान ।
लोकालोक प्रकाशवा, लखलोचन अतिभान ॥ २॥
तीरथपति तीरथतणा, तीर्थ चलावन हार ।
गणधर गुरुगम ज्ञानना, सूरीश्वर भंडार ॥ ३ ॥
वाचक वाणी रसभरी, वाचंयम आधार ।
पंचम पदपंकज नमुं, करणत्रिक अणगार ॥ ४ ॥
दर्शन ज्ञान संयम तप, सुरमणि सम दातार ।
निरंतर नवपद नमुं, कांतिविजय श्रृंगार ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीसिद्धचक्र स्तुति ॥

अरिहंत महंता, सिद्ध सिद्ध भगवंत,
सूरीश्वर वाचक, मुनिगुण भर नहीं अंत,
दरसन पद पूजो, ज्ञान भान अति सार,
संयम तप तरणी, अंतरतिमिर निवार ॥ १ ॥
शासनपति सोहे, तीरथना करनार,
वंदन पडिक्कमणुं, कीजे करिय विचार,
पडिलेहण पूजन, जपमालानो जाप,
निधि नवनी संपद, आवे आपोआप ॥ २ ॥
तीर्थंकर गणधर, समवसरण मोजार,
नवपद वर्णननो, कहे न आवे पार,
नवपदरसलीनो, नवपदरूपी थाय,
भव नवमे मुक्ति, मयणानो पति जाय ॥ ३ ॥

गण सुरवर केरो, विघ्न निवारे दूर,
एकाशी आंबिल, जे करसे भरपूर,
तस डाकण साकण, भूत पिशाच निवारे,
आधि ने व्याधि, दुर्जन दूर विदारे ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीनवपदजी स्तवन ॥

(देशी—प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए)

अरिहंतपद मन ध्याइये, ध्याता ध्येयस्वरूप ।
वेधक वेधविशेषथी वरणनी एकता, ध्याता कंचनरूप ॥१॥
पारंगत परमेसरो, परमानंद अमंद ।
तुजगुण एकनी संतति संतति सुखकरे,
जनम मरण नहीं कंद ॥ २ ॥
गुणरत्नाकर गणधरा, दिनमणि सम जस रूप ।
चरणसरोरुहे मनमधुकर मारो लगरह्यो,
दीजो दिल मुनिभूप ॥ ३ ॥
पाठक अंग उपांगना, नानाभंग विचार ।
नय निक्षेप सुधारस सींची शिष्यने,
जड करे जलजाकार ॥ ४ ॥
अरिमल्ल मोहने मारवा, महाव्रत असि अतिधार ।
तेज दिवाकर तमहर निरखीने नाशियो,
मुनि करे उग्र विहार ॥ ५ ॥
दर्शन धर्मनुं मूल छे, दर्शन धर्म आधार ।

श्रद्धादिक सत साठ विभेदे प्रणमिये,
जस विना करणी विकार ॥ ६ ॥
दिनमणि दश शत शतगुणे, जस सम कदीय न थाय।
सो श्रुतज्ञान प्रमाण जगतगुरु मानियो,
प्रणमो भवि दिल लाय ॥ ७ ॥
संयमपद सुरगविसमो, तस रस पीवनहार।
परपुद्गल दल वमन विरेचन विरची,
मुनि कियो सुगति प्रचार ॥ ८ ॥
शिववधुमेलक मेलको, तपपद सेव सुसेव।
धारक धर्मनुं धाम निवारक कर्मनो,
सेवे देव सदेव ॥ ९ ॥
ए नव पद ऋद्धि नव निधि, विधि श्रीपाल नरेश।
आतमराम विराम सुधाम धनीश्वरो,
कीजो कांति शिवेश ॥ १० ॥

॥ इति ॥

॥ गोघामंडन श्रीनेमिनाथ जिन स्तवन ॥

(झिंझोटी-जिला)

क्या छबी लागत प्यारी, शिवादेवी नंदनकी,
शिवतरुकंदनकी, क्या छबी लागत प्यारी ॥ अं० ॥
झुलरह्यो चंद्र वदनपर प्रभुके,
अमीरस भरदीनी क्यारी ॥ क्या० ॥ १ ॥
त्रिभुवन तिलकको तिलक सुनेरी,
विच मोतियनकी किनारी ॥ क्या० ॥ २ ॥

मणिमय मुकुट सकुंडल राजत,
अंजन अखीयां कारी ॥ क्या० ॥ ३ ॥
पंचरतन रची अंगीयां नीकी,
फूलपगर भरी झारी ॥ क्या० ॥ ४ ॥
गोघा नगर प्रभु चरणकी छाया,
कांतिविजय चलकारी ॥ क्या० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ गोघामंडन श्रीनवखंडा पार्श्वजिन स्तवन ॥

(देशी—प्यारा पासजी हो राज)

नवखंडाजी हो पास, मनडुं लोभावी बेठा आप उदास ॥ अं०
तारे तो अनेक छे ने मारे तो तूं एक ।
कामी क्रोधी देव जोइ, कहाडीनांखी टेक ॥न० १॥
कोई देवी देवतानो, झाली उभी हाथ ।
मोहडे मांडे मूरलीने, नाचे राधानाथ ॥ न० २ ॥
जटाजूटा शिर धारे, वली चोले राख ।
गलेतो गिरिजाने राखे, जोगीपनो खाख ॥ न० ३ ॥
पीरने फकीर जोया, निरगुणी देव ।
काचकणी मणि गणी, आतो खोटी टेव ॥ न० ४ ॥
देव देखी झूठडाने, आव्योछुं हजूर ।
गुण आपो आपना तो, कांति भरपूर ॥ न० ५ ॥

॥ इति ॥

॥ गोघामंडन श्रीनवखंडा पार्श्वजिन स्तवन ॥

(वणजारानी देशी)

समतारस शीतल छाया, गोघा मंडन जिनराया,

वामा उदरे प्रभु जाया, सुरगिरिपर सुरपति लाया,
तति सब मिल स्नान कराया, पूजा करी दिल हर्षाया,
जब मंगल शोर मचाया ॥ गोघा० ॥ १ ॥

शची सखीयां मिल गुण गाया, तली तालमें तान बनाया
करकंकण फूल उडाया, घुमरही कटीकृति काया,
नृत्य नयनसे नयन मिलाया ॥ गोघा० ॥ २ ॥

जोबन मद मदन हराया, व्रत ले जिनमत उलसाया,
तीरथपति नाम धराया, जो सरणागत प्रभु आया,
मुगतिका पंथ दिखाया ॥ गोघा० ॥ ३ ॥

तारक तुझको सुण आया, शिर चरण सरण मैं पाया,
कछु बोलत नाही बुलाया, रुसिये मत मुनिपतिराया,
मुझको तुझसे है माया ॥ गोघा० ॥ ४ ॥

जिनराज तुमे नही माया, चित कैसे आप चुराया,
मत औरनसे भरमाया, चिदघनरस अंतर आया,
कहे कांतिविजय सुख पाया ॥ गोघा० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ गोघामंडन श्रीचंद्रप्रभस्वामी स्तवन ॥

(अडल–छंदनी चाल)

चंद्रप्रभु महाराज सुनो मोरी विनती,
जानो दीनदयाल तथापि कहुं कृति ।
प्राणी प्राण प्रपात मृषा मुखे उचर्युं,
विन दीधे पिन लीध सुशील न दिल धर्युं ॥ १ ॥

परिग्रह वलग्यो पिशाच क्रोधानल गुण दह्यो,
आठ शिखरी अभिमान कुटिल अजगर ग्रह्यो ।
लोभ पयोनिधि धूर राग पासे पड्यो,
द्वेष कुक्लेश कृपाणी कटारी लडथड्यो ॥ २ ॥
कूडुं दीधुं आल पिशुनता न परिहरी,
सुख दुख हर्ष ने शोक निंदा परनी करी ।
मायामृषा धरी वाद शरीरी भोलव्यो,
सेवी विपर्यय तत्त्व सुतत्त्वने ओलव्यो ॥ ३ ॥
कहाड्यो काल अनंत ए थानक आदरी,
निज करी कर्मनी ज़ाल गुंथाणो फरी फरी ।
कर करुणा करुणाकर जालथी नीसरुं,
मौन धरी बेठा आप हवे हुं शुं करूं ॥ ४ ॥
तारो तेहने नाथ गुणे जे बरोबरी,
निर्गुणी करीए सनाथ बडाई तो खरी ।
रडवडुं चरणहजूर दया नथी आवती,
कांतिविजय पूरो आश दिलासो गोघापति ॥ ५ ॥
॥ इति ॥

॥ श्रीऋषभदेवजिन स्तवन ॥

(देशी–वींदडी–तुमे सिद्ध चक्र पदध्यावोरे)

ऋषभजिनंद अवधारो,
मुझे भवजलपार उतारो रे जिनजी ऋषभ० अंचलि॥
प्रभु सेवक सुखीयो कीजो,
जगगुरु गुरुपदवी दीजोरे जिनजी ॥ १ ॥

त्रिभुवनपति नाम धरावो,
रडवडु पण दिल न लावोरे जिनजी ॥ १ ॥
गति गमन रमणता कीधी,
पण नाथ नजर नवि दीधीरे जिनजी ॥ २ ॥
वली कुगुरु कुदेवने ध्यायो,
मन कुमति कुधर्मे ल्यायोरे जिनजी ॥ ४ ॥
तप परिचय सर्व निवार्यो,
तुम आगम अंतर धार्योरे जिनजी ॥ ५ ॥
करुणा करी शिरपर दीजो,
निज अंगज ज्यूं करी लीजोरे जिनजी ॥ ६ ॥
निजवर्ग सभी तुमे तार्यो,
अब कांतिविजयनो वारोरे जिनजी ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(रामकली-आंगण कल्प फल्योरी देशी)

अचिरानो नंद मल्योरी हमारे आज अचिरानो ॥ अं० ॥
संवर जल निर्मल भरी कलशे, सिंचत पाप टल्योरी ह०॥१
चिदघन चंदन रुचि घनसारा, मृगमद भाव भल्योरी ह०२
हार मनोहर संयमकरणी, शील सुगंध ढल्योरी ह० ॥ ३ ॥
ध्यान सुवासित धूपकी धारा, कुमति कुगंध वल्योरी ह०॥४
ज्योति प्रकाशी तिमिर विनाशी, ज्ञानावरणी गल्योरी ह०५

निजगुण तंदुल समरस मेवो, तपतरु सफल फल्योरी ह०॥६
आरती मंगल अनुभव दीवो, कांति स्वभाव कल्योरी ह०॥७

॥ इति ॥

॥ श्रीसिद्धाचल तीर्थराज स्तवन ॥

(होरी–सामरो सुखदाई–देशी)

कंचनगिरि दर्शन पाई, मुगति मोरी नेडे आई ॥ अंचली ॥
ऋषभादिक प्रभुचरण जुहारी, जय गिरिराज वधाई ।
मरुदेवानंदन वंदन कीनो, धनपति टूंक बनाई ॥ मु० १ ॥
सेठ मोतिशानी टूंक सुराजत, राजत रंग सवाई ।
ऋषभजिनंद दयानिधि निरख्यो, जिनसे तीर्थ बडाई ॥ २ ॥
टूंक मनोहर मनहर लीनो, नरशी केशवजीकी भाई ।
दर्श करी फरी शांति जुहारो, शिवसुख पदवी पाई ॥ ३ ॥
मोतीहार विहार विमलवसी, उर्वशी हसी हसी आई ।
धसी धसी नाथ सुनंदानो नमिये, गणधर रायण आई ४
चित्त उल्लसी बालावसी नमिये, भाव भलो मन लाई ।
नाभिनरेश्वर नंदन नीको, बेठो तीरथ ठाई ॥ मु० ॥ ५ ॥
गगन मगन गंगाजल गिरगयो, हेमगिरि बेठो आई ।
मरुदेवा अंगज मंदिर रचियो, साकर प्रेम कमाई ॥ ६ ॥
टूंके अजित जिनेश्वर राजा, संघपति हेमाभाई ।
नंदीश्वर आज नयने निरख्यो, धन्य तूं उजम बाई ॥७॥
सेठ मगनभाई टूंक सुरंगी, पास चिंतामणि पाई ।
छीपावसी क्षण क्षण मन आवे, शांति अजित नवाई ॥८॥

खरतरवसी जस शशीसम छाया, परिकर किरणा छाई ।
आदिविधाता शासनकेरो, चउविध वेठो बनाई ॥ मु० ९॥
कातिक पूनम वेद वाण निधि, शशीवर्षे नुति गाई ।
कांतिविजय आतमपद लीनो, कर्म काटनमें सहाई ॥१०॥

॥ इति ॥

॥ श्रीजामनगर चैत्यपरिपाटी स्तवन ॥

(प्रभाति—देशी—विमलाचल नितु वंदिए)

जामनगर तीरथ नमुं, अचिरासुत राजे ।
रजतगिरि गुरुमंदिरे, वेठा धर्मसमाजे ॥ जा० ॥ १ ॥
शांति कुंथु मणिफणीधनी, चउमुख चउदुख चूरे ।
पास वीर नमि नेमजी, निजसंपद पूरे ॥ जा० ॥ २ ॥
ऋषभ वीर वासुपूज्यजी, नेमि श्यामशरीरा ।
शशिधर धर्म जीरावलो, गोडी गंग सखीरा ॥ ३ ॥
वासुपूज्य मुज भुज ग्रहो, भवदवने समावो ।
ऋषभ पास मुख जिनवरा, क्षण क्षण मन आवो ॥ ४ ॥
नेमि निरंजनी अंजनी, मन मंजनहारी ।
तीर्थपति नमुं वारमो, प्राणी पाप पहारी जा० ॥ ५ ॥
धर्म जिनेश्वर वंदीने, गोडीपास जुहारुं ।
परिकर जिनवर पूजीने, नमुं तीरथ तारुं जा० ॥ ६ ॥
पास प्रभु गृहमंदिरे, नमी प्रणमुं वगीची ।
अजित ऋषभ कांति वनि, मानु रविकर वीची जा० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीप्रभास पाटणतीर्थ चैत्यपरिपाटी स्तवन ॥

(वढंस-अबतो पारभए हम साधु-देशी)

घरिया सफल भइ अब मेरी,
जब सुरपुरी मोरे नजर परीरे ॥ अंचली ॥
शशिद्युति शशियुत शशिप्रभु निरखी,
शशिसम आतमराम थयोरे ।
गुणनिधि सुविधि जिनंद मोहे मिलियो,
कलिमल कुविधि कलंक गयोरी ॥ घ० ॥ १ ॥
अचिरानंदन शीतलचंदन,
शीतल सेवक क्यों न करोरी ।
वामानंदन विनती मोरी,
भवतरुकंदन ख्याल धरोरी ॥ घ० ॥ २ ॥
युगलिकधर्म निवारक तारक,
ऋषभजिनंद तोरे पाय परूंरी ।
करिवर अंकित कर्मनिरंकित,
अजित जिनंदजीको ध्यान धरूंरी ॥ घ० ॥ ३ ॥
मल्लिजिनंदको दर्श सुधारस,
पान कर्यो भवरोग हरोरी ।
गोयम गणहर गुरुगम दीनो,
वीरजिनंद मोहे चेरो करोरी ॥ घ० ॥ ४ ॥
नेमिनिरंजन भवदुखभंजन,
कांतिविजय सुख धाम धरोरी ।

पंचे बाण निधि शशी महामासे,
तीर्थपति नुति पाप हरोरी ॥ घ० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ महुवामंडन श्रीमहावीर जिन स्तवन ॥

वीर सुनो मोरी विनती, तुम त्रिभोवन तारणहार ।
मधुमति नगरी विराजता, सवि सेवकने आधार ॥ १ ॥
लौकिक पंथ में परिहर्यो, मारे तुमरो पंथ प्रमाण ।
मन तन वचने मानियो, दिजो सुगुणगुणावली दान ॥२॥
संगम देव सुराधमे, उपसर्ग कर्या विकराल ।
गोसाले निंदा करी, तुमशासननो वाचाल ॥ ३ ॥
फणिधर कौशिक आकरो, दीधो डंख सह्यो असराल ।
कर्णे कीला पोरव्या, वली चरणे पचाव्यो थाल ॥ ४ ॥
दीनदयाल दया करी, एवा क्रूर उपर महाराज ।
वली चंदनबालाने आंगणे, गया शिवसंकेतने काज ॥५॥
धर्मनुं बीज आरोपवा, भूमंडल कीध विहार ।
कर्मे कर्योरे वेगलो, अब चरण अछ्याने शी वार ॥६॥
निजपद दायक सांभली, आवी उभो नाथ हजूर ।
आतमराम सुहंकरो, करो कांतिविजय भरपूर ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

अथ सज्झाय संग्रह ।



(१) । रेखता ।

मना मत जान कुछ अपना, जगतमें जीवना स्वपना ।अं०।
तीर्थपति ज्ञानी गणधारी, चक्री अधचक्री बलकारी ।
सुरपति सूर्य शशी सूरा, रहे नहीं काल भए पूरा । म० ।१
द्वारिका दैवी मनोहारी, द्विपायन कोपने जारी ।
बली बलभद्र वासुदेवा, मरे सब सुर करत सेवा ॥ म० ॥२
नेकनामदार कहे जिनको, धूमध्वज धरदियो तिनको ।
चोवा चंदन सुगंध तेला, धूलमें मिलगया मेला ॥ म० ॥३
गजघटा तुरग तरल तोरी, फोजमें जोरी नहीं धोरी ।
काल बलि बाकुले आया, गिनतीका अंक नहीं पाया ॥४॥
कुटुंबकला देखतो झाडी, बनी ज्यूं ब्रडी पुष्पवाडी ।
नारीजन नेह बन्यो नीको, जल्यो जब होगयो फीको ॥५॥
जगत बाजी बनी बूरी, किसीकी सो भी नहीं पूरी ।
शरीरी जावते देखो, करो कुछ होत नहीं लेखो ॥ म० ॥ ६
अथिर है सब दुनियादारी, कही गुरुगमसे ए धारी ।
आतमगुरु कांति घट जागे, रहे नहीं भावतिमिर आगे ॥७

॥ इति ॥

(२) ॥ देशी—सो जोगीगुरु मेरा ॥

नदी नावका मेलारे, बावा नदी नावका मेला
कौन गुरु कौन चेलारे । बा ० अंचली ॥

धन कण कंचन ढेर पडे रहे,
सोवत करत न शेलारे ॥ वा० ॥ १ ॥
पापकर्म गठडी शिर लीनी,
दुरगति देदिया ठेलारे ॥ वा० ॥ २ ॥
मात पिता नारी सुत बंधव,
स्वारथमें सब गहेलारे ॥ वा० ॥ ३ ॥
लूटण पीटण लगगई दुनिया,
खींचत चीर फटेलारे ॥ वा० ॥ ४ ॥
मारामारी मचरही मिलकतपर,
आपस करत धकेलारे ॥ वा० ॥ ५ ॥
राखनवारो बन राख विखरगयो,
जीवनकु मिलगया जेलारे ॥ वा० ॥ ६ ॥
धर्मी अधर्मी मरन दोननको,
स्वर्ग नरक है गेलारे ॥ वा० ॥ ७ ॥
तृष्णा तरंगिणी टप ले वाहुरे,
इन विच मत कर खेलारे ॥ वा० ॥ ८ ॥
इन देहनसे जिनराज समरले,
आतमकांति भरेलारे ॥ वा० ॥ ९ ॥

॥ इति ॥

(३) ॥ पील्लू ॥

ए संसार सुपनकी माया,
मात पिता अरु कौन है,

बादलरंग अरु तरुवर छाया,
पलभर मिल झटपट पलटाया ॥ ए संसार० ॥ १ ॥
करिवर कान चपल चपकारा,
नारीको नेह निर्झर जलधारा ।
उदधितरंग तुरंग तरलता,
वायुवेग हत मेघ वरसता ॥ ए संसार० ॥ २ ॥
नारीके नयन कुमतिकि मतियां,
कायर कंप पुराणकी बतियां ।
साधुसमागम तथागत कहनी,
वेदधर्ममें दया मति रहनी ॥ ए संसार० ॥ ३ ॥
वैसी उपमा घटत है तिनमे,
कमला कुटुंब प्रमुख ध्वजमिनमें ।
मेल मिल्यो सो होवत न्यारो,
विछडगयो जब क्योंकर प्यारो ॥ ए संसार० ॥ ४ ॥
तुं नहीं किसीका कोइ नहीं तेरा,
मूरख झूर झूर मानत मेरा ।
विजयानंद मतिचंद सुसारो,
पान करो होवे कांति उजारो ॥ ए संसार० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

(४) ॥ सोरठ ॥

दिन चार मुसाफर डेरा, क्युं मानत मूरख मेरा ॥ अं० ॥
मोहनिगड निगडित जबलग जग, तबलग तरुपंखेरा ।
वाट वटाउ विछडेगा मेला, सुझत होत सवेरा ॥ दिन० १ ॥

राग द्वेष खडे रहे खडगी, पास करत है हेरा ।
काम क्रोध दावानल लगरह्यो, विषय पवन दे घुमेरा ॥२॥
मान महीधर मुगतिको वैरी, तोरत धर्मका वेरा ।
भवोदधिपार परे अब कैसे, आतम भविजन केरा ॥ ३ ॥
माया नागन ममता अजगरनी, दशनको झहर झरेरा ।
निशदिन त्रिभुवन प्राणी चावत, देवत दुर्गति नेरा ॥ ४ ॥
आपद दूर हटेगी तेरी, तत्त्व को पान करेरा ।
विजयानंद चरण सेवनसे, आतमकांति जगेरा ॥ दि० ५ ॥

॥ इति ॥

(५) ॥ काफी । देखा दुनिया वीच–देशी ॥

समझलियो सब साररे जगमें नहीं तेरो ॥ अंचली ॥
जो जो मानत मूरख अपनो, सो सो होत अनेरो ।
गिरगई काया परिरही माया, उडगयो जीव अकेरोरे ॥ १
दुनियादारी खरीरे विमारी, नारीजनको नेरो ।
करत पुकारा वनविच वैठे, देदियो आंचचंगेरोरे ॥ २ ॥
माल खजानो परवश छीनो, शव ढुक ज्युं पंखेरो ।
घर छर परघर घरणी चाहत, निशदिन करत वखेरोरे ॥ ३
गिरगए मंदिर गिरगए माले, फेरु फिरत चोफेरो ।
उडरहे कागा मंगलघर पर, जानत जंगल मेरोरे ॥ ४ ॥
गुजरगए राजा और राणा, उजरगए केइ शहेरो ।
आतम कांति जगे घटविचमें, नासत निशि अंधेरो रे ॥५॥

॥ इति ॥

(६) ॥ धनाश्री ॥

राह तुरी उलटेनुं बे जटडी, राह तुरी उलटेनुं ।
संग तुसांदा खंग बुरांदा, छडदे फड मत मैनुं बे जटडी १
जेडे जेडे भेडे भेडे हुंदे थाडे नेडे, पढ पढ करन बखेडे ।
भ्रमदी पोथी लद्द लद्द फिरदे, रोडे महंत न केडे ॥ २ ॥
कन्न फडायो झुंड बढायो, अग्गबिच अंग सडायो ।
गंगमें गोते झूठ खवायो, करवत काशी फडायो ॥ ३ ॥
जट ज्युं रट रट पढ बक बकदा, वेद पुराण गीतांदा ।
गल्ल ततवांदी नेडे न हुंदी, खोतेनुं मिसरी कुजांदा ॥ ४ ॥
छडदेनी राह अब नेडे असांदा, साडे कोल कि काम तुसांदा
आनंदरंग समागम सानुं, कांति जगपयो है गुरांदा ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

(७) ॥ दक्षणी ठुमरी ॥

सांगु काय तुला प्राणी, समझ आहे नाही रे ।
राहयला बसुन का तु तुजा नाही काही रे ॥ सां० १॥
रावणाचा राज गेला, गेला रामराजारे ।
मोठे मोठे मेले आता, काय तुजा माजा रे ॥ सां० २॥
नारायण नरपति, रघुपति राम रे ।
नांव आहे त्यांचे मात्र, कुठे आहे धाम रे ॥ सां० ३ ॥
पडुन गेले दंत पांडु, केश तुला आला रे ।
पायजे प्रभुचा नांव, धर जपमाला रे ॥ सां० ४ ॥
पाहुन आतमराम, कांति शिवधाम रे ।
करु नका कोठेतरी, विषयविराम रे ॥ सां० ५ ॥

॥ इति ॥

(८) ॥ कल्याण ॥

जय जय हेमचंद्र महाराज,
जय जय हेमचंद्र महाराज ।
सफल हो दर्शन जैनसमाज ॥ जय० ॥ अंचली ॥
कलियुग कल्पतरु मोहे मिलियो,
दाता गरीब निवाज ॥ जय० ॥ २ ॥
सुरमणि कहा करूं मृन्मय रंका,
तुं श्रुतमणि मणिराज ॥ जय० ॥ ३ ॥
निहारत नहीं कवहु सुरगवीआ,
रसना सुरगवी आज ॥ जय० ॥ ४ ॥
कविसम करत है सुरगुरु मुनिगुरु,
कहो कछु नावत लाज ॥ जय० ॥ ५ ॥
हेमचंद्र कांति छवी पाई,
हेमचंद्रकरे काज ॥ जय० ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

(९) (माढ–गिरनारी जातां राख लीजोहे–देशी)

ज्ञानीगुरु मोरा हे हेमचंद्र भगवान,
अरज उर लीजीये हे राज ।
आज उदासी क्युं करो हे राज,
सेवकने शिर हाथ दिलासो दीजीये हे राज ॥ १ ॥
पंचम काल करालमें हे राज,
गुरुगम विरहो नाथ मति मोहे घनी हे राज ।
कर करुणा करुणापति हे राज,
तुं शासन सिरदार मिल्यो मुझने धनी हे राज ॥२॥

मुगतिगया महावीरजी हे राज,
स्वामी सुधर्मा पटधर प्रभुजी विराजिया हे राज ।
अनुक्रमे सूरि स्वर्गे गया हे राज,
भरत भर्यो अंधकार कुमतिमत गाजिया हे राज ३
संवत शत एकादशे हे राज,
कातिक पूर्णमासी निशि पैंतालीयो हे राज ।
तिमिर हर्यो तरणि चर्यो हे राज,
जब जनम्या जिननंदन पद नेता लियो हे राज ॥४
वर्ष नवे संयम लियो हे राज,
इक्किसे अनगार परमपद पाइयो हे राज ।
ज्ञानदिवाकर झलहल्यो हे राज,
तिमिर हर्यो हृदयगंत जग जश गाइयो हे राज ॥५
कुमर नृपति प्रतिबोधियो हे राज,
धर्मनरेंद्र सुराज थपायो भूतले हे राज ।
रचना रची रतनावली हे राज,
शासन होसि सनाथ जो आवेला मले हे राज ॥६॥
संवत निधि वीश वारसो हे राज,
सुरपुरिरो हो विहार करि फिरि आइया हे राज ।
पाटण पावन आतमा हे राज,

१ संवत् १९५९ पाटण शहरमां श्रीपंचासरा पार्श्वनाथना मंदिरमां कलिकाल सर्वज्ञ श्रीहेमचंद्रसूरि महाराजनी मूर्तिनी स्थापना थई ते वखते आ स्तुति रचाई छे । श्रीहेमचंद्रसूरिनो जन्म ११४५ कार्तिकसुदि पूर्णिमाए थयो हतो । ११५४ मां दीक्षा । ११६६ मां सूरिपद । १२२९ मां स्वर्गवास ॥

कांतिविजय दियो दान सुधारस लाइया हे राज ७

॥ इति ॥

(१०) ॥ विहाग ॥

यशोविजय गुरु ज्ञानी,
परमगुरु यशोविजय गुरु ज्ञानी अंचली ॥
आगमपारद न्यायविशारद,
विरुद दियो मिल सावधानी ॥ प० १ ॥
व्याकरण छंदोलंकृति महामति,
सती सरस्वती याकी गवानी ॥ प० २ ॥
कुमति कुगति वारणके कारण,
शासन पोत सुकानी ॥ प० ३ ॥
स्यादवाद सिंहनाद साद करी,
मुखमारे मतवारे मृग मानी ॥ प० ४ ॥
व्यास प्रभाकर गदाधर कणच्चर,
मत लियो सर्व पिछानी ॥ प० ५ ॥
कृत ग्रंथ शत मत षटकी कथनी,
ऐंद्रपदांकित वखानी ॥ प० ६ ॥
जीरणज्वरपर झहरपान सम,
कुमति कही न सुहानी ॥ प० ७ ॥
भव परिताप तपत भविजनको,
शांतसुधारस वानी ॥ प० ८ ॥
प्रभुपदकांति मनवंछित पूरो,
चिंतामणि ज्यूं चमकानी ॥ प० ९ ॥

॥ इति ॥

(११) ॥ सोरठ ॥

सूरि श्रीयुत विजयानंदो, उडुगण गगने ज्यूं चंदो–अंचल्हि ॥
मुनिमन मानसरोज सुहंकर, विकसित वीर जिनंदो ।
गणधर गणपति गौतम ज्ञानी, संतति श्वेत दिनंदो ॥ १ ॥
पट्ट परंपर आगम अर्थे, दीपक ज्योति अमंदो ।
तिमिर रहत नहीं अंतरघटमें, काशित तेज जगंदो ॥ २ ॥
वादि कमलदल वनराजीमें, विंध्याचलज गजंदो ।
कुमति कल्प विकल्प विहंगम, धीवर पंजर फंदो ॥ सू० ३ ॥
गुणरत्नाकर मुनिजन मनहर, सुरजन सुरतरुकंदो ।
मुख मलयाचल मलयज अर्थो, हिमगिरि खंड रसंदो ॥४॥
हारी तरंगिणी तरलता करती, सुनकर शब्द सुखंदो ।
रजनीचर रजनी परिभमतो, देखी शांत शुभंदो ॥ सू० ५ ॥
ध्यान धरतहै सुरवर जिनको, भ्रमर कमल मकरंदो ।
नाम रटे भवखेद मिटत है, हरत ताप ज्युं जलंदो ॥ ६ ॥
आतमराम आनंद सुनंदी, जिनवाणी रसछंदो ।
कांतिविजय कहे मन वच काया, प्रणमत अंग सुचंदो ॥७

॥ इति ॥

(१२) ॥ देशी–जीरे मारे ॥

जीरेमारे विजयानंद सूरीश,
विन दर्शन मन टलवले जीरेजी ।
जीरेमारे मतमत वादविवाद,
सुरतरुसम भविजन फले जीरेजी ॥ १ ॥
जीरेमारे आ वली वात विशेष,
सो तो जड स्थिरता थयो जीरेजी ।

जीरेमारे आ तो ज्ञानभंडार,
दिनमणि दिशि दिशिमें गयो जीरेजी ॥ २ ॥
जीरेमारे धन्य ए गुरुअवतार,
जन्मथी मदन निवारियो जीरेजी ।
जीरेमारे ज्यारे थया अणगार,
संयमरस जस धारियो जीरेजी ॥ ३ ॥
जीरेमारे शील रतन असमान,
गुणरत्नाकर जलहले जीरेजी ।
जीरेमारे भाग्यवली जे जीव,
तेहने ए गुरुवर मले जीरेजी ॥ ४ ॥
जीरेमारे षटकाया प्रतिपाल,
शांतसुधारस महानिधि जीरेजी ।
जीरेमारे धरमधुरंधर नाथ,
जिनआगम कंठे विधि जीरेजी ॥ ५ ॥
जीरेमारे संवत शत ओगणीस,
जेठ अधिक बावन थया जीरेजी ।
जीरेमारे सप्तमी मंगलरात,
वादे शशी गुरु सह गया जीरेजी ॥ ६ ॥
जीरेमारे पूर्वपरें धरो नेह,
कांति कहो निज वयणथी जीरेजी ।
जीरेमारे तुमतो निरागी नाथ,
हुंतो सरागी नयणथी जीरेजी ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

(१३) ॥ मल्लिजिनेश्वरदेव भवदधिपारकरोरे । देशी ॥

आतमराम आधार, गुरुगम ज्ञानखरोरी ।
जिसविध जाय अबोध, तिसविध बोध धरोरी ॥१॥
तुमविन अवर न कोई, मुजमन भाव धरेरी ।
स्तनपीवक जिसो बाल, स्तनविन रुदन करेरी ॥२॥
करुणाकर गुरुदेव, करुणा क्युं न धरोरी ।
जिसविध होय सनाथ, मुनिजन तैसो करोरी ॥ ३ ॥
पंचमकाल कराल, जिनमत शरण कह्योरी ।
भेदे पडीया जीव, चरण न सरण लह्योरी ॥ ४ ॥
धर्मिजन आधार, देह विदेह गयोरी ।
स्वर्ग निवासी देव, धर्मनो दानी थयोरी ॥ ५ ॥
तुम कियो उर्ध्व विहार, अवधिज्ञान गह्योरी ।
अब हम कोण आधार, आगम विरह दह्योरी ॥६॥
जाणो सर्व बनाव, राग विराग धरोरी ।
कांतिविजय कहे नाथ, विघ्ननें दूर हरोरी ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

(१४) ॥ गजल ॥

जींदगी जाना है जरूर, दिनकी खराबी हो रही ।
अकल भी तेरी गुमगई, किताब जो कही ॥ १ ॥
बदौलत नसीबा टुक मिला, जिनपर मिजाजी मत करो ।
वेशक करो फुरमान है, जमी जमाना मत भरो ॥ २ ॥
खैरात कीस्मत ने करी, खलकत गुजारा है ।
फकीर हो या अमीर हो, आस्मान का तारा है ॥ ३ ॥

जनरल गवर्नर राव राणे, सुलतान सिकंदर फिर नये।
हक्कदार जमीमे जा गिरे खत, ख्याल खतम सब हो गये॥४
यकीन करो नेकी करो, बुरा भी दिल टुक मतकरो।
आखिर खुदाका नूर होगा, आप किसीसें मतडरो॥५॥

॥ इति ॥

॥ इति प्रवर्त्तकश्रीकान्तिविजयमहाराजकृतिः सम्पूर्णा ॥



श्री १०८ श्रीमद्विजयानन्दसूरि (आत्मारामजी) महाराज
शिष्य महोपाध्याय श्रीलक्ष्मीविजयजी शिष्य
मुनिमहाराज श्रीहर्षविजयजी शिष्य मुनि
श्रीवल्लभविजयजी कृत

स्तवन तथा सज्झाय संग्रह ।

(१) (भावनानुं मंगलाचरण)

मंगल पढिये प्रथमही भावना समे ॥ मं० ॥
आनंद धार विघ्न विकार सकल उपशमे ॥ मं० ॥
ॐ, ह्रीँ, श्रीँ, अर्हम् उत्तम जाप, जपे खपे पाप,
बने रूप आप, भव नहीं भमे ॥ मं० १ ॥
निर्विकार, निष्कलंक, निर्दोष, प्रभु शांतिनाथ,
भवी नामी माथ, जोडी दोनो हाथ, भावसे नमे ॥२
गावो, ध्यावो, भावो, आतम लक्ष्मी काज,
हर्षे जिन राज, वल्लभ शिरताज, नमो तमे हमे ॥मं०३

॥ इति ॥

(२) (चालो सखीजिन दर्शन करिये. चाल नाटक)

पार्श्व प्रभु जिन अंतर्यामी ॥
गावो भवि गुण चित्तसे मन प्रीतसे ॥ अंचली ॥
इंद्र सुरासुर नर नरपति जस,
सेवाकरे शुभ आससे, शुभ वाससे,

आनंद धारी, प्रभु सुख कारी, पार उतारी,
करोनति, गुणतति ॥ पा० १ ॥
वामानंदन परदुःखभंजन,
रंजन प्रभु शुभध्यानसे, शुभ ज्ञानसे,
मंगल माला, सुख विसाला, दीनदयाला,
करो नति गुणतति ॥ पा० २ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष धरीने,
ध्यावो भवि प्रभु पासको, भव नासको,
मस्तक नामी, वल्लभ स्वामी, आनंद पामी
करो नति गुणतति ॥ पा० ३ ॥

॥ इति ॥

(३) नारोवालमंडन श्रीमुनिसुव्रत स्वामी स्तवन ॥

(कानडा–दरबारी)

जिन गुण गाउं मैं प्रभु गुण गाउं,
मुनिसुव्रत जिन सीस नमाउं–जिन० ॥ अंचली ॥
तिर्थंकर जगदीश शिवंकर, एक अनेकसे लगन लगाउं;
ब्रह्मा विष्णु चिदघन स्वामी,
जिन शिव नाथ निरंजन ध्याउं ॥ जिन० १ ॥
नाम अनंता मूल अनामी, दोष रहित गुणवान जनाउं;
क्रोध मान माया नहीं प्रभुमें,
लोभ काम नहीं लेश बताउं ॥ जिन० २ ॥
रागचिह्न नहीं स्त्री प्रभु संगे, द्वेष चिह्न नहीं शस्त्र

शांत सुधारस मूर्ति सोहे,
जय तुम देव चरण चित लाउं ॥ जिन० ३ ॥
मन वच काया शुद्ध आराधी, निर्गुण ब्रह्म सेवा फल चाउं;
सादि अनंत स्थिति सिद्ध होके,
फिर नहीं भव जनि मृत्यु पाउं ॥ जिन० ४ ॥
आतम लक्ष्मीधर प्रभु दीजे, आतम लक्ष्मी हर्ष भराउं;
माघ सुदि तेरस बुध वल्लभ,
नारोवाल उत्सव खुशी थाउं ॥ जिन० ५ ॥

॥ इति ॥

(४) लालबागमंडन श्रीचिंतामणि पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(वाला वेगे आवो रे–देशी)

चिंतामणि स्वामीरे, कहुं शिर नामीरे,
प्रभु सुनो विनती होजी ।
पारस प्रभु तुम सम देव न कोय,
वारिजाउं देख लिया जग जोय–चिं० ॥ अंचली ॥
हम तुम सरिखा नाथजी, जीव न भेद लगार ।
तुम निज रूपे रम रहे, हम रुलते संसार ।
वारि प्रभु कर्म तणा ए प्रताप–चिंतामणि० ॥ १ ॥
काल प्रवाह अनादिको, चेतन कर्म संबंध ।
दूर किया तुमने प्रभु, हम बिचमें रहे बंध ।
वारि प्रभु तुम वर नहीं नहीं शाप–चिंतामणि० ॥२
क्रोध मान माया अति, लोभ परम ए दोष ।
अंश नहीं तुममें प्रभु, वीतराग गुण पोष ।

वारि प्रभु चिदघन रूप अमाप–चिंतामणि० ॥ ३ ॥
निर्दोषिके ध्यानसे, ध्याता ध्येय अदोष ।
पारसमणि कंचन करे, गुणी आलंबन जोश ।
वारि प्रभु सेवक सम संग आप–चिंतामणि० ॥ ४ ॥
लालबागमें रम रहे, निजगुण दीनदयाल ।
मोहमयी नगरी खरी, पिण नहीं मोह जंजाल ।
वारि प्रभु ए तुम निज गुण छाप–चिंतामणि० ॥ ५ ॥
आतम सत्ता सारिखी, सब जग जीव स्वभाव ।
आतम लक्ष्मी पामिए, विघटे जीव विभाव ।
वारि प्रभु वल्लभ हर्ष मिलाप–चिंतामणि० ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

(५) ॥ श्रीआदिनाथप्रभु स्तवन ॥

(चाल–राम नाम रस पीजे प्याला)

आदि जिनेश्वर स्वामी, जिनजी स्वामी रे स्वामी रे
स्वामी शिव धामी ॥ अंचली ॥
राग नहीं नहीं द्वेष प्रभुमें,
वीतराग पद पामी रे पामी रे पामी ॥ शि० १ ॥
भाव सहित जो प्रभुको आराधे,
प्रभु पद आतम रामी रे रामी रे रामी ॥ शि० २ ॥
इम जानी तुम शरणे आयो,
नाथ निरंजन नामी रे नामी रे नामी ॥ शि० ३ ॥
तारक सेवक प्रभु सम होवे,
मानुं नहीं फिर खामी रे खामी रे खामी ॥ शि० ४ ॥

आतम लक्ष्मी हर्ष अनुपम,
वल्लभ अंतर्यामी रे यामी रे यामी ॥ शि० ५ ॥

॥ इति ॥

(६) श्रीमुनिसुव्रत स्वामी स्तवन ॥

(चाल-वारीजाउं रे सांवरिया तोपे वारणा रे)

वारी जाउंरे जिनवरजी तुमपर वारनारे ॥ वारी० अं० ॥
चौतिस अतिशय गुण हैं बारां, दोष नहीं प्रभु तुममें अठारां ।
पैंतीस वाणीके गुण सुंदर धारना रे ॥ वारी० १ ॥
शांत सुधा दृष्टि अमी वर्षे, पद्मासन देखी भवी हर्षे ।
वीतराग सम और न देव विचारना रे ॥ वारी० २ ॥
शुद्धालंबन देव जिनेश्वर, तुं शंकर सुखकर परमेश्वर ।
नाम अपूरव मंतर काम विसारना रे ॥ वारी० ३ ॥
सुव्रत स्वामी सुव्रत दाता, दीजे प्रभुजी शिव सुख साता ।
रात दिवस तुम चरणी सेवक तारना रे ॥ वारी० ४ ॥
आतम लक्ष्मी हर्ष धरीने, फल मांगु प्रभु चरन परीने ।
वल्लभ सेवक आवागमन निवारना रे ॥ वारी० ५ ॥

॥ इति ॥

(७) श्रीझगडिया तीर्थ मंडन श्री आदि जिन स्तवन ॥

(चाल-वारी जाउंरे सांवरिया तोपे वारनारे)

प्रभु आदीश्वर स्वामीजी पार उतारना रे ॥ प्रभु० ॥
तिर्थंकर जिनवर अरिहंता, पुरुषोत्तम तारक भगवंता ।
आदिकर निज तीरथ नाम सु धारना रे ॥ प्रभु० १ ॥
लोक नाथ नायक हित कर्त्ता, देशक धर्म के भव भय हर्त्ता ।

नमन करुं धरुं शरण प्रभु मोहे तारना रे ॥ प्रभु० २ ॥
मोह माया मद मान निवारी, राग द्वेष मल दंभ विडारी।
वीतराग प्रभु तुम पर जाउं वारना रे ॥ प्रभु० ३ ॥
तारक जानी शरणे आयो, तारो प्रभु निज सम सुख दायो।
तारण तरण प्रभु निज नामको पारना रे ॥ प्रभु० ४ ॥
अपने जन सब तुमने तारे, मौन किया प्रभु सेवक वारे।
ऐसा नाथ न चाहिये आप विचारना रे ॥ प्रभु० ५ ॥
तीर्थ झगडिया मंडन स्वामी, आतम लक्ष्मी हर्ष पामी।
वल्लभ सेवक आवागमन निवारना रे ॥ प्रभु० ६ ॥

॥ इति ॥

(८) श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(चाल—अशरण शरण करण सुख संपत)

शांतिनाथ शांति के कर्त्ता, हर्त्ता दुःख दोहग सारा।
राग नहीं नहीं द्वेष अज्ञाना, जग जीवन हित कारा ॥१॥
सत चित् आनंद रूप स्वरूपी, सिद्ध अचल पद धारा।
जल अग्नि गाले नहीं बाले, छेदे नहीं हथियारा ॥ २ ॥
निर्दोषी अकलंकी प्रभु तुम, सेवक जन मन ठारा।
निर्विकारी मुद्रा शांतिकी, धारी उर भ्रम टारा ॥ ३ ॥
आतम लक्ष्मी तुम सम वल्लभ, पावे हर्ष न पारा।
पारस जिन मंडल गंधारा, आलंबन शुद्ध द्वारा ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

(९) कठोर मंडन श्रीआदिजिन स्तवन ॥

(माढ—चाल—तोरे गमका तराना)

प्रभु आदि जिनंदा, शिव सुख कंदा, तारक दीनदयाल।

करुणा कर स्वामी, अंतर्यामी, शिव गति गामी, तारक ॥
वीतराग जय जय जग गुरुजी, जय जगनाथ जिनंद ।
तुम परभावे प्रभु मुझ होवे, भव निर्वेद अमंद ॥ क० १ ॥
मार्गानुसारिपणा इष्ट सिद्धि, लोक विरुद्धका त्याग ।
पूजा गुरुजन अर्थ पराया, करनेमें अति राग ॥ क० २ ॥
शुभ गुरु जोग वयण तस सेवा, भव पर्यंत अखंड ।
तुमदर्शन का यह फल मांगु, होवे न आतम दंड ॥ क० ३ ॥
कठोर मंडन आप कहावो, पिण नहीं लेश कठोर ।
जो पद तुमरा सो मुझ दीजो, आशा करुं नहीं ओर ॥४॥
नाभिनंदन प्रभु पर दुःख भंजन, मरु देवा के नंद ।
आतम लक्ष्मी हर्ष धरीने, वल्लभ होत आनंद ॥ क० ५ ॥

॥ इति ॥

(१०) श्रीमहावीरस्वामी स्तवन ॥

(चालनाटक—देशी. कानुडा तारी कामण करनारी व्रजमां वांसलडी वागी)

वीरजी तारी पावन करनारी, मनमां आंखलडी लागी ।
मीठी वली सेवक मन हरनारी, मनमां आंखलडी लागी ।
भव भय हरनारी तुम सुणवा, वाणी सुखकारी ।
हुं चाहुं, हुं चाहुं, जिनवर थइने हुशियारी
मनमां आंखलडी लागी ॥ वीरजी० १ ॥
दर्शन नर नारी तुम करवा, आवे शुभ धारी ।
तुं दाता, तुं दाता, शिव सुख थइने शिवचारी
मनमां आंखलडी लागी ॥ वीरजी० २ ॥
अघहर उपकारी प्रभु तुम छो, आतम हितकारी ।

हुं मागुं, हुं मागुं, सुख कर वल्लभ भवपारी
मनमां आंखलडी लागी ॥ वीरजी० ३ ॥

॥ इति ॥

(११) श्रीसामलिया पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(देशी—थई प्रेम वश पातलिया)

प्रभु पास जिन सामलिया,
महा पुण्य उदयथी मलिया रे ॥ प्र० अंचली ॥
रीति अनुपम भव तरवानी, प्रभुजी आप प्रकाशी ।
अज अजर अमर अविनाशी ।
निज आतम गुणथी वलिया रे ॥ प्र० १ ॥
क्रोध अरिने क्षमा खडगथी, जेर कर्यो तमे जडथी ।
गयो थई हलको अति खडथी ।
प्रभु शांत वदन तुम कलिया रे ॥ प्र० २ ॥
मान रिपु मार्दव हथिया रे, माया आर्जव धारी ।
संतोषथी लोभ निवारी ।
नहीं विष्णु सम तमे छलिया रे ॥ प्र० ३ ॥
राग द्वेष प्रतिमल्लने जीती, वीतराग पद लीधुं ।
निज आतम कारज सीधुं ।
जरा जन्म मरण भय टलिया रे ॥ प्रभु० ४ ॥
वामानंदन अंतरजामी, आतमलक्ष्मी दाता ।
वल्लभ हर्षे गुण गाता ।
सहु मनना मनोरथ फलिया रे ॥ प्र० ५ ॥

॥ इति ॥

(१२) बिलीमोरा मंडन श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(देशी—थई प्रेम वश पातलिया)

प्रभु शांति जिन सुखकारी,
तुज मूर्ति मोहनगारी रे ॥ प्रभु० अंचली ॥
कामगवी सुरमणि सुरतरुवर, मनवंछित दातारा।
तुम उससे अति हितकारा।
भवसागर पार उतारी रे ॥ प्रभु० १ ॥
रागद्वेषके चिह्न न दीसे, औरत शस्त्र प्रचारा।
मूर्ति प्रभु तुम अविकारा।
प्रभु वीतराग बलिहारी रे ॥ प्रभु० २ ॥
शांति करी जग नाम लियो शुभ, शांतिनाथ जगस्वामी,
करुं अर्ज प्रभु शिर नामी।
हरो कर्मरोग उपकारी रे ॥ प्रभु० ३ ॥
दुषम कालमें प्रभु तुम मूर्ति, साथ आगम आधारा,
संग निश्चय और व्यवहारा।
स्वच्छंदाचार निवारी रे ॥ प्रभु० ४ ॥
आणा तप जप संयम आणा, आणा समकित जानी।
आणामें ध्यानी ज्ञानी।
करणी शुभ आणाधारी रे ॥ प्रभु० ५ ॥
अचिरानंदन भवभयभंजन, अर्हन् शिवसुख दाया,
वंदन करुं मन वच काया।
टरे मोहरिपु बल भारी रे ॥ प्रभु० ६ ॥
बिलीमोरा मंडन अघ खंडन, शांति शांतिके धामी

करो निजगुण आतमरामी ।
वल्लभ मन हर्ष अपारी रे ॥ प्रभु० ७ ॥

॥ इति ॥

(१३) दम्मणबंदर मंडन श्रीआदि जिन स्तवन ॥

(देशी—वाला वेगे आवोरे)

आदिजिन स्वामी रे, कहुं शिर नामी रे,
प्रभु सुनो विनती हो जी ।
वारी प्रभु तुम जगदीश जिनंद,
वारी प्रभु मरुदेवाको नंद ॥ आदि० अंचली ॥
युगलाधर्म निवारके, शुद्ध किया व्यवहार,
जीव कर्म दुई टारके, रूप लिया निज धार ।
वारी प्रभु सेवत सुर नर इंद ॥ आदि० १ ॥
दुविध धर्म उपदेशके, वरताया जग धर्म ।
मन वच काया साधके, पामे भवि शिवशर्म ।
वारी प्रभु चिद्घन आनंद कंद ॥ आदि० २ ॥
अपने जन तारे सभी, मौन किया हम वार ।
वीतरागमें नवि घटे, निज परको ए विचार ।
वारी प्रभु काटो कलिमल फंद ॥ आदि० ३ ॥
मित्र अनादिके बने, आखिरमें भी एक ।
विचमें छूटा पडगए, तो भी न छोडी टेक ।
वारी प्रभु मुझ मन सागर चंद ॥ आदि० ४ ॥
क्रोधाग्निसे जलरह्यो, छांटो क्षमा जल धार ।

तुम सम शांत बनुं प्रभु, होवे जय जयकार ।
वारी प्रभु दूर होवे कर्मछंद ॥ आदि० ५ ॥
नाभिनंदन निरखियो, दम्मण बंदर आय ।
ऊन नहीं कोई बातकी, मैं मानुं मनमाय ।
वारी प्रभु आतम लक्ष्मी लहंद ॥ आदि० ६ ॥
शशी मुनि ग्रह विधु पोष मा, वदि अष्टमी गुरुवार ।
ओच्छव रंग वधामणां, जय जय मंगलकार ।
वारी प्रभु वल्लभ हर्ष अमंद ॥ आदि० ७ ॥

॥ इति ॥

(१४) बगवाडामंडन श्रीअजितनाथ जिन स्तवन ॥

(देशी—मातामरुदेवानानंद)

तारो श्रीजिन अजित जिनंद,
धारी तुमरा विरुद मैं तुमरे सरणे आयोजी ॥ अं०
तारणतरण कहाओ प्रभुजी, आप तरे सत्यमेव ।
जो तारो नहि सेवकजन तो, तारण किसविध देव ॥ ता०
अजितनाथ प्रभु अजित जिनेश्वर, सेवक अजित करेव ।
जो निजसेवक निजसम न करे, कौन करे तस सेव ॥ ता०
मोहचरटसे नहि जीताया, सत्य अजित तुम नाम ।
मुझमें भी शक्ति प्रभु तुमरी, दृष्टि विन किस काम ॥ ता०
सुखसंपद प्रभु तुम पदकजमें, विलसे मधुकर जेम ।
सेवक तुमगुण मकरंद कारण, रहते निशदिन तेम ॥ ता०
प्रभुपूजन वंदन स्तवनासे, मंगल जय जयकार ।
आतमलक्ष्मी निजगुण पावे, वल्लभ हर्ष अपार ॥ ता० ॥ ५

वगवाडामंडन प्रभु जिनवर, करुं विनती तुम द्वार ।
जो पद तुमचा सो मुझ होवे, जय जय मंगलकार ॥ ता०

॥ इति ॥

(१५) श्रीअरिहंत देवस्तवन ॥

(देशी—मातामरुदेवाकानंद.)

त्राता जगजीवन अरिहंत,
सांभली तारी महिमा मारुं मन ठराणुंजी ॥ अं० ॥
देव विरचिया समवसरण प्रभु, वैठा जगदाधार ।
देव देवी नर नारी सोहे, वैठी पर्षदा वार ॥ त्रा० १ ॥
दोष नहीं दस आठ प्रभुमें, धारे प्रभु गुण वार ।
सकल देवथी संपद न्यारी, वार वार वलिहार ॥ त्रा० २
अतिशय चोत्रीस दीपे प्रभुना, वाणी गुण पणतीस ।
सुर नर नारी तिर्यक् सर्वे, समझे विश्वा वीस ॥ त्रा० ३ ॥
सांभली महिमा श्रवणे प्रभुनी, जोवा नयणे चाह ।
सफल थशे धन्य ते दिन घडि पल, थाशे वहु वाह वाह ॥
शचीपति शचीसंघाते नाचे, राचे गावे गीत ।
दूर टरे भवनाटक ए फल, सम्यग्दृष्टि रीत ॥ त्रा० ५ ॥
हे जिन दीनदयाल प्रभु जग, आतमराम आधार ।
शिवलक्ष्मी दाता प्रभु आयो, वल्लभ हर्ष अपार ॥ त्रा० ६

॥ इति ॥

(१६) बगवाडामंडन श्रीअजितनाथ जिन स्तवन ॥

(देशी–गिरिवर दर्शन विरला पावे.)

तूं मेरे मनमें तूं मेरे दिलमें,
नाम रटूं पल पलमें हो जिनजी ॥ तूं० अं०
अजितनाथ सब भयको जीती,
नाम अजित लियो धार सयलमें ॥ तूं० १ ॥
द्वादश तरणि सम तनु दीपे,
रूप अनुपम भामंडलमें ॥ तूं० २ ॥
अनंतगुणी प्रभु अनंतबली तुम,
आतमरूप न आवे अकलमें ॥ तूं ३ ॥
जब आवे चिद्रूप अकलमें,
वो भी होवे तब तुमरी सकलमें ॥ तूं० ४ ॥
निर्मल शशधर तेजे दिनकर,
अधिक अधिक जिम मेरु अचलमें ॥ तूं० ५ ॥
शांत वदन प्रभु तुम दर्शनसे,
मोद होवे शशी निकसे वादलमें ॥ तूं० ६ ॥
तुम मूर्ति मुझ मन केमेरा,
फोटू सम स्थिर एक विपलमें ॥ तूं० ७ ॥
आतम लक्ष्मी निजगुण पावे,
वल्लभ नरभव हर्ष सफलमें ॥ तूं० ८ ॥
वगवाडामंडन प्रभु नामे,
आनंद मंगल संघ अखिलमें ॥ तूं० ९ ॥

॥ इति ॥

(१७) श्रीगिरनारतीर्थमंडन श्रीनेमिनाथपुष्पांजलि ।

(हरिगीत)

श्री नेमिनाथ जिनन्द दरिसण आप दरिसण जानके,
आयो प्रभो मैं निकट तुमरे आत्मलम्बन मानके ।
होवे न निष्फल आपका जो करे दरिसण आनके,
है भावना अति शुद्ध कारण साथ ही श्रद्धानके ॥ १ ॥
जाने न तुमको आप परका ज्ञान नहि होवे कदा,
वो भूलते जो एक चेतन मात्र ही रटते सदा ।
निरपेक्ष आतम एक नाना सर्वथा नहि हो यदा,
यह सेव्य सेवक भाव कैसे सिद्ध ही होवे तदा ॥ २ ॥
प्रत्यक्ष सेवक मैं बनाहूं आप सेव्य बने सही,
तज पक्षपात विचारते जो सत्य को समझे वही ॥
नय मार्ग दर्शक आपका जो वचन जानत है कही,
बस आपको भी वही उत्तम सेव्य मानत है गही ॥ ३ ॥
चउतीस अतिशय वाणिगुण पणतीसको प्रभु धारता,
गुण बार धारक दोष अठ दश नित्य संग निवारता ॥
इस रूप उत्तम सेव्य सेवा द्रव्य भाव विचारता,
गुण संग जिम गुणवान तिम हो सेव्य सेवक भारता ॥४॥
सुर रत्न तरुवर कुंभ धेनु सांत फल दाता सभी,
पिण सेव्य सेवा जास फलका अंत नहि आता कभी ॥
अर्हन् विभू अज अलख ज्योति सार्व जिन ताता अभी,
जगदीश जगदाधार दीनानाथ गुणगाता न भी ॥ ५ ॥
प्रभु तरण तारण दुख निवारण शरण वत्सल आप हो,

मन पाप नहि संताप नहि तस जास मन तुम जाप हो ॥
तुम नाण दरसण चरण की जस शुद्ध मनमें छाप हो,
क्षय करी कर्म समूह को वो आप सम निष्पाप हो ॥ ६ ॥
गुण रतन आगर दया सागर देव जस मन एक है
तुम नामका है काम उसको जिसे शुद्ध विवेक है ॥
हो ध्येय तुम मैं धरूं ध्याता ध्यान भेद अनेक है,
किस भात चाहे कोई मानो यही मेरी टेक है ॥ ७ ॥
ध्येय ध्याता ध्यान त्रिपुटी एक सम रस पामिए,
मन वचन काया शुद्ध भावे आप को शिर नामिए ॥
पर भाव छंडी स्वभाव मंडि चेतना विसरामिए,
श्री आत्म लक्ष्मी हर्ष वल्लभ पामिए दुख वामिए ॥ ८ ॥
गिरनार मंडन नेमि जिनके चरणमें पुष्पांजली
गुरुवार कार्तिक पूर्णिमाको बनी शुभ पुष्पांजली ॥
सत वीस ऊन हजार दोके सालकी पुष्पांजली,
हो आत्म लक्ष्मी हर्ष वल्लभ संघको पुष्पांजली ॥ ९ ॥

॥ इति ॥

(१८) श्रीशान्तिनाथ जिनस्तवन ॥

(कव्वाली)

न जाने किं गतं भावि, यदि मां त्रास्यसे स्वामिन् !
वदन्ति पण्डिता नित्यं, भवन्तं तारकं स्वामिन्! ध्रुवपदम्
कृता शान्तिस्त्वयाऽऽगत्या-ऽभिधा शान्तिर्धृता तेन ।
तथेदानीमपि शान्तिं, प्रवर्त्तस्वाऽभितः स्वामिन्! न० १
त्वमेवार्हन् जिनो बुद्धो, हरिर्ब्रह्मा शिवोसि यत् ।

गुणैर्जन्येऽभिधाने को, विचारो युज्यते स्वामिन्! न० २
दृशा त्वामेव पश्यामि, नमामि त्वां स्मरामि त्वाम्।
सदा त्वामेव पूजामि, विशेषोक्तेन किं? स्वामिन्! न० ३
विभो! चित्तेप्सितं दाने, फलं दातारमेव त्वाम्।
सुरद्रुभ्योऽधिकं जाने, वदामि नानृतं स्वामिन्! न० ४
निजात्मानन्दसम्पत्कृत्, जहि दुःखं सुखं देहि।
प्रभो! त्वं वल्लभो नृणा—मिति याचेऽनिशं स्वामिन्! न०

॥ इति ॥

(१९) गजल-ताल कव्वाली—(चाल नाटक-आसकतो होरहाहूं)

देवस्त्वमेव भगवन् ज्ञातं मयेति सम्यक्।
अन्यो न त्वत्समानो ज्ञातं मयेति सम्यक् ॥ देव० १ ॥
रागादिदोषरहितो महितो नरामरेन्द्रैः।
देवाधिदेव त्वत्तो देवोस्ति नैव सम्यक् ॥ देव० २ ॥
स्याद्वादी त्वं नयज्ञो नयवादयुक्तवचनैः।
ब्रूषे पदार्थसार्थं ज्ञातं मयेति सम्यक् ॥ देव० ३ ॥
वस्तु कथञ्चिदस्ति नास्ति कथञ्चिदेवम्।
नित्यं तथा ह्यनित्यं गदितं त्वयेति सम्यक् ॥ देव० ४ ॥
क्रोधाग्निनातिदग्धं मानाहिनातिजग्धं।
बद्धं हि नाथ माया—जालेन हंत सम्यक् ॥ देव० ५ ॥
लोभाब्धिमग्नमाधि—व्याधिभिः पीडितं माम्।
जानासि किं ब्रुवेऽहं पाहि जिनेश सम्यक् ॥ देव० ६ ॥
मत्तेभसिंहदलने शूरा न मारहनने।
कन्दर्पदर्पहरणे शूरस्त्वमेव सम्यक् ॥ देव० ७ ॥

आत्मानमात्मना सह साम्यं कुरु ममार्हन् ।
देह्यात्मलक्ष्मीहर्षं वल्लभदेव सम्यक् ॥ देव० ८ ॥

॥ इति ॥

(२०) (गजल-ताल कव्वाली-चाल नाटक-आसकतो होरहाहूं)

करुणासुधाभिभरितं चरितं हि तावकीनम् । करुणा०
ज्ञानेन्द्राविलासिन् त्यक्तेन्द्रिरेण स्वामिन् ।
कुर्वात्मरूपगामिन् मम रूपमात्मनीनम् ॥ करुणा० १ ॥
बद्धोस्मि मोहजाले महादुःखदे कराले
मिलितोसि नाथ काले कुरु बन्धनैर्विहीनम् ॥ करुणा०
विषयेषु जानुदघ्नं दीनं सदा हि मग्नम्
अधुना तवांघ्रिलग्नं कुरु नाथ मामदीनम् ॥ करुणा० ३
धेहि कृपां कृपालो देहि सुखं दयालो ।
नाशं प्रयातु कालो दृष्टान्धकार इनम् ॥ करुणा० ४ ॥
वल्लभदेवचरणे हर्षात्मलक्ष्मीकरणे
हर्तु स्वजन्ममरणे मन एव मेऽतिलीनम् ॥ करुणा० ५॥

॥ इति ॥

(२१) श्रीगिरनारतीर्थ मंडन श्रीनेमिनाथजिन स्तवन ।

(कव्वाली)

प्रभु श्रीनेमि जिन दर्शन, हुए आनंद जयकारी ॥ प्र० ॥
प्रभु तुम दर्शसे मानूं, सफलता नयन दो धारी ।
अगर होवे न तुम दर्शन, नयन दोनों न सुखकारी ॥ प्र० १
विवेकी बन ग्रही दीक्षा, किया संग त्याग संसारी ।
वही विवेक मुझ दीजे, बनूं मैं भी चरण धारी ॥ प्र० २ ॥

वने निर्वलसे अति सवले, ललित चारित्रको पारी ।
अवस्था मैं भी वो चाहूं, दियो तुम पै जाऊं वारी ॥ प्र० ३
कियो आतम सोहन ध्याने, करम घाती टरे चारी ।
ऐसे शुभ ध्यान शोधन को, मुझे दीजे हो ब्रह्मचारी ॥ प्र० ४
विमल चैतन्य के प्रगटे, हुओ ब्रह्मज्ञान उजियारी ।
विमल चैतन्य मैं चाहूं, करो उपकार उपकारी ॥ प्र० ५ ॥
प्रभु विज्ञान के वलसे, परा विद्या को विस्तारी ।
यही विचार तुम सरना, लिया मैं धार हितकारी ॥ प्र० ६
विचक्षण नाथ तैं राजुल, तजी मुक्ति वरी नारी ।
विचक्षण करके सेवकको, भवोदधिसे करो पारी ॥ प्र० ७ ॥
विलासी आत्म लक्ष्मीके, प्रभु आतम गुण धारी ।
यही विलास मुझ को भी, करो वक्षीस दातारी ॥ प्र० ८ ॥
चरण दीक्षा अरु मुक्ति, भए तीनो ही गिरनारी ।
यही तीनो जो वल्लभको, मिले हो हर्ष नहीं पारी ॥ प्र० ९ ॥
सहस दो कम सताईसे, चैत्र द्वादशी सुदि सारी ।
कियो वल्लभ प्रभु दर्शन, हुओ आनंद शनिवारी ॥ प्र० १०

॥ इति ॥

(२२) श्रीगिरनारतीर्थमंडन श्रीनेमिनाथजिन स्तवन ।

वरवा–ताल कहेरवा (चाल नाटक–मजा देते हैं क्या यार)

अर्ज है हेप्रभु नेमिनाथ, भवजल पार लगानेवाले, अं० ॥
प्रभु तारणतरण जहाज, सव देवनके सिरताज ।
करो सेवक वंछित काज, प्रभु शिवमार्ग वतानेवाले–प्र० ॥

धरि मनमें प्रभु तुम आस, मैं दास आया तुम पास।
करो दुःख दोहग सब नास, प्रभु पशुगणके बचानेवाले–प्र०
किया पुण्य पापका विवेक, लिया धार वचन प्रभु एक।
रही जगमें उनकी टेक, ललित प्रभुके गुण गानेवाले–प्र० ३
बन पंडित सोहन ध्यान, किया त्यागके निज अभिमान।
लिया विमलातम शुभ ज्ञान, प्रभु मुक्तिके पानेवाले–प्र० ४
मेहके कस्तूरी अमान, मन चंग उमंग विज्ञान।
आवे समवसरण मैदान, विबुध प्रभु पूजा करानेवाले–प्र० ५
जग भाल तिलक भगवान, नमे विद्याधर तजी मान।
विचार विचक्षण जान, मित्र सम तमको हटानेवाले–प्र० ६
संसार समुद्र वहाण, करुणा सागर गुणखाण।
प्रभु अंग वसंत प्रमाण, भवी मुक्तिके जाने वाले ॥ प्र० ७
चिदघन आनंद विलास, निज आत्म प्रभाके विकास।
मिटे जन्ममरण भय त्रास, प्रभु प्रभुता पद पानेवाले–प्र० ८
प्रभु आतम लक्ष्मी नाथ, करो वल्लभ हर्ष सनाथ।
लिया पकड प्रभु तुम हाथ, प्रभु भव भ्रमण मिटानेवाले ९

॥ इति ॥

(२३) श्रीसिद्धाचलतीर्थ स्तवन ॥

(देशी–थई प्रेमवस पातलिया)

प्रभु आदिजिन महाराया, तुम चरणसरणमें आयारे प्र० अं०
विमलाचल मंडन जगस्वामी, नामी अंतर्यामी।
निजगुणगण आतमरामी, मनवंछित शुभफल दायारे ॥ प्र०

आप प्रतापे तीरथ राजे, तीर्थ तीर्थशिर ताजे ।
आप तीरथ करवा काजे, प्रभु पूर्व नवाणुं आयारे ॥ प्र० २
यात्रु देश विदेशसे आवे, भावे पाप खपावे ।
निश्चय मुक्ति वो जावे, इम तुम आगममें गायारे ॥ प्र० ३
जो इस तीरथपर भवि आया, सोहन ध्यान लगाया ।
विमलातमपद निपजाया, विमलाचल तीर्थ कहायारे ॥ प्र०
कस्तूरी केसर कर्पूरे, विबुधपति मिल पूजे ।
महामोहरिपु अति धूजे, शत्रुंजय ध्यान लगायारे ॥ प्र० ५
विद्याधर विचक्षण आके, मित्र सहित प्रभु सेवे ।
अजरामर शिवपद लेवे, संसार समुद्र मिटायारे ॥ प्र० ६ ॥
ऋतु वसंतमें जिम तरु फूले, लोक विलासमें झूले ।
तिम प्रभुदर्शन अनुकूले, महापुण्य उदय भवि पायारे ॥ प्र०
आतम लक्ष्मी तुम दरबारे, लेवा हर्षे आयो ।
वल्लभ प्रभुदर्शन पायो, करो निजसम आतमरायारे–प्र० ८
करे युगे वेदे नयन वीराब्दे, दश साधुके लारे ।
फाल्गुन कृष्णाष्टमी वारे, शनि वल्लभ दर्शन पायारे–प्र० ९

॥ इति ॥

(२४) श्रीसिद्धाचलतीर्थस्तवन ॥

(गजल–कव्वाली–चाल–आसक तो होरहाहूं)

प्रभु आदिनाथ स्वामी, तुम चर्ण सीस नामी प्र० अंचली ॥
देवाधिदेव तुम हो, निर्दोष देव तुम हो ।
तारक देव तुम हो, तुमरे ही गुण मैं गाउं ॥ प्र० १ ॥

मंडन तीर्थ तुम ही, तीरथ नाथ तुम ही ।
दीनाके नाथ तुम ही, सेवक मैं तुम कहाउं ॥ प्र० २ ॥
पूरव नवाणु आया, रायण वृक्ष छाया ।
देखत तुमरे पाया, परतख मैं मनाउं ॥ प्र० ३ ॥
प्रणमे वो धन्य काया, गुण गावे धन्य जीहा ।
मन धन्य जिसमें तुमरा, शुभ ध्यान मैं लगाउं ॥ ४ ॥
सर मान हंस चाहे, चातक मेघ पानी ।
जगनाथ ऐसे हरदम, तुमरी सरण मैं आउं ॥ प्र० ५ ॥
मोहनमूर्त्ति तारी, मुझ मनमें आ खडी हो ।
दृष्टि वहां पडी हो, नहीं बौर जन्म पाउं ॥ प्र० ६ ॥
आतमलक्ष्मी स्वामी, आतमलक्ष्मी दीजे ।
वल्लभ हर्ष होवे, नहीं और तुमसे चाउं ॥ प्र० ७ ॥

॥ इति ॥

(२५) श्रीसिद्धाचलजी तीर्थस्तवन ॥

(चाल-इतनासंदेशा मोरारे)

गिरिराज दर्श पावेरे, जग पुन्यवंत प्राणी ।
नहीं और कोई जगमें, तीरथ इसके सानी ॥ गि० १ ॥
यात्रा करे जे भावेरे, तीर्यंक नरक न थावे ।
शुभ देवनरगति पावे, आखीर मोक्ष जावे ॥ गि० २ ॥
सिद्धि मुनि अनंतारे, करी जन्म मरण अंता ।
हुए सिद्ध सादि अनंता, सिद्धाचल ध्यान धरंता ॥ गि० ३ ॥
प्रभु आदिनाथ राजेरे, सन्मुख गणधर साजे ।
गणधर पुंडरीक काजे, गिरिनाम पुंडरिक वाजे ॥ गि० ४ ॥

धन्य धन्य पुंडरिक स्वामीरे, मशहूर नेकनामी ।
गुरुतुल्य मुद्रा पामी, राखी नहीं कुछ खामी ॥ गि० ५ ॥
सेवा गुरु फल लेवारे, कीनी तुमे गुरु सेवा ।
सेवक करे तुम सेवा, दीजो निज सम फल मेवा ॥ गि० ६ ॥
आतम आनंद कारीरे, प्रभु तुमरी जाउं बलिहारी ।
चिदलक्ष्मी हर्षधारी, वल्लभ मांगे भव पारी ॥ गि० ७ ॥

॥ इति ॥

(२६) स्तवन ॥

(देशी—प्यारे मोहनीया निभाना होगा)

प्रभु मोहे अपना मनाना होगा,
मनाना होगा बनाना होगा ॥ प्र० अंचली ॥
शरणागतवत्सल मैं आयाहुं सरणे,
सेवक जानी निभाना होगा ॥ प्र० १ ॥
सरणा न तुम विन मोहे किसीका,
अब तो अपना कहाना होगा ॥ प्र० २ ॥
जला रहाहै मोहे क्रोध दावानल,
क्षमावर्षासे बुझाना होगा ॥ प्र० ३ ॥
मान अहि मोहे खाय रहाहै,
नम्रता देके बचाना होगा ॥ प्र० ४ ॥
माया प्रपंच मोहे उलझा रहाहै,
देके सरलता छुडाना होगा ॥ प्र० ५ ॥
लोभ सागरमें मैं डूब रहाहूं,
संतोष नावा तरना होगा ॥ प्र० ६ ॥

काम सुभट मेरे पीछे लगा है,
दे ब्रह्मचर्य हटाना होगा ॥ प्र० ७ ॥
ज्ञाताके आगे अधिक क्या कहना,
आखिर पार लगाना होगा ॥ प्र० ८ ॥
आतम लक्ष्मी सहर्ष मनाया,
वल्लभ अपना बनाना होगा ॥ प्र० ९ ॥

॥ इति ॥

(२७) श्रीजुनागढमंडन श्रीमहावीरस्वामीस्तवन ।

(सुणो चंदाजी सीमंधर परमातम पासे जाजो–देशी)

प्रभुवीर जिनंद विनतडी सेवक की मन अवधारिये ।
करि याद विरुद सेवकको भवोदधिसे पार उतारिये । प्र० ।
प्रभु तारण तरण कहाते हो, सुरनर किन्नरसे गवाते हो,
सेवकजन मनको भाते हो ॥ प्र० १ ॥
करुणासागर अंतरजामी, सत चिद आनंद आतमरामी,
करुं विनती प्रभु मैं शिर नामी ॥ प्र० २ ॥
जिने दीना दुःख प्रभु आप अति,
उनें दीना सुख तुमे दे सुमति,
मैं तो सेवक तुमरा नाथ यति ॥ प्र० ३ ॥
हरि काम करी हरि नाम धर्यो,
हरि तिसकारण तुम पांव पर्यो,
सेवक देखी मन मोद भर्यो ॥ प्र० ४ ॥
त्रिशला नंदन वंदन ज्ञानी,

करी सेवा तरे भव भवि प्रानी,
धरी शील वनी तपसी दानी ॥ प्र० ५ ॥
आतम लक्ष्मी निजपददाता, जूनागढ मंडन जगत्राता ।
हर्षे वल्लभ प्रभु गुण गाता ॥ प्र० ६ ॥

॥ इति ॥

(२८) श्रीपार्श्वनाथजिनस्तवन ॥

(खमाच–मान मद मनसे परिहरना ।)

प्रार्श्व प्रभु दिलमें नित्य धरिए,
छोर कुमति कुपंथ पार्श्वप्रभु दिलमें नित्य धरिए ॥ अंचलि ॥
धन्य जन्म धन्य वर्ष मास धन्य, धन्य दिवस घरि ए ।
पार्श्व प्रभुको दिदार सार, निर्मल नेत्रें करिए ॥ छोर० १ ॥
धन्य प्रभु गुण ग्राम करे वो, जिह्वा मुख धरिए ।
काया निर्मल चित्त शुद्ध, चरणी प्रभुके परिए ॥ छोर० २
तेइसमा प्रभु पार्श्व जिनेश्वर, तेइस परिहरिए ।
तेइस धार सुधार निजातम, पारस गुण वरिए ॥ छोर० ३
नयन सुधारस मेघ वरसता, मन देखी ठरिए ।
कर्म उपाधि शांत करणको, शांतको अनुसरिए ॥ छोर० ४
आतम लक्ष्मी प्रभुता प्रगटे, हर्ष धरी तरिए ।
पास दास कटो पास आस, वल्लभ पूरण करिए ॥ छोर० ५

॥ इति ॥

(२९) श्रीपार्श्वनाथजिन स्तवन ॥

(लेलि लेलि पुकारे वनमें ए चाल)

प्रभु पार्श्वनाथ जगस्वामी, घटघटके अंतरजामी ।
करूं विनती मस्तक नामी, सुनो जगजीवन विसरामी । प्र० १

तुम विन नहीं जग कोई मेरा, मोंहे आसरा हरदम तेरा।
कीजे करुणानजर एकवेरा, मिटे जनम मरण जगफेरा। प्र०२
[1]कांति अदभुत वल्लभ थारी, देखी चतुर लहे लाभ भारी।
सोहन मुखमुद्रा प्रभु प्यारी, होवे निरखी विमल नरनारी ३
कस्तूरी प्रभुपूजन अंगे, भवी माने सस्ती उमंगे।
प्रभु मेघध्वनिसम गाजे, विज्ञान अनंता विराजे ॥ प्र० ४॥
जिन विद्या विचार न पारा, सुरनरगणपति सब हारा।
पुण्यवान परमपद पावे, भावे करुणासमुद्रको ध्यावे। प्र०५
प्रभु सागरवरगंभीरा, कंचनगिरिसम अतिधीरा।
बनी आतमकारज कीना, निजरूप चिदानंद चीना॥ प्र०६॥
मुंबइ सन एक[1] नव[1] सत[7] चारा[4], कार्तिकसुदि पूनम बुधवारा।
आतमलक्ष्मी प्रभुका दीदारा, किया वल्लभ हर्ष अपारा। प्र०७

(३०) मुंबई चैत्यपरिपाटी स्तवन ॥

(जंगलो–महावीर तोरे समवसरणकीरे–चाल)

जिनंदा तोरे चरणकमलकीरे, सेवा भवपारउतारी,
करे द्रव्यभाव नरनारी, साधु भावे अधिकारी
जिनंदा तोरे चरण कमलकीरे ॥ अंचली ॥
[2]गोडीपारस ध्याउंरे, महावीर गुण गाउंरे।

---

१ इसमें संवत् १९७४ बम्बई शहरमें चतुर्मास रहे साधुओंके नाम प्रकारान्तरसे दिखाएहैं।

२ मुंबई शहरके घरदेहरासरविनाके वडे सतारां मंदिरके मूलनायकका नाम वडे अक्षरोंमें समझना।

आदिजिन अंतरजामी, शांतिप्रभु शांतिधामी,
नमिनाथ जिनेश्वर स्वामी ॥ जिनंदा ॥ १ ॥
पांच जिनमंदिररे, पायधोनी उपररे ।
एक चाल गोडीजी सामे, चिंतामणिपारस नामे,
सेवक मनवंछित पामे ॥ जिनंदा २ ॥
लालवाग साराऱे, पासचिंतामणि प्याराऱे ।
वालकेश्वर आदिजिनंदा, गोडीपारस जिनचंदा,
सुपार्श्वनाथ सुखकंदा ॥ जिनंदा ३ ॥
शांतिप्रभु सोहेरे, कोलावे मन मोहेरे, ।
है मंदिर कोटमें भारी, शांतिप्रभु शांतिकारी,
दुःख दोहग दूर निवारी ॥ जिनंदा ४ ॥
महावीर प्रभु राजेरे, वाजार झवेरी गाजेरे ।
पासे पारसजिन मंदिर, दो मंदिर मांडवीवंदर,
अनंत आदिजिन सुंदर ॥ जिनंदा० ५ ॥
भांयखले वालोरे, आदिनाथ भालोरे ।
प्रभुदर्शनकी वलिहारि, आतमलक्ष्मी दातारी,
वल्लभ मन हर्ष अपारी ॥ जिनंदा ६ ॥
कांतिविजय मुनिरायारे, प्रवर्त्तकपद दीपायारे ।
यात्रा मुंवइकी सारी, साधु दोय दस और चारी,
पायो अति आनंद भारी ॥ जिनंदा ७ ॥
संवत दो हजारारे, छवीस कम धारारे ।
कार्तिक पूनम वुधवारा, शत्रुंजय पटको जुहारा,
जिनशासन जग जयकारा ॥ जिनंदा ८ ॥

(३१) मुंबई यात्रा पचीसी

(लावणी—देशी—ऋषभजिनंद विमलगिरि)

तीर्थंकर गुणगान करणसे, निज आतम उद्धारारे ।
उत्कृष्टा परिणाम बढे शुभ, तीर्थंकरपद धारारे । अंचली
दर्शन प्रभुका दर्शनशुद्धि, कारण साधन सारारे ।
जिनदर्शन निज आतमदर्शन, आवागमन निवारारे । ती० १
सुंदर मुंबइ बंदर अंदर, जिनमंदर हैं सतारारे ।
मूलनायकके नामसे वर्णन, संक्षेपे हितकारारे ॥ ती० २ ॥
पायधोनीके उपर सोहे, मंदर पांच उदारारे ।
श्रीगोडीपारस जिनदर्शन, सम्यग दर्शन कारारे ॥ ती०३॥
सामला पारसनाथ साथमें, भवजल पार उतारारे ।
पांच प्रमाद निवारण नमीए, ऊपर पांच गभारारे ॥ ती०४॥
त्रिशलानंदन वीर प्रभुजी, शासनके सरदारारे ।
दूसरे मंदर नमिये भावे, वर्धमान सुखकारारे ॥ ती० ५ ॥
तीसरे मंदर प्रथम जिनेश्वर, ऋषभदेव प्रभु प्यारारे ।
ऊपर दोय गभारा भावे, नमिए आनंद कारारे ॥ ती० ६ ॥
शांतिनाथ प्रभु शांतिकर्त्ता, चौथे मंदर धारारे ।
ऊपर श्रेणीबद्ध जिनेश्वर, नमिए आनंद भारारे ॥ ती०७॥
इक्कीसमा नमिनाथ जिनेश्वर, भवदुःख भंजनहारारे ।
ऊपर एक गभारे प्रभुजी, पंचमीगति दातारारे ॥ ती० ८॥
गोडीजीकी चालके सामे, गुलालवाडी मझारारे ।
चिंतामणि पारस पारसमणि, आनंद मंगलकारारे ॥ ती० ९॥

सिद्धगिरि अष्टापद आबूजी, समेतशिखर गिरनारारे ।
काम नकाशी सुंदर ऊपर, चोमुख प्रतिमा चारारे ॥ ती० १०॥
माधोबागके पास प्रभुजी, लालबाग मनोहारारे ।
श्रीचिंतामणि पार्श्वजिनेश्वर, दर्शनसें अघ जारारे । ती ११ ।
चमक दमक बाजार झवेरी, जिनमंदर दो उदारारे ।
गोडीपार्श्वजिन नाथ सुहंकर, सेवे नर और नारारे । ती १२
दूजे मंदर महावीर स्वामी, सावण छठ बुधवारारे ।
कांतिविजय प्रवर्त्तकहाथे, वास प्रतिष्ठा धारारे । ती १३ ।
मांडवी बंदर दो जिनमंदर, कच्छीदशा ओसवारारे ।
अनंतनाथ जिन नमिए भावे, अंत होवे संसारारे । ती १४।
सुंदर सिद्ध घर रचना सोहे, उपर तीन गभारारे ।
मन वच काया दर्शन करिए, नीचे ज्ञान भंडारारे ।ती १५।
कच्छी वीसा मंदर दूजा, आदिजिनंद जयकारारे ।
एक गभारा उपर जिनवर, दर्शन दुख हरनारारे । ती १६।
चलना संमलकर कोटमें प्यारे, वस्तु विविध प्रकारारे ।
देखना बचना ट्राम मोटरसे, बग्घी और खटारारे । ती १७।
अचिरानंदन शांति जिनेश्वर, शांति जगत करनारारे ।
वंदो उपर वीर पारस जिन, आदि सब परिवारारे ।ती १८।
कोलावे शांतिजिन दर्शन, टारे मदन विकारारे ।
द्रव्यसमुद्र किनारा देखी, भावसमुद्र विचारारे ॥ ती १९ ॥
उलंघी बाजार अनेके, वालकेश्वरका किनारारे ।
नाथ सुपारस सप्तम जिनवर; दर्शन सत भय टारारे ।ती२०।

तीनवत्तीके पासे दूजा, बाबू मंदर सारारे ।
आदिनाथ प्रभु वंदी उपर, पारस आदि जुहारारे । ती २१ ।
समुद्रकिनारे तीसरा मंदिर, पन्नालाल चमकारारे ।
श्रीगोडीपारस जिन दर्शन, जगजीवन आधारारे । ती २२ ।
भांयखले मंदर अति सुंदर, टुंक शत्रुंजय धारारे ।
मूलनायक आदिजिन सन्मुख,अजितनाथ गुणधारारे ती२३
प्रदक्षिणामें रायण नीचे, ऋषभ चरण मनोहारारे ।
वंदो भावे यात्रा पचीसी, मुंबइ हर्ष अपारारे ॥ ती २४ ॥
वेद मुनि निधि इंदु वर्षे, कांतिविजय सरदारारे ।
आतम लक्ष्मी हर्षे वल्लभ, जिनशासन जयकारारे । ती २५ ।

॥ इति ॥

(३२) श्रीशंखेश्वरपार्श्वनाथ जिनस्तवन ॥

(चिंतामणिस्वामीरे-देशी)

संखेसर स्वामीरे पार्श्व प्रभु नामीरे
भावे करुं वंदना होजी ।
पारस प्रभु वंदे सुरनर पाय,
पारस प्रभु सेवे शिवसुख थाय-संखेसर-अंचलि ॥
काशी देश बनारसी, राजा श्री अश्वसेन ।
वामा राणी पतिव्रता, विलसे सुख दिन रेन ।
पारस प्रभु पुरिसादानी कहाय-सं० १ ॥
दश अवतारी पासजी, जन्मे दशमी पोष ।
वदि दश दिशि उत्सव हुओ, घर घर अति संतोष ।
पारस प्रभु नाम दियो माय ताय-सं० २ ॥

दश भवको वैरि बन्यो, योगी कमठको जीव ।
पंचाग्नि तप तापता, करता कष्ट सदीव ।
पारस प्रभु नगरके वाहिर आय–सं० ३ ॥
नगर वनारसकी प्रजा, तापस वंदन काज ।
विध विध सामग्री ग्रही, जाता देख समाज ।
पारस प्रभु नोकर पूछे बुलाय–सं० ४ ॥
जानके अवधिज्ञानसे, परजीवन उपकार ।
देखनके मिस आइया, श्री श्रीपार्श्व कुमार ।
पारस प्रभु वोले तपसी सुनाय–सं० ५ ॥
कष्ट क्रिया विन ज्ञानके, कष्ट मात्र फल देत ।
विन जाने नहीं वीजते, वीज कृषिजन खेत ।
पारस प्रभु जोगी कहे सकषाय–सं० ६ ॥
तुम क्या जानो धर्मको, सुन हो राज कुमार ।
क्या जाने विधि योगकी, अश्व खेलावनहार ।
पारस प्रभु शांति धरी वदे वाय–सं० ७ ॥
दया धर्मको मूल है, तुझ तपमें नहीं सोय ।
जलते तुझ इस काष्टमें, नाग दुःखी है जोय ।
पारस प्रभु दीना काष्ठ फडाय–सं० ८ ॥
नाग निकाला तडफता, दिया मंत्र नवकार ।
चमत्कार देखी भणे, जग पारस जयकार ।
पारस प्रभु धरणींद्र नाग वनाय–सं० ९ ॥
कमठ तपी अज्ञान तप, मेघमाली हुओ देव ।
छूटी नहीं मिथ्यात्वसे, अज्ञानीकी टेव ।

पारस प्रभु साथे वैर वधाय–सं० १० ॥
दान देइ वरसी प्रभु, त्यागन कर संसार ।
आतम लक्ष्मी कारणे, लीनो संयम धार ।
पारस प्रभु वल्लभ हर्ष मनाय–सं० ११ ॥

॥ द्वितीय विभाग–ढाळ दूसरी ॥
(देशी–बलिहारी बलिहारी)

बलिहारी हितकारी उपकारी जगनाथ हो सुखकारी
पारस प्रभु दर्शन आनंद पामिएजी । अंचली ॥
चरण करण साधी, आधी न व्याधि उपाधि ।
विचरता निर्मम निरहंकारी–जगनाथ० १ ॥
ध्यानमें खडे ध्यानी, आयो कमठ मानी ।
दिए उपसर्ग विविध प्रकारी–जगनाथ० २ ॥
मुसलधार वर्षे, विजली चमकारे हर्षे ।
गर्जता आया पूर भारी–जगनाथ० ३ ॥
थीर मेरु सम धीर, नासा तक आयो नीर ।
धरणींद्र आयो आसन चारी–जगनाथ० ४ ॥
नागका रूप करी, छत्र फणासे धरी ।
कमल चरण नीचे धारी–जगनाथ० ५ ॥
कमठ भगायो मारी, शरणागत माया हारी ।
माफ कसूर करो मारी–जगनाथ० ६ ॥
स्वामी अपराध वामी, मिथ्या समकित पामी ।
तारो उपकारी मुझ अपकारी–जगनाथ० ७ ॥
कमठे तकलीफ दीनी, धरणींद्रे भक्ति किनी ।
नाथ दोनों पर समता वारी–जगनाथ० ८ ॥

दोनों सधाम गए, प्रभु विहारी भए।
क्रमसे खपाए घाति चारी–जगनाथ० ९ ॥
केवल ज्ञानी दरसी, आतम रूप फरसी।
उपदेशी कियो तीर्थ जारी–जगनाथ० १० ॥
अष्ट करम नासी, अष्टमी गति वासी।
अष्टमी सुदि सावण सारी–जगनाथ० ११ ॥
पूरव काल मानो, श्रावक आषाढी जानो।
पूछे दामोदर जिन अवतारी–जगनाथ० १२ ॥
होगी मुझ मुक्ति कब, कहे तीर्थंकर तब।
होगा तूं पारस जिन गणधारी–जगनाथ० १३ ॥
चित्त उल्लसियो सुणी, वंदी घर गयो थूणी।
विंब भरायो पारस भारी–जगनाथ० १४ ॥
कृष्णे धरणींद्र साधी, पडिमा पारस लाधी।
जरा विद्या दी दूर निवारी–जगनाथ० १५ ॥
शंखेश्वर कृष्ण नाम, तास पारस स्वाम।
शंखेश्वर पार्श्व नाम धारी–जगनाथ० १६ ॥
उन्नीसो चहुत्तर वर्षे, आतम लक्ष्मी हर्षे।
मांगे वल्लभ भवजल पारी–जगनाथ० १७ ॥

॥ इति ॥

(३३) श्रीगोडी पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(देशी–वलिहारी की)

हितकारी सुखकारी दुःखहारी प्रभुपार्श्व अंतर्यामी
करुणाकर करुणा सेवक कीजिएजी ॥ अंचलि ॥

गोडी पारस जिन, सेवुं मैं रातदिन ।
सरणा तुमरा मैं लिया धारी-प्रभुपार्श्व० १ ॥
पास रहित पास, पासमें मेरो वास ।
पास कटो अब पास म्हारी-प्रभुपार्श्व० २ ॥
प्रभु निरागी रागी, सेवक तुम वडभागी ।
अपना कहेकी लाज भारी-प्रभुपार्श्व० ३ ॥
आस धरी मैं वास, कीनो है तुमरे पास ।
पूरण करो आस सारी-प्रभुपार्श्व० ४ ॥
रूप प्रभु जो आप, वोही है मेरो बाप ।
अपनासा कीजे बाल धारी-प्रभुपार्श्व० ५ ॥
दृष्टि सुधारस वर्षे, आतम लक्ष्मी हर्षे ।
वल्लभ होवे जय जय कारी-प्रभुपार्श्व० ६ ॥

॥ इति ॥

(२४) मुंबई पायधोनी मंडन श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(चाल-देखोरे मुनींदा प्यारा)

सेवोरे जिनंदा प्यारा, प्रभु श्रीशांति जिनंद-सेवो० अचली
विश्वसेन अचिराजीके नंदा, गजपुर नयरी नरिंद-से०१॥
चक्रवर्ती प्रभु पंचम कहिए, सोलमा शांति जिनंद-से०२॥
अवसर दान संवत्सरी दीनो, लीनो मुनिपद छंद-से०३॥
तीरथ थापी कर्म खपावी, होए सिद्ध आनंद-से० ४ ॥
शांतिनाथ जग शांतिकारी, टारे कलिमल फंद-से० ५ ॥
पायधोनी प्रभुमुद्रा सोहे, भवि चकोर मन चंद-से० ६ ॥

मन वच काया शुद्ध आराधे, नर नारीको वृंद–से० ७ ॥
आतम लक्ष्मी निज गुण प्रगटे, वल्लभ हर्ष अमंद–से० ८॥
॥ इति ॥

(३५) करचलिया मंडन श्रीसंभवनाथ जिन स्तवन ॥

(मल्लि जिन नाथजी व्रत लीजेरे–देशी)

संभव जिन नाथ जी सुख कारी रे,
करे दर्शन धन्य नर नारी संभव० अंचली ॥
नृप जितारी कुल चंदारे, माता सेना राणीना नंदारे,
सेवे सुर नर मुनि पति वृंदा–संभव० ॥ १ ॥
प्रभु चोत्रीस अतिशय धारी रे, गुण पांत्रीस वाणी सारीरे,
दिये दोष अढार निवारी–संभव० ॥ २ ॥
प्रभु रागी नही ने हुं रागी रे, मारी पाछल माया लागी रे,
तुम दर्शन थी मति जागी–संभव० ॥ ३ ॥
नरभव सामग्री पामी रे, पाम्यो दर्शन पुण्ये स्वामी रे,
करुं विनती प्रभु शिर नामी–संभव० ॥ ४ ॥
हवे रागी थयो तुम केरो रे, हुं छुं तुम चरणांनो चेरो रे,
मारो टालो प्रभु भव फेरो–संभव० ॥ ५ ॥
तमे परमातम पद लीधुं रे, निज आतम कारज कीधुं रे,
चित्त में पण तेमां छे दीधुं–संभव० ॥ ६ ॥
प्रभु संभवनाथजी मलियारे, दुःखरोग सोग सहु टलियारे,
मारा मनना मनोरथ फलिया–संभव० ॥ ७ ॥
ओगणीसो इकोतेर सारा रे, सुदि वैशाख छठ गुरुवारारे,
थयो करचलिया जयकारा–संभव० ॥ ८ ॥

प्रभु दर्शन आनंद कारीरे, आतम लक्ष्मी उर धारी रे,
मांगे हर्ष वल्लभ भव पारी—संभव० ॥ ९ ॥

॥ इति ॥

(३६) झगडीया तीर्थमंडन श्रीआदिजिनस्तवन ॥
(गरबो—देशी—पूनमचांदनी खीली पूरी अहींरे ।)

आदिनाथ जिनेसर सेवक पार उतारनारे ।
अपना तारण तरण विरुद सदा संभारनारे ॥ अं० ॥
युगला धर्म निवारियो, द्रव्य थकी प्रभु आप ।
वैसे भाव निवारिए; चेतन जड संताप ।
फिर नहीं अंतर कोई हम तुम रत्ती भारनारे—आ० १॥
कर्मउपाधि छोडके, हम तुम एक स्वरूप ।
द्रव्यार्थिक शुद्ध नय करी, चेतन शुद्ध स्वरूप ।
कर्म उपाधि कारण चरना उचरना विचारनारे—आ० २
राम रमे निजरूपमें, रहम करे सो रहीम ।
पारस परसे रूपको, इस विध नाम असीम ।
इक इक गुणको लेकर नाम अनामी धारनारे—आ० ३
सोहं तत्त्वमसि विभू, पाक अनलहक जात ।
एक अनेक जिनेसरु, शाश्वत सिद्ध अजात ।
पाना तुझ आलंबन रूप निजातम यारनारे—आ० ॥४॥
तीर्थ झगडीया मंडनो, खंडन जग जंजाल ।
नंदन नाभिरायको, मरुदेवाको लाल ।
आतम लक्ष्मी हर्ष वल्लभ आतम वारनारे—आ० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

(३७) वेरावल वंदर मंडन श्रीसुमतिनाथ जिनस्तवंन ॥

(लावणी–मराठी)

सुमति नाथ प्रभु सुमति दाता, त्राता सुमति प्रानी रे ।
गाता सुमति ज्ञानी वानी, सुमति मनमें आनी रे–सु० १॥
सुमति मारग सेवन करके, कुमति मार्ग परिहरता रे ।
कुगति दूर हरी भवि प्रानी, सुगतिमें पग धरता रे–सु० २
सुमतिनाथ पंचम प्रभु भजके, पंचाश्रवको तजता रे ।
संवर पांचको धारी मारग, पंचम गतिका सजता रे–सु० ३
भावे पंचम प्रभुको नमके, पांच प्रमादको वमता रे ।
पांच महाव्रत विधिसे धारी, पांच आचारमें रमता रे–सु० ४
पंचम साधुपदको साधी, पंच परमेष्ठि सिमरता रे ।
समिति पांच प्रभुकी आराधी, पंचम ज्ञानको वरता रे–सु०५
पंचम प्रभुके प्रभावसे पंचम, ज्ञानगतिको धरता रे ।
पंच प्रपंच जगतके छोरी, चिदघन रूप विचरता रे–सु० ६
वेरावल वंदर मंदरमें, पंचम प्रभुका दिदारा रे ।
आतम लक्ष्मी कारण कीना, वल्लभ हर्ष अपारा रे–सु० ७॥

॥ इति ॥

(३८) सोरठ–वनथली मंडन श्रीशीतलनाथ जिनस्तवन ।

(देशी–मल्लिजिन नाथजी व्रत लीजेरे)

शीतल जिन नाथजी मुनें तारो रे ।
भवसिंधु पार उतारो–शीतल जिन० अंचली ॥
प्रभु दक्षिणावर्त्तनो कंवू रे, धर्म सार्थतणो तूं तंवू रे,
भव दव शमवाने अंवू–शीतल जिन० ॥ १ ॥

प्रभु त्रण अक्षरनुं नाम रे, पण अनंत गुणोनुं धाम रे,
जगजीवने दे विसराम–शीतल जिन० ॥ २ ॥
भवी शीतल नाथने ध्यावे रे, जोडी हाथने माथ नमावे रे,
गुण शीतलता प्रभु पावे–शीतल जिन० ॥ ३ ॥
प्रभु नाम स्थापना दीसे रे, द्रव्य राजू सात विसेसे रे,
भाव भावे भवी मन हींसे–शीतल जिन० ॥ ४ ॥
प्रभु देवकरणनी शक्ति रे, करे नर नारी शुभ भक्ति रे,
लहे फल तस अंते मुक्ति–शीतल जिन० ॥ ५ ॥
वनथली मंडन जिनराया रे, मुज मनथली मांही समाया रे,
रेहजो अविचल आतमराया–शीतल जिन० ॥ ६ ॥
कर मुनि निधि इंदु वरसे रे, आतमलक्ष्मी अति हरसे रे,
वल्लभ शीतल गुण फरसे–शीतल जिन० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

(२९) मंगलपुर–मांगरोल मंडन श्रीपार्श्वनाथ जिनस्तवन ॥
(माढ–मेरा गमका तराना–चाल)

मंगल पुर मंडन भवदुख खंडन पार्श्वनाथ महाराज,
प्रभु वामानंदन मदन निकंदन करुं नित्य वंदन पार्श्व०–
पुरिसादानी पार्श्व जिनेश्वर, तेवीसमा भगवंत ।
भावअरिने दूर करी धरी, संज्ञा श्रीअरिहंत–मं० ॥ १ ॥
अरिहंत सिमरुं अरिहंत सेवुं, ध्यान धरुं अरिहंत ।
अरिहंत थावा कारणे प्रभु, करुं करमनो अंत–मं०–॥ २ ॥
तेवीसमा प्रभु ध्यान धरीने, त्यागुं विषय तेवीस ।
तेवीस सूत्रकृतांग भणीने, कदी करुं नहीं रीस–मं०–३॥

कर्त्ता मंगलमें प्रभु मंगल, धरता मंगल वृंद ।
हर्त्ता अपमंगल मंगलपद, दीजे मोहे जिनंद–मं० ॥ ४ ॥
धन्य दिवस घडी धन्य जनम मुझ, धन्य छे मुझने आज।
जाग्यो अनुभव आज अपूरव, पाया दरस जिनराज मं० ५
पासरहित नव पल्लव पारस, दास हरो भव पास ।
मंगल पुर पारस प्रभु भेटी, चाहुं मंगल पुर वास–मं० ॥६॥
ओगणीसो तोतेर मृगपूनम, शांति सनात प्रचार ।
आतम लक्ष्मी शांति प्रगटी, वल्लभ हर्ष अपार–मं० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

(४०) प्रभास पाटण चैत्यपरिपाटी स्तवन ॥

(जंगलो–महावीर तोरे समवसरणकीरे–चाल)

जिनंदा तोरे चरण कमलकीरे,
सेवा भव पार उतारी, दुख दोहग दूर निवारी ।
सेवक शिव पद दातारी–जिनंदा० अंचली ॥
आदिनाथ नमिएरे, पाप सब गमिएरे ।
भव अटवीमें नवि भमिए, पर रूप विभावको वमिए,
निज आतम रूपमें रमिए–जिनंदा० ॥ १ ॥
अजित नाथ ध्याउं रे, अजित पद पाउं रे ।
निशदिन प्रभुके गुण गाउं, गुणियनसे गुणियन थाउं,
आतम शक्ति प्रगटाउं, जिनंदा० ॥ २ ॥
महावीर जिन चंदारे, शिव सुख कंदारे ।
सेवे नर नारी वृंदा, प्रभु दर्शन होत आनंदा,
टरे नमतां भवभव फंदा–जिनंदा० ॥ ३ ॥

मल्लिनाथ भजिए रे, राग द्वेष तजिएरे।
पर दल बल पलमें हरिए, मुक्ति जयश्रीको वरिए,
फिर जन्म मरण नवि करिए–जिनंदा० ॥ ४ ॥
पार्श्वनाथ स्वामीरे, दादा पद धामीरे।
घट घटके अंतर्यामी, करो निजसम आतमरामी,
मांगु ए मस्तक नामी–जिनंदा० ॥ ५ ॥
सुविधि जिन भेटीरे, कुविधि सब मेटीरे।
त्यागी तृष्णा मोहचेटी, अविरति कुमतिको फेटी,
मैं धारी निज गुण पेटी–जिनंदा० ॥ ६ ॥
चंद्रप्रभ राजेरे, तीर्थ पति गाजेरे।
सब देवनके सिरताजे, दर्शनसे अघ तम भाजे,
गुण ज्ञान अपूर्व छाजे–जिनंदा० ॥ ७ ॥
शांति जिन दातारे, शांति सुख सातारे।
शांति शांतिगुण गाता, सुख शांति शिव पद पाता,
शांति चरणी मैं राता–जिनंदा० ॥ ८ ॥
बालब्रह्मचारीरे, जग उपकारीरे।
श्री नेमिनाथ बलिहारी, करुं वंदन वार हजारी,
पाउं भवजलधि पारी–जिनंदा० ॥ ९ ॥
संवत शिखि चारारे, युग युग्म धारारे।
निर्वाण वीर निरधारा, पोहदसमी दिन बुधवारा,
किये दर्शन आनंदकारा–जिनंदा० ॥ १० ॥
यात्रा भवतारीरे, दर्शन शुद्धिकारीरे।

प्रभास पाटण सुखकारी, आतमलक्ष्मी उरधारी,
वल्लभ मन हर्ष अपारी–जिनंदा० ॥ ११ ॥

॥ इति ॥

(४१) उना (सोरठ) चैत्यपरीपाटी स्तवन ॥

(जंगलो–महावीरतोरे समवसरणकीरे–चाल)

जिनंदा तोरे चरणकमलकीरे,
सेवा देवाधिदेवा, करते नर नरपति देवा,
शिवसुख अमृतफल लेवा–जिनंदा० ॥ अंचली ॥
उना सहर राजेरे, पांच प्रभु साजेरे ।
आया मैं तुम दरवाजे, पाया दर्शन प्रभु आजे,
पंचमी गति लेवा काजे–जिनंदा० ॥ १ ॥
आदि जिन स्वामीरे, सादि सांत वामीरे ।
पद सादि अनंता पामी, हुए सत चित आनंद धामी,
मांगु ए पद सिर नामी–जिनंदा० ॥ २ ॥
भूमिगृह अंदररे, प्रभु दोय सुंदररे ।
श्रीपार्श्व अमिझरा मोहे, आदि प्रभु मूर्त्ति सोहे,
अंतर्दृष्टि पडिबोहे,–जिनंदा० ॥ ३ ॥
भूमिगृह बारेरे, दीपे दोय गभारेरे ।
कुंथु जिन साताकारी, मल्लि जिन आनंद धारी,
प्रणमुं भावे भय वारी–जिनंदा० ॥ ४ ॥
द्वितीय चैत्य धारीरे, श्रीसंभव जिन जुहारीरे ।
संभव पज्जव उर धारी, असंभव पज्जव वारी,
अभ्यंतर दृष्टि विचारी–जिनंदा० ॥ ५ ॥

नमुं प्रभु शांतिरे, टरे भव भ्रांतिरे ।
शांति जिन शांति कारी, अशांति दूर निवारी,
दो शांतिपद दातारी–जिनंदा० ॥ ६ ॥
समवसरण छोटारे, दर्शन फल मोटारे ।
एक पासे संभव स्वामी, करी दर्शन आनंद पामी,
अड मंगल जोडी स्हामी–जिनंदा० ॥ ७ ॥
चोथे चैत्य सोहेरे, सेवक मन मोहेरे ।
प्रभु पारस पुरिसादानी, दानी ध्यानी अति ज्ञानी,
जग और न जास समानी–जिनंदा० ॥ ८ ॥
बालब्रह्मचारीरे, जग उपकारीरे ।
मुद्रा प्रभु शांत सुधारी, नेमीश्वर राजुल तारी,
जग आवागमन निवारी–जिनंदा ॥ ९ ॥
आत्मानंद धारीरे, शिव लक्ष्मी सारीरे ।
ओगणीसो तोतेर वर्षे, पाया दर्शन पौषी हर्षे,
वल्लभ भवजलधि तरसे–जिनंदा० ॥ १० ॥

॥ इति ॥

(४२) अजारामंडनश्रीपार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

(देशी–सुंदर सामलीया)

सरणा धार लिया, चिदघन आतमरामी
रूप पिछान लिया, पास अजारा स्वामी–स० अंचली ॥
तेवीसमा प्रभु पार्श्व कहाया, पुरिसादानी नाम धराया,
घट घटके विसरामी–सरणा धार लिया ॥ १ ॥

कल्याणक प्रभु पांच तुमारे, आराधकको पार उतारे,
कर निजसम शिवगामी–सरणा धार लिया ॥ २ ॥
जिनवरको जिन बन कर ध्यावे,ध्याता ध्यानसे जिनपद पावे,
अजरामर पद धामी–सरणा धार लिया ॥ ३ ॥
प्रभु दर्शनमें षट् दर्शन हैं, षट् दर्शनमें न प्रभु दर्शन है,
नहि नदीमें नदीस्वामी–सरणा धार लिया ॥ ४ ॥
षट् दर्शन एकांग मनावे, प्रभु दर्शन सर्वांग कहावे,
जय जय अंतर्यामी–सरणा धार लिया ॥ ५ ॥
पुण्य उदय प्रभु दर्शन पायो, आतम लक्ष्मी हर्ष सवायो,
भेद न सेवक स्वामी–सरणा धार लिया ॥ ६ ॥
ओगणीसो तोतेर पोषमासे, यात्रा लाभ मल्यो उल्लासे,
वल्लभ आतमरामी–सरणा धार लिया ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

(४३) दीवबंदर तीर्थ स्तवन ॥

(लावणी-देशी-ऋषभ जिनंद विमलगिरि मंडन)

दीव बंदरमें श्रीजिनमंदर, यात्रा आनंदकारी है ।
तीन गभारे अंदर सुंदर, मूर्ति मोहन गारी है ॥ अंचली ॥
नेमिनाथ बालाब्रह्मचारी, मदन कदनके जारी है ।
दर्शन ब्रह्मचर्य गुणधारी, आनंद मंगल कारी है–दीव० १
शांतिनाथ शांतिके कर्त्ता, जगजीवन उपकारी है ।
शांतिकारण शांतिप्रभु सेवा,भवदव ताप निवारी है–दीव० २
नवलक्खा पारस प्रभु सोहे, मोहे नर और नारी है ।
मोह कामको दूर निवारी, निर्मोही पद धारी है–दीव० ३

श्रीजिनराज चरण सेवासे, निज आतम उद्धारी है।
जो जस सेवे तस सम होवे, अभ्यंतर अधिकारी है-दीव०४
आतम लक्ष्मी हर्ष प्रदर्शक, ऐतिहासिक चित्रकारी है।
वल्लभ सुंदर निज मंदिरमें, देखे प्रभु दिलदारी है-दीव०५

॥ इति ॥

(४४) देलवाडा मंडन श्रीचिंतामणिपार्श्व जिन स्तवन ॥

(देशी-विमलाचल विमला प्राणी)

चिंतामणि पासजी नित्य वंदो।
भवभवनां पाप निकंदो-चिंतामणि-अंचली ॥
प्रभु तेवीसमा जिन राया, अश्वसेन वामादेवी जाया।
अहि लंछन चरण सुहाया, देवदेवी मली हुलराया-चिं०१
चैतर वदि चोथ सुहावे, देवलोकथकी चवी आवे।
कल्याणक च्यवन कहावे, देवदेवी मली गुणगावे-चिं०२
दशमी वदि पोषनी सारी, जनमे प्रभु आनंदकारी।
जगजीवन अति उपकारी, गावे मंगल सुर नरनारी-चिं०३
देई दान प्रभु बन्या दानी, वदि पोष एकादशी मानी।
लेई दीक्षा बन्या प्रभु ध्यानी, करी मोहकरमनी हानि-चिं०४
वदि चोथ चैतरनी जानो, प्रभु केवलज्ञान वखानो।
अतिशय संपूर्णनो टाणो, धन्य दर्श करे रंकराणो-चिं० ५
थापी तीरथ चार प्रकारी, अष्टमी श्रावण उजियारी।
वर्या कर्म खपी शिवनारी, दिया आवागमन निवारी-चिं० ६
आराधे कल्याणक भावे, आतम लक्ष्मी फल पावे।
धरी हर्ष वल्लभ गुणगावे, देलवाडे दरस प्रभु थावे-चिं०७

॥ इति ॥

(४५) ॥ महुवा मंडन श्रीजीवतस्वामी-वीर प्रभु स्तवन

(देशी–गिरिवर दरिसन विरला पावे)

प्रभु दर्शन कोई भविजन पावे,
आतम दर्शन जेहथी थावे–प्रभु० ॥ १ ॥
दर्शनथी दर्शन गुण प्रगटे,
जिन दर्शन विन दर्शन नावे–प्रभु० ॥ २ ॥
प्रभु दर्शन विन जीव अभविया,
उपरिम ग्रैवेयक सुधी जावे–प्रभु० ॥ ३ ॥
पण आतम दर्शन विन प्रगटे,
च्चार गतिमां गोतां खावे–प्रभु० ॥ ४ ॥
प्रभु दर्शन महावीरनुं दर्शन,
स्यादवाद वस्तु वतलावे–प्रभु० ॥ ५ ॥
जीवत स्वामीनां दर्शन करतां,
मधुमती नगरीमां आनंद आवे–प्रभु० ॥ ६ ॥
आतम लक्ष्मी निजगुण प्रगटे,
वल्लभ प्रभु दर्शन हर्षावे–प्रभु० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

(४६) दाठा मंडन श्रीशांतिनाथ जिन स्तवन ॥

(देशी-थई प्रेम वश पातलीया)

प्रभु शांति जिन सुखकारी,
तुमचरण सरण वलिहारीरे–प्रभु० अंचली ॥
शांतिनाथ प्रभु शांति करता, करता जगजन साता ।
हरता जगजनकी असता, जाउं शांतिनाथ वलिहारीरे–प्र० १

नाम शांति और स्थापना शांति, द्रव्य शांति भाव शांति।
अज अचर अमर अभ्रांति, शांतिजिन शांतिकारीरे–प्र०२
नाम अनुपम काम अनुपम, धाम अनुपम धारी।
अनुपम प्रभु सेवा सारी, अनुपम फल शिव दातारीरे–प्र०३
सोलमा प्रभुकी सेवा करके, सोल कषायने हरसुं।
उपसर्ग सहन सोल करसुं, बनसुं निजरूप विहारीरे–प्र० ४
शांति करण कारण प्रभु शांति, दाठा नगर मझारी।
आतम लक्ष्मी उरधारी, वल्लभ मन हर्ष अपारीरे–प्रभु० ५

॥ इति ॥

(४७) तालध्वज–तलाजा तीर्थ स्तवन ॥

(झिंदकाफी ताल दीपचंदी)

कररे कररे कररे कररे सुमति जिन
दर्शन शुद्ध मन कररे–अंचली ॥
तालध्वज गिरि मंडन प्रभुजी, खंडन अघदल कररे।
अभ्यंतर शत्रुने जीती, नाम शत्रुंजय धररे ४–सु० ॥ १ ॥
सुमति नाथ प्रभु सुमति दाता, कुमति कुगति पथ हररे।
समिति गुप्तिथी सुगति साधी, अचर अटर पद वररे४–सु०२
पंचम प्रभु पंचमगति स्वामी, पंचम ज्ञान प्रखररे।
पायो पांच महाव्रत साधी, आश्रव पांच विखररे४–सु०॥३॥
हुं प्रभु दीन तुं दीनदयालु, कर करुणा दीन पररे।
नाथ सेवकने निजसम कीजे, तारक विरुद सिमररे४–सु०४
पुण्योदय भटकत प्रभु पायो, आतम लक्ष्मी धररे।
हर्ष धरी वल्लभ गुण गावे, जावे भवजल तररे४–सु० ॥५॥

(४८) ॥ अगासीतीर्थ मंडन श्रीमुनिसुव्रतस्वामी स्तवन ॥

(देशी–भजनियोंकी । वाला वेगे आवोरे)

सरणे तुम आयारे, शिवसुख दायारे,
स्वामी सुनो विनती हो जी ।
मुनि सुव्रत नाथ अरज अवधार,
करुणासिंधु सेवक पार उतार ॥ सरणे० अंचली ॥
जगदीश्वर जगनाथजी, जगबंधु जगस्वाम ।
जगतारक जगवत्सला, जगनायक जिन नाम ।
करुणासिंधु अपना विरुद संभार ॥ सरणे० ॥ १ ॥
वीतराग निर्दोष है, तीर्थंकर भगवान ।
चार अनंता पायके, चिद्घन सुखकी खान ।
करुणासिंधु अजर अमर पद धार ॥ सरणे० ॥ २ ॥
दुरित टरे दरिसन किये, वंदन वांछित दाय ।
पूजन लक्ष्मी कारणे, कल्पतरु सम भाय ।
करुणासिंधु तूं जगजीव आधार ॥ सरणे० ॥ ३ ॥
क्रोध मान माया रति, लोभ प्रेम भय हास ।
मत्सर अरति शोक मद, झूठ अदत्त विलास ।
करुणासिंधु हिंसा दूर निवार ॥ सरणे० ॥ ४ ॥
नींद अज्ञान अठार ए, दोष नहीं तुम देव ।
दोषरहित होने लिए, करते जन तुम सेव ।
करुणासिंधु गुणमणि रयण भंडार ॥ सरणे० ॥ ५ ॥
आतमलक्ष्मी पामिया, हे जिन दीनदयाल ।

वो सेवकको दीजिए, सरण पर्यो तुम बाल ।
करुणासिंधु पुरुषोत्तम आचार ॥ सरणे० ॥ ६ ॥
इंदु रिसि निधि चंद्रमा, मौन एकादशी सार ।
तीर्थ अगासीमें हुओ, मंगल जय जयकार ।
करुणासिंधु वल्लभ हर्ष अपार ॥ सरणे० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

(४९) ॥ अगासी तीर्थमंडन श्रीमुनिसुव्रतस्वामी स्तवन ॥

(लावणी—ऋषभजिनंद विमलगिरिमंडन—देशी)

मुनिसुव्रत जिनतीर्थ सुहंकर, नाम अगासी धारारे ।
सुंदर मंदर अंदर प्रभुजी, दीपे रूप उदारारे ॥ मु० अं० ॥
श्रीपाल रास चरित्र प्रबंधे, सोपारा अधिकारारे ।
वस्तुपाल तेजपालने कीना, सुंदर तीर्थ उद्धारारे ॥ मु० १॥
काल परिवर्त्तनसे होया, तीर्थ विच्छेद विचारारे ।
नालासोपारा गामसे अंतर, माइल अगासी चारारे । मु०२॥
मुनिसुव्रत नेमिनाथ सुपारस, प्रगट हुए सोपारारे ।
सेठ मोतीशा जहाज भरीने, आया सिंधु मझारारे ॥ मु० ३॥
हुआ समुद्रे उपद्रव भारी, सेठ किया निरधारारे ।
जहां पहुचुं शांतिसे बनाउं, मंदिर जैन उदारारे ॥ मु० ४ ॥
पहुचे अगासी दैवयोगसे, । जिन शासन जयकारारे ।
मूर्त्ति लाधी प्रतिज्ञा साधी, सफल किया अवतारारे । मु०५॥
काल जमावे काल पकावे, काल करे संहारारे ।
काल परिवर्त्तन वस्तुका, अदल बदल आचारारे ॥ मु० ६ ॥

अलबेली मुंबई नगरीमें, करते जैन व्यापारारे ।
सुरती आदि मिल सब कीना, नूतन मंदिर सारारे ॥मु०७॥
भवस्थिति परिपाक होनेसे, निश्चय धर्म विचारारे ।
बाह्यनिमित्त निश्चयका साधन, शुद्ध उचित व्यवहारारे।मु०८
निश्चय धर्म आतम दर्शन है, प्रभुदर्शन उजियारारे ।
कारण योगे कारज निपजे, तीरथ तारण हारारे ॥ मु० ९ ॥
कांति प्रभुकी अदभुत सुंदर, कांतिविजय सरदारारे ।
तीरथ यात्राकारण आए, साधु संग अगियारारे ॥ मु० १० ॥
वल्लभ प्रभुदर्शन जो होवे, चतुर लहे लाभ भारारे ।
विमलातम कस्तूर सुगंधी, भाव उमंग सहारारे ॥मु० ११॥
मेघध्वनि गाजे विज्ञानी, विद्या रूप विचारारे ।
गुणि संगत गुणी होनेकारण, पावे अति पुण्यवारारे। मु०१२
वेद मुनि निधि इंदु वर्षे, माघवदि सोमवारारे ।
आतमलक्ष्मी चउदस यात्रा, वल्लभ हर्ष अपारारे। मु०१३ ॥

॥ इति ॥

(५०) होरी ।

पास गोडी दरवाररे आज खेलीए होरी-अंचली ।
होरी होरी करत सब जगमें, अध्यातम न विचाररे आ० १
धूर उडाना गारी गाना, नहीं सज्जन आचाररे ॥ आ० २ ॥
कर्मकी धूर उडाओ प्यारे, मोहको संग निवाररे ॥ आ० ३ ॥
ज्ञान रंग समता पिचकारी, छांटो सुमताناررे ॥आ० ४॥
ज्ञान ध्यान तप जप आगीमें, अष्टकर्मको जाररे ॥ आ० ५

दिव्यतेज चिन्मय सिद्ध प्रगटे, आवागमन निवाररे ॥ आ०
आतमलक्ष्मी होरी खेली, वल्लभ हर्ष अपाररे ॥ आ० ७ ॥

॥ इति ॥

(५१) सुरत-सगरामपुरा मंडन श्रीवासुपूज्य स्वामि स्तवन ॥

(जंगलो-महावीर तोरे समवसरण कीरे)

जिंनदा तोरे चरण कमलकीरे
सुर अमरी चार प्रकारी, भक्ति भावे नर नारी,
करे पावे भवजल पारी, जिनंदा-अंचली ॥
करुणानिधि स्वामीरे, घट घट विसरामीरे।
प्रभुवासुपूज्य जिनराया,
पुण्ये तुम दर्शन पाया,
भविजनगण मनमें भाया-जिनंदा० ॥ १ ॥
शांतरूप धारीरे, मूर्त्ति मनोहारीरे।
रहो और अतिशय दूरे।
तुझ मुद्रा जगति धूरे,
देखत आनंदरस पूरे-जिनंदा० ॥ २ ॥
दाता प्रभु शांतिरे, सुंदर सोहे कांतिरे।
चाहे चित्त सेवा थारी,
माने मन मेलो भारी,
चक्षु चाहे दिदारी-जिनंदा० ॥ ३ ॥
दर्शन प्रभु थावेरे, दुरित दूर जावेरे।
वंदन वांछित दातारी,
पूजन भवपार उतारी,
जिनवर सुरतरु बलिहारी-जिनंदा० ॥ ४ ॥

दास आस पूरोरे, कर्म रोग चूरोरे।
जगनाथ अनाथ आधारी,
तारक निज विरुद संभारी,
तारो सेवक जयकारी–जिनंदा० ॥ ५ ॥

संवत निधि कायारे, ग्रह विधु थायारे।
अक्षय तृतिया कवि वारी,
रवि राज योग बलकारी,
प्रतिष्ठा होई सारी–जिनंदा० ॥ ६ ॥

सुरत शहर मंडनरे, प्रभु अघ खंडनरे।
सगरामपुरा चैत्य सोहे,
आतम लक्ष्मी जिन मोहे,
वल्लभ हर्षे नमे तोहे–जिनंदा० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

(५२) श्रीआदिनाथजिनस्तवन ॥

॥ मालकोश–त्रिताल ॥

प्रभु आदिनाथ जगनाथ तार
कहु वारवार मुज करूणा धार–प्र० अंचली ॥
मैं रागी प्रभु तुम हो विरागी
लगन प्रभु मोहे तुमरी लागी
और नहीं जग देव सार–प्रभु० ॥ १ ॥
मैं कामी प्रभु तुम निष्कामी
कामना मुज तुजमें जगस्वामी
करो अकाम वंछित दातार–प्रभु० ॥ २ ॥

अपने जन सब तुमने तारे
मौन किया क्यों मेरे वारे
तार नाथ निज पर निवार–प्रभु० ॥ ३ ॥
तुम मूर्त्ति भरतेश्वर थापी
दरस करी तरते परतापी
हुए तीर्थ जग अति विथार–प्रभु० ॥ ४ ॥
शत्रुंजय आबू कैलासे
राणकपुर कुल्पाक विकासे
तीर्थ झगडिआ नाथ धार–प्रभु० ॥ ५ ॥
केसरीया मेत्राणा कावी
आतम लक्ष्मी तीजोरी चावी
हर्ष तीर्थ वल्लभ जुहार–प्रभु० ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

(१) ॥ श्रीजंबुस्वामि सज्झाय ॥

। दोहरा ।

वंदी वीर जिनंदको, सोहम तस पटधार ।
तस पटधर जंबू गणी, पभणुं तस अधिकार ॥ १ ॥
गुणिजन गुण भविजन गही, बनिए गुणिजन आप ।
आतम अनुभवके लखे, मिटे हृदय संताप ॥ २ ॥
राजगृही नगरी वसे, ऋषभदत्त सहुकार ।
शीलवति सती धारणी, पतिव्रता तस नार ॥ ३ ॥
तस कूखे ब्रह्मदेवसु, सिंह सुपन अनुसार ।
पूर्ण समय सुत जनमियो, नामे जंबु कुमार ॥ ४ ॥

क्रमसे योवन पामियो, मातपिता ससनेह।
कन्या अड सगपन करे, संसारे सुख एह ॥ ५ ॥

। देशी–चैतमें सोहाग सहियो।

संसारमें सुख मानिया जन कल्पना मनमें धरी,
एक औरत और दौलत दोय वातें जग खरी।
क्रोध मानरु लोभ माया चारके वस दुःख परी,
धन साधु मुनिवर ए उपाधि जानके जिन परिहरी ॥ १ ॥
हरि चक्री हलधर वज्रपाणि पूज्य श्रीजगदीसरु,
महावीर स्वामी शिष्य सोहम स्वामी पंचम गणधरु।
आए विचरते नगरी राजगृही भविजन हितकरु,
सुन आयो जंबुकुमार वंदी वैठो पासे जगगुरु ॥ २ ॥
गुरुराज भाषे देशना भववेष नाना जानिए,
देव नारक तिरी मानव चार ए गति मानिए।
जीव हैं सव एक सरिसे कर्म भिन्न वखानिए,
इस भांति नाना जीव योनि भेद दिलमें आनिए ॥ ३ ॥
आनिए दिल वीर वाणी रूप आतम धारिए,
कर्म वंधके पंच कारण पंच आश्रव वारिए।
काम म्होटो सुभट खोटो मूल जडसे उखारिए,
ज्ञान आतम ब्रह्म रूपे ब्रह्मचर्य विचारिए ॥ ४ ॥
विचार करी मन शुद्ध जंवु पास गुरुव्रत आदरे,
ब्रह्मचर्य अखंड वाकी मात आणा वाद रे।
गुरुराज वंदी मन आनंदी करे वाणी याद रे,
घर आय विनवे मातपितुको नमी विनये पाद रे ॥ ५ ॥

। देशी-वणजारेकी ।

जंबु ।

सुनो मातपिता अर्ज म्हारी, लेउंगा मैं संयमधारी-अं०
सोहम गणधर फरमाया, है झूठी जगकी माया,
धन्य जन्म सफल तस काया, लिया संयम जिसने धारी-सु०
मैं लाख चौरासी फिरिया, कर्मोंके वसमें परिया,
नहीं कारज कोइ सुधरिया, अब लेउंगा कार्य सुधारी-सु०

माता पिता ।

सुन लायक पुत्र हमारा, अंगे तूं अति सुकुमारा-अंचली ।
लघु वय है अभी तुझ जाया, संसार सुख नहीं पाया,
पालना मन वच और काया, संयम खांडाकी धारा-सु० ३
पादचारी होके विचरना, संथारा भूमी करना,
नित्य ध्यान धर्मका धरना, नित्य पालना पांच आचारा-सु० ४
पंच महाव्रत भारको वहना, बावीस परिसह सहना,
कटुवयण न मुखसे कहना, करना गौचरिये आहारा-सु० ५

जंबु ।

सुनो मातपिता अर्ज म्हारी, लेउंगा मैं संयम धारी-अं०
सोहमगुरु वाणी जानी, संसार दुःखोंकी खानी,
क्षण क्षण रूपादि हानि, जग थिर नहीं एक विचारी-सु० ६
संयम कायर दुःखदाई, सूरे मन तेज सवाई,
दिन दिन अति आनंद पाई, विचरे जग सिंह विहारी-सु०

माता पिता ।

सुन लायक पुत्र हमारा, अंगे तूं अति सुकुमारा-अं०

कहे मातपिता लाचारी, परणो सुत आठों नारी,
रहे बोली जगमें हमारी, पीछे तुमरा अधिकारा–सु० ८ ॥

जंबु ।

सुनो मात पिता अर्ज म्हारी, लेउंगा मैं संयम धारी–अं०
संसारमें मैं नहीं वसना, नारी विन फासी फसना,
होवे नहीं जातमें हसना, कहंदो संबंधी पुकारी–सु० ९ ॥

कुडम वेवाई ।

होगा मुनि जंबु कुमारा, त्यागन करके संसारा–अंचली ।
ऋषभदत्तने जाय सुनाया, आठ कन्याके मायताया,
सुनी वात करे निज जाया, कहो पुत्री क्या तुम धारा–हो०

कन्या ।

सती एक पतिकी नारी, जगमें ए वात अति प्यारी–अंचली ।
मिल सव कन्याने विचारा, लिया धार पति एकवारा,
आजीवित नाथ हमारा, कहा मातपिता उच्चारी–स०॥११॥
हम नाथ हैं जंबुकुमारा, पति मारग मार्ग हमारा,
रागी त्यागी संसारा, करो लग्नकी आप तैयारी–स०॥१२॥
सव मिल कहे सेठको आके, करो लग्न तैयारी जाके,
मंजूर है सव कन्याके, आनंद मंगल जयकारी–स०॥१३॥

। लावणी । मराठी ।

वालब्रह्मचारी जंबु मुनिजी, धन धन तुम अवतारारे ।
मन वच काया नाम जपे तुम,जन्म सफल तस धारारे–अं०
लग्न तैयारी करके सवने, ठाठ माठ किया भारारे ।
पाणिग्रहण आठोंसे कर घर, आया जंबुकुमारारे–वा० ॥१॥

आठों स्त्री पतिसन्मुख आईं, सजी सोले सिणगारारे ।
अउठ कोटिमें एक रोममें, जंबु मन न विकारारे–बा०॥२॥
पतिव्रता सुनो सती सिरोमणि, पालो अपना उच्चारारे ।
दीक्षा हम संग लीजे कीजे, निज आतम उद्धारारे–बा०॥३॥
हाथ जोडकर अरज गुजारें, धन योवन चमकारारे ।
मनवंछित क्रीडा कर कीजे, योवन सफल हमारारे–बा०४॥
योवन वय रूपादि सुंदर, अवसर नाथ ए सारारे ।
भोगविलास विलसी वृद्धवयमें, लेसुं संयम प्यारारे–बा०५॥
जंबु कहे वृद्धवयमें पूरण, होवे नहीं मन धारारे ।
साधन धर्म न रंग जगतमें, पके पान मझारारे–बा० ॥६॥
इम जानी मानी जिन वानी, छोरो सकल विचारारे ।
सफल करो नरभव सुरमणि सम, मिले न वारंवारारे–बा०७
आठों स्त्रीको बोध दिया इस, अवसर चौर उदारारे ।
चौरी कारण आया प्रभवा, चौरोंका सरदारारे–बा० ॥८॥
विद्यासे सोए सब घरके, सोया न जंबुकुमारारे ।
पुण्यवान पर जोर चले नहीं, विद्या मंत्र प्रचारारे–बा०॥९॥
धन लेने लगे चौर मिली सब, मैं इनका रखवारारे ।
ले नहीं सकते मेरे बैठे, जंबु वचन उच्चारारे–बा० ॥१०॥
स्तंभित होगए चौर सभी मन, प्रभवा करत विचारारे ।
मुझसे भी उत्तम इस नरमें, है विद्या बल भारारे–बा०११
मुझ विद्या लेई निज विद्या देई, कीजे मुझ उपकारारे ।
जंबु कहे सुन प्रभवा प्यारे, करना नहीं मैं व्यापारारे–बा०१२
दौलत औरत मात पिता तज, होना मैं अनगारारे ।

क्या करनी विद्या मोहे तोरी, वृद्धि करे संसारारे–वा० १३
नमन करी प्रभवा कहे मुझको, काम न रुचता तुम्हारारे।
मिली वस्तु छोरी अणदीठी, करनी आस असारारे–वा०१४
सुख संसार विषय मन माना, नारी स्नेह अपारारे।
पुत्र प्रसूत हुए फिर लीजो, संयम तज परिवारारे–वा० १५
नारी खारी नरककी मानुं, विषय विषम दुःखकारारे।
पुत्र परम बंधन जग जानुं, कारिमा सब परिवारारे–वा०१६
सुनी उपदेश प्रभव वैरागे, भीनो हर्ष न पारारे।
तुम मुझ धर्माचार्य गुरु तुम, तुम मुझ तारण हारारे–वा०१७
मात तात निज नारी सारी, श्वसुर सासु परिवारारे।
पांचसौ तस्कर सब प्रतिबोधी, त्याग दिया संसारारे–वा०१८
सोहम गणधर गुरु किया माथे, साथे सब परिवारारे।
पांच महाव्रत विधिसे पाली, टाली सब अतिचारारे–वा०१९
अष्ट कर्म क्षय करी गए मुक्ति, वीर पीछे साठ चारारे।
जंबु मुनि धन्य मातपिता धन्य, धन्य सकल परिवारारे–वा०
तपगच्छनायक विजयानंदसूरि, सिमरी मन उपकारारे।
आतम लक्ष्मी हर्षे वल्लभ, गाया जंबु कुमारारे–वा० २१॥

। दोहरा।

वेद मुनि ग्रह चंद्रमा, पोष सुदि सोमवार।
पूर्ण किया द्वितीया तिथि, मुंबइ यह अधिकार॥ १॥

॥ इति ॥

(२) ॥ श्री मनकमुनिजीकी सज्झाय ॥

(वाल्हावेगे आवोरे–भजनियोंकी चाल)

भक्तिभाव धारीरे, जगजयकारीरे,
मुनिगुण गाइए हो जी।

मुनिगुण गातां हर्ष अपार,
वारीजाउं होवे भवोदधिपार–भक्ति–अंचली ॥
शय्यंभव सूरि नमुं, जिनपडिमाको देख ।
वमन करी मिथ्यात्वको, पाए समकित रेख ।
वारीजाउं त्यागन कर संसार,
वारीजाउं लीनो संयम भार,
वारीजाउं गर्भवती घर नार,
वारीजाउं मोह न कीनो लगार–भक्ति–॥ १ ॥
पूर्णसमय सुत जनमियो, रूपगुणे अभिराम ।
स्वजन संबंधी सब मिली, मनक दियो तस नाम ।
वारीजाउं नंदन आनंदकंद,
वारीजाउं माता कुमुद मन चंद,
वारीजाउं दिन दिन वृद्धि लहंद,
वारीजाउं माता हर्ष धरंद–भक्ति–॥ २ ॥
क्रमसे वयलायक हुओ, मात मनोरथ साथ ।
नाथ नहीं जस माथपर, पुण्य जगतमें नाथ ।
वारीजाउं एकदिन पूछे मात,
वारीजाउं कहां गए मुझ तात,
वारीजाउं मात कही सब बात,
वारीजाउं साधु हुए तुझ तात–भक्ति–॥ ३ ॥
तात मिलनके भावसे, लेइ आज्ञा निजमात ।
चलते चलते आइयो, मनक नगर जिहां तात ।

वारीजाउं दैवयोग मुनिराय,
वारीजाउं थंडिलभूमि जाय,
वारीजाउं देखी मनक हुलसाय,
वारीजाउं पूछे नमी मुनिपाय–भक्ति–॥ ४ ॥

शय्यंभव मुनिरायको, जानत हो मुनि आप ।
महेर करी मुझको कहो, लागत हैं मुझ बाप ।
वारीजाउं मुनिवर मनमें विचार,
वारीजाउं वचन कहे अतिसार,
वारीजाउं वो हम मित्र उदार,
वारीजाउं फेर न इसमें लगार–भक्ति–॥ ५ ॥

साथ चलो हम मित्रके, पुत्र न जानो भेद ।
पढो गुणो करणी करो, जनन मरन मिटे खेद ।
वारीजाउं वचन सुनी मुनिराय,
वारीजाउं मनक चल्यो हर्षाय,
वारीजाउं मुनिवर स्थानमें आय,
वारीजाउं कियो दीक्षित समझाय–भक्ति–॥ ६ ॥

अल्पायु गुरु जानके, मनकमुनिके हेतु ।
दशवैकालिक विरचियो, भवसागरमें सेतु ।
वारीजाउं मनकमुनि षट् मास,
वारीजाउं पाली संयम रास,
वारीजाउं अमरपुरि कियो वास,
वारीजाउं गुरुजी होए उदास–भक्ति–॥ ७ ॥

अश्रुपात गुरु देखके, कहे मुनिगण कर जोड ।
किसकारण इतना प्रभो, मोह महातम तोड ।
वारीजाउं मोह न मन लवलेस,
वारीजाउं मनक धरी मुनिवेस,
वारीजाउं सिद्ध कियो निज देस,
वारीजाउं अश्रु हर्षविसेस–भक्ति–॥ ८ ॥
संसारी सुत होयके, धर्मी सुत बन्यो आय ।
अल्पसमय कारज कियो, तन मन आनंद थाय ।
वारीजाउं बोले सुनी मुनिवृंद,
वारीजाउं धन्य तुम धन्य तुम नंद,
वारीजाउं जगजीवन आनंद,
वारीजाउं होवे पढते छंद–भक्ति–॥ ९ ॥
जान करी गुरु हम नहीं, करते तुम सम जान ।
भक्ति मनकमुनिरायको, देते सब सन्मान ।
वारीजाउं गुरु कहे शिष्य विनीत,
वारीजाउं धन्य तुम जन्म पुनीत,
वारीजाउं धर्मीजनकी ए रीत,
वारीजाउं सुरनर गावे गीत–भक्ति–॥ १० ॥
पिण आल्पायु जानके, मनकमुनि अनगार,
कारण तुम नवि दाखियो, तस आतम उद्धार ।
वारीजाउं ग्रंथ रच्यो श्रीकार,
वारीजाउं पूरवज्ञान आधार,

वारीजाउं अल्पसमय हितकार,
वारीजाउं अब संक्रमणविचार–भक्ति–॥ ११ ॥

संघ मुनि विनति करी, आप परम उपकार ।
आगामि मुनिके लिए, ग्रंथ रहो जयकार ।
वारीजाउं अरज गुरु अवधार,
वारीजाउं दान दिया ग्रंथ सार,
वारीजाउं संघ किया सत्कार,
वारीजाउं वार वार वलिहार–भक्ति–॥ १२ ॥

मनकमुनि गुण गानसें, आतम निर्मल थाय ।
इम जानी भवि कीजिए, करी शुद्ध मन वच काय ।
वारीजाउं मुनि गुणरयणभंडार,
वारीजाउं आतम लक्ष्मीदातार,
वारीजाउं गावो पावो भवपार,
वारीजाउं वल्लभ हर्ष अपार–भक्ति–॥ १३ ॥

॥ इति ॥

(३) ॥ वैराग्यपद–सज्झाय ॥

(मुखडा क्या देखे दर्पनमें–देशी)

जिया शोच कछु निज मनमें,
तेरो कौन है आ जगवनमें–जिया–अंचली ॥
तूं माने मैं सवसे ऊंचा, फूला फिरत है मगनमें ।
कूकर सूकर रासभ अंत्यज, सव कोइ ऊंच लगनमें–जि० १॥
ऊपरसे वन ठनके मुखडा, देखत है दरपनमें ।
अंदर गंद भरा कर्मोंका, धूर परी तुझ तनमें–जिया० २ ॥

हूं मैं क्या मुझ क्या है करनी, शोच नहीं एक खिनमें ।
दौलत औरत खातर तारी, लागरही है गगनमें-जि० ३ ॥
धनपति निर्धन ठाकर चाकर, ऊंच नीच सब जनमें ।
मियाकी खाक बने माटीमें, हिंदुकी राख अगनमें-जि० ४॥
गू मूतन और रमत गमतमें, निर्लज्ज बन बचपनमें ।
चटक मटक विषयों वस परके, खोई उमर जोबनमें-जि० ५
अव क्या होवे बनगए बूढे, धार ली लाठी करनमें ।
बोलनकी मुखमें चलनेकी, ताकत न रही चरनमें-जि० ६॥
मात तात सुत दारा बंधु, देत मदद न मरनमें ।
परकी खातर अपना चूके, धिक् धिक् तुझ समझनमें-जि० ७
आखिर काम नाम प्रभु आवे, चेतन चेत स्मरनमें ।
आतम लक्ष्मी हर्ष अनुपम, वल्लभ प्रभुके भजनमें-जि० ८ ॥

॥ इति ॥

(४) ॥ गुरुस्तुतिरूप सज्झाय ॥

(देशी-वारनाकी)

वारीजाउंरे सदगुरुजी तुमपर वारनाजी । अंचली ॥
आतमारामजी नाम धराया, आतमको आराम बताया ।
आतम रामसमा सुखदाया, अंतर घटमें धारनाजी-वा० १॥
मिथ्यामततम दिनकर जाना, कामज्वर धन्वंतरी माना ।
सत् चित् आनंद पदका पाना, सागरलोभ तिवारनाजी २
बाह्य निमित्त गुरु उपकारी, कारण मुख्य निजातम धारी ।
आतम ही आतमपद कारी, सीधा अर्थ विचारनाजी-वा० ३

घडी घडी पल पल गुरुजी ध्याउं, मनमें वाणीसे गुण गाउं।
कायासे निज सीस नमाउं, रूप पराया छारनाजी–वा० ४ ॥
पूर्ण कृपा श्रीगुरुकी थावे, आतम परमातम पद पावे।
विजयानंद वधाई गावे, आतम वल्लभ तारनाजी–वा० ५ ॥

॥ इति ॥

कलदारस्वरूप।

(मान मायाना करनारारे—देशी)

सुखकारा जगत सुखकारारे एक देखा अजव कलदारा।
मन मोहे टनन टनकारारे–एक देखा– अंचली ॥
पास होवे कलदार जिन्होंके, वे ही जगत सरदारा।
गुणी नहीं पिण गुणी कहावे, जन्म सफल संसारारे–ए० १॥
वेंक विल्डींगे हाट हवेली, कलदारका चमकारा।
राजे महाराजे खालम खाली, कलदार विन भंडारारे–ए० २॥
कलदारसे कुलवान कहावे, कलदारसे मिले दारा।
कलदार रोटी कलदार कपडे, कलदार स्त्री श्रृंगारारे–ए० ३॥
कलदार मोटर कलदार वग्घी, कलदार गज हुशियारा।
कलदार घोडा कलदार पाला, कलदार सव व्यवहारारे–४ ॥
कलदार जे. पी. कलदार नाइट, कलदार मामलतदारा।
कलदार ल्लीडर कलदार ऍटलो, कलदार कुल मुखतारारे–५॥
कलदार गाडी कलदार वाडी, कलदार होटल सारा।
कलदार खुरसी कलदार गादी, कलदार वैठनहारारे–ए० ६॥
कलदार विद्या कलदार हुन्नर, कलदार खिजमतगारा।
कलदार सूरत कलदार वुद्धि, कलदार वोलनवारारे–ए० ७॥

कलदार बेटा कलदार बापु, कलदार भाइ प्यारा।
कलदार मामा कलदार काका, कलदार साला सारारे-ए० ८
कलदार बाबू कलदार राजा, कलदार सेठ साहुकारा।
कलदार बत्ती कलदार दीवा, कलदार बिन अंधारारे-ए०९॥
कलदार दौलत कलदार औरत, कलदार बस जग सारा।
कलदार कलदार कलदार कलदार, कलदार जगजयकारारे
वस नहीं कलदारके साधु, आतम लक्ष्मी आधारा।
कलदार बिन मुनि वल्लभ जगको, हर्ष अनुपम धारारे-ए०

॥ इति ॥



श्री १०८ श्रीमद्विजयानंदसूरि शिष्य महोपाध्याय, श्रीमद् लक्ष्मीविजय शिष्य मुनि महाराज श्रीहंसविजयजी विरचित स्तवन संग्रह ।

(१) ॥ कावी तीर्थस्तवन ॥

(तीर्थनी आशातना नवी करीये ॥ ए देशी ॥

कावी तीर्थ यात्रा सदा दिल धरीये ।
हांरे दिल धरीयेरे दिल धरीये ॥
हांरे दिल धरीने काया थकी करीये ।
हांरे तरीये संसार ॥ कावी० १ ॥

तरीये जेथी ते तीर्थ छे एम जाणो ।
हांरे एवुं प्रकाशे त्रिभुवन राणो ॥
हांरे महावीर प्रभु जग भाणो ।
हांरे सुणे छे गणधार ॥ कावी० २ ॥

तीर्थ सेवा फल कारणे संघ जावे ।
हांरे पादराथी चतुर्विध भावे ॥
हांरे पहेलो पडाव साधीमां थावे ।
हांरे तिहां आदि जिनंद ॥ कावी० ३ ॥

बीजो पडाव रणु गामनो वळी थाय ।
हांरे त्रीजो वडु गाममां कराय ॥
हांरे नवपदजीनी पूजा भणाय ।
हांरे प्रभु प्रतिमा मंगाय ॥ कावी० ४ ॥

मोभामां चोथो पडाव जईने कीधो,
हांरे संघ भक्तिनो लाहो लीधो ॥
हांरे मुनि वचनामृत रस पीधो ।
हांरे देवदर्शन थाय ॥ कावी० ५ ॥

वणछरा गामे मुकाम पांचमुं कीधुं ।
हांरे तिहां चैत्य पुराणुं प्रसीधुं ॥
हांरे देखी नरभवनुं फल लीधुं ।
हांरे पुण्यना ए प्रभाव ॥ कावी० ६ ॥

प्राचीन प्रतिमा चार तीहां तो बिराजे ।
हांरे पांचमा चोमुखजी छाजे ॥
हांरे मूलनायक शोभे समाजे ।
हांरे चिंतामणि पास ॥ कावी० ७ ॥

छठ्ठे मुकामे आवीया मन चंगे ।
हांरे मासररोड मांहे सुरंगे ॥
हांरे सामैयुं सज्युं त्यांना संघे ।
हांरे भेट्या शांति जिनंद ॥ कावी० ८ ॥

पूजा भणावी बे मोटकी हितकारी ।
हांरे साधर्मीवात्सल्य बे भारी ॥
हांरे देरा उपासरानी सारी ।
हांरे टीप दीधी भराय ॥ कावी० ९ ॥

सातमा मुकामे आवीयो संघ सारो ।
हांरे शांति जिन शांति कारो ॥

हांरे अणखी गाममां वहु प्यारो ।
 हांरे गादीये पधराय ॥ कावी० १० ॥
आठमा मुकामे आवीया नोवारा ।
 हांरे नवमे सारोद सुखकारा ॥
हांरे त्यांना देवलमां शोभे अपारा ।
 हांरे वासुपूज्य जिनंद ॥ कावी० ११ ॥
दशमे नार थई आवीया गाम कावी ।
 हांरे वे देवल दीठां त्यां आवी ॥
हांरे तेनी उत्पत्ति आपुं वतावी ।
 हांरे शिलालेख अनुसार ॥ कावी० १२ ॥
वाढुक गांधी वडनगर वसनारो ।
 हांरे पोपटी हीरादेवी भरतारो ॥
हांरे खंभात आवी वस्यो सारो ।
 हांरे थयो वहु धनवान ॥ कावी० १३ ॥
कावी शत्रुंजय तीर्थ हतुं नामधारी ।
 हांरे काष्ट माटी इंटोनुं भारी ॥
हांरे तेनी स्थिति देखीने नठारी ।
 हांरे तेनुं दिल दुःखाय ॥ कावी० १४ ॥
आदिनाथ प्रासाद नवो तेणे कीधो ।
 हांरे निज लक्ष्मीनो लाहो लीधो ॥
हांरे वीजो धर्मनाथनो प्रसीधो ।
 हांरे प्रासाद मनोहार ॥ कावी० १५ ॥

पोपटी पुत्र कुंवरजीए ते बनाव्यो ।
हांरे संदी[1] सत्तर मांहे चणाव्यो ॥
हांरे देहरी बावनथी गणाव्यो ।
हांरे रत्नतिलक छे नाम ॥ कावी० १६ ॥
पादरानिवासी लल्लु खीमचंदभाई ।
हांरे तेना पुत्रो लाव्या संघे[2] आंई ॥
हांरे साधु अगीयार साथ सुहाई ।
हांरे साधवियो चौद ॥ कावी० १७ ॥
ओगणीसें चुवोत्तेरनी शुभ साले ।
हांरे पोष कृष्ण पक्ष रढीयाले ॥
हांरे तिथि त्रीज चोथ सुकाले ।
हांरे करी यात्रा उदार ॥ कावी० १८ ॥
विजयानंद सूरिरायना शिष्य सारा ।
हांरे श्रीलक्ष्मीविजय गुरु प्यारा ॥
हांरे तस हंस रचे हितकारा ।
हांरे प्रभु स्तवन श्रीकार ॥ कावी० १८ ॥

॥ इति ॥

(२) मासररोड मंडन श्रीशांतिनाथस्तवन ॥

(थई प्रेमवश पातलीआ मारा मनना मालिक मलीयारे थई-ए चाल)

श्रीशांतिनाथ महाराया, मासररोडमें प्रभु पायारे–श्रीशां०
हंसगतिगामी जगस्वामी षट्खंड संपत पामी ।
तृणपरे तुमे तेह विरामी ॥ मासर० १ ॥

---

१ संवत १६५५ । २ सुमारे ४०० माणसनो संघ ।

[३]मोतीकीमाला अतिहि विशाला । त्यागी हृदयसें व्हाला,
नहि राग रंग[४]का चाला ॥ मा० २ ॥

उत्तम[५]ता धारी सुखकारी, वारवार बलिहारी ।
चोसठ हजार तजी नारी ॥ मा० ३ ॥

शांत आकारा निर्विकारा, मुखकमल मनोहारा ।
लागे सोम[६] साम्यता धारा ॥ मा० ४ ॥

गुंथी कुसुँ[७]मकी माल रसाला, परिमल गुर्ण विसाला
करे पूजन हरि धरी ख्याला ॥ मा० ५ ॥

भाग्य [९]उंदय पामी शिर नामी । आरतिउतारे सुख कामी ।
[१०]कँपूर धरी अभिरामी ॥ मा० ६ ॥

शं[११]भुंके स्वामी अंतर जामी, हंस वदे इच्छामि ।
सेवामां न रहे कुछ खामी ॥ मा० ७ ॥

॥ इति ॥



श्री १०८ श्रीप्रवर्त्तकजी महाराज श्रीकांतिविजयजी शिष्य पंडित चतुरविजयजीकृत स्तवनादि संग्रह ।

॥ श्रीमन्महावीरस्वामिचैत्यवन्दनम् ॥

(द्रुतविलम्बितम् ।)

मुदितमानवदानववन्दित !
निहितनीतिपथोत्पथवर्जित ! ।
चपलचामरराजिविराजित !
तुहिनकान्तिमुखोरुबलान्वित ! ॥ १ ॥
रतिधवाधिकरूपशुभोदय !
विदितमोहमहीपमहोदय !
जगति विश्रुतराजकुलोद्भव !
यतिपते ! प्रथिताद्भुतवैभव ! ॥ २ ॥
विविधदुःखभृतां भविनां सुखं
रचय वीरविभो ! व्यसनोज्झितम् ।
चिदरुणं चतुरस्य मनोगृहे
तमहरं च विभो ! प्रकटीकुरु ॥३॥ त्रिभिर्विशेषकम्.

॥ इति ॥

॥ श्रीपार्श्वजिनस्तवनम् ॥

(त्रोटकम्)

जिनराज ! सदा तव मे शरणं,
शरणागतवत्सल पार्श्वविभो ! ।

गुणिनां च ददासि शिवं सुभगं,
सुभगेत्यवगत्य ततस्तरसा ॥ १ ॥
अहमागत आप्त! भवच्चरणं,
चरणे मम देहि मतिं विमलाम् ।
विमलं मम मानसमीश! कुरु,
यदि चेत्तव दानगुणोऽवितथः ॥ २ ॥
गुणिनां भविनां विभवं कुरुषे,
किमु चित्रमिदं तदहो! मुनिप! ॥
मुनिपापमिमं यदि तारयसि,
भवतीश! तदा तव तारकता ॥ ३ ॥
मदमानयुतं व्यसनैर्व्यथितं,
मथितारिगणेश! निधाय कृपाम् ।
समये भणिताच्चरणाद्विमुखं,
जिन! तारय मां गुणहीनमिमम् ॥ ४ ॥
चरितं मम तीर्थपते! गहनं,
भणतीति नियोज्य करौ चतुरः ।
भवसागरपर्यटनं परमं,
परमेश्वर! वारय वारय मे ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ पासणाहथुई ॥

(उपजातिः)

विभावमुत्तं सुहभावजुत्तं, सेवे सया सासयठाणपत्तं ।
पयावनिन्नासियसत्तुमाणं, पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं ॥ १ ॥

अणिच्चसंसारविलासमुत्ता, सिद्धा सया केवलनाणजुत्ता ।
सुहावहा दिंतु मई मुणिंदा, सव्वे जिणंदा सुरविंदवंदा ॥२
तिलोयसारं भवदुक्खवारं, कल्लाणकारं जियवादिवारं ।
वंदे सया सव्वभयप्पहाणं, मयं जिणाणं सरणं बुहाणं ॥३॥
जिणिंददेवाणणणिग्गयस्स, जा सामिणी वीणहरा सुयस्स ।
सा राउ नाणं मम सुद्धवत्था, वाएसरी पुत्थयवग्गहत्था॥४

॥ इति ॥

॥ अथ श्रीवीरप्रभुस्तुतिः ॥ उपजाति ॥

सूरं सुधीरं जिय कम्मवीरं, संतं महंतं भुवणिक्कवीरं ।
सुवण्णवण्णं सिरिवद्धमाणं, भत्तीइ वंदे सिरिवद्धमाणं ॥१॥
वियक्खणा लक्खणलक्खियंगा, आणंदकंदा गयमोहसंगा ।
भवाण ते दिंतु सुयं जिणंदा, कल्लाणवल्लीण विसालकंदा॥२
मोहंधयारंमि पईवकप्पं, विवेयरुक्खंकुरनीरकप्पं ।
जिणागमं जीवदया निहाणं, नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं ॥३
सिद्धाइया पंचमुहे निसन्ना, निच्चं सकण्णा चउरे पसन्ना ।
पलासवन्ना नयनाइसत्था, सुहाय सा अम्ह सया पसत्था ॥ ४

॥ इति ॥

॥ श्रीवीरस्तुतिः ॥

(द्रुतविलम्बितम् ।)

वदनकान्तिविभासितदिङ्मुख !
मुनिजनोच्चयसेवितपत्कज ! ।
भवभृतां भवभावविभासक !
वितर मे जिनवीर ! सुवाञ्छितम् ॥ १ ॥

जगति गीतगुणा गुणिनां गणै-
विंपुलसिद्धिवधूहृदयङ्गमाः ।
विशदमार्गविकाशनतत्परा
जिनवरा जनतापविभेदकाः ॥ २ ॥

जिनवराननपद्मविनिर्गता
नयगमादिमहोर्मिविभासुरा ।
सुगहना मुनिहंससुसेविता
जयतु सत्यजला वचनापगा ॥ ३ ॥

सुरगणैः सततं कृतसेवना
भयदसिंहकृतासनकासना ।
हरति विघ्नगणं भविनां च या
जयतु सा खलु शासननिर्जरी ॥ ४ ॥

॥ इति वीरस्तुतिः ॥

॥ श्रीसिद्धचक्रस्तुतिः ॥

(शिखरिणी)

महावीरेण श्रीचरमजिनराजेन जगदे
परं यन्माहात्म्यं जगति विदितं चित्रजनकम् ।
महाव्याधिव्याघ्रोरगभयविनाशेऽप्यलमलं
स्तुवे तान्यौत्सुक्यात्खलु नवपदान्याशु विधिना॥१॥

सुरेन्द्राद्यैर्वन्द्या भविजनमलक्षालनघनाः
तथा मानोत्तुङ्गक्षितिधरविनाशे पविनिभाः ।
जगुः सार्वा सर्वे वरनवपदाराधनवशा-
ज्जना भव्या भेजुः पदमविचलं शान्तहृदयाः ॥ २ ॥

सुमिथ्यात्वध्वान्ते रविकरनिभं बोधजनकं
तथा गर्जद्वादिद्विरदनिकरे केसरिनिभम् ।
मुनिव्रातैर्ध्यातं नवपदपदार्थादिकथकं
सुरैर्वन्द्यं वन्दे प्रवचनमहं सौख्यजनकम् ॥ ३ ॥
अधिष्ठात्री देवी सुरगणनता सुन्दरविभा
स्फुरत्सौर्यो देवो नवपदरतो देवमहितः ।
सुरीदेवावेतौ भुवि विमलसङ्घस्य सततं
तथा विघ्नव्रातं चतुरविजयस्यापि हरताम् ॥ ४ ॥

॥ इति सिद्धचक्रस्तुतिः ॥

॥ अथ पर्युषणापर्वस्तुतिः ॥

(शार्दूलविक्रीडितम्)

भो भो भव्यजनाः ! सदा यदि शिवे वाञ्छा तदा पर्वणो
भक्त्या पर्युषणाभिधस्य कुरुत स्वाराधनं सादरम् ।
द्रव्यार्चां सुमचन्दनैः स्तुतिभरैः कृत्वा च भावार्चनां
मानुष्यं सफलं विधत्त सुमहैरर्हन्मतोल्लासकैः ॥ १ ॥
कृत्वा मांस्तिथिदिग्भगाब्धिवसुदिग्युग्मोपवासाँश्छुभान्
रम्यार्चां च विधत्त भो ! भवहरां तीर्थङ्कराणां नवाम् ।
कृत्वा षष्ठतपोऽन्तिमेशितुरलं श्रुत्वा चरित्रं मुदा
वीरेन्दोर्जनुरुत्सवे कुरुत सूल्लुध्वनीन् भो जनाः ! ॥२॥
जीवानामवनं विधत्त सुधियः ! कृत्वाष्टमं नागव-
च्छ्राव्या निर्मलभावना भविजनैः कैवल्यलक्ष्मीकृते ।
कल्याणानि जिनस्य भो ! गणभृतां वादं च पार्श्वप्रभु-
नेम्याद्यन्तरकाणि भोः ! श्रृणुत सन्नाभेयवृत्तं तथा ॥३॥

साध्वाचारमखण्डितं पिवत सन्मौलं च सूत्रं श्रवै-
श्चैत्यानां परिपाटिकां तनुत च स्वालोचनां वार्षिकीम् ।
जन्तून् क्षाम्यत वत्सलं कुरुत भोः ! साधर्मिकाणां मुदा
विघ्नौघं चतुरस्य वा हरतु सा सङ्घस्य सिद्धायिका ॥४॥

॥ इति ॥

॥ अथ दीपमालिकापर्वस्तुतिः ॥

(स्रग्धरा)

ऊर्जामायां जगामामृतपदमतुलं योऽमरा यं भजन्ते
हृद्रम्या मोक्षकाले भविजनमनहृद्देशना येन दत्ता ।
यस्मै नित्यं नमन्ति प्रवचनमसमं प्रादुरासीच्च यस्मा-
द्यां भा यस्य यस्मिन् विमलगुणगणो वीरनेता स पातु १
अष्टद्रव्यैर्जिनानां भववनदहनं पूजनं पावनं त-
त्सावद्यत्यागरूपं शमरसजनकं पौषधं चापि रम्यम् ।
कल्याणानां च जापं वरविधिविशदं देवतावन्दनं च
कृत्वा दीपालिकायां वहुभविकजना लेभिरे मोक्षलक्ष्मीम् २
येन प्रादुर्भवन्तं जिनमुखकमलाद्ग्रोमरन्दं निपीय
वादिव्रातैरजेया नयगमगहना गुम्फिता द्वादशाङ्गी ।
यस्मात्प्राप्य प्रसादं मुनिजननिवहाः शाश्वतं स्थानमापु-
र्यो लब्ध्याऽष्टापदाद्रौ जिनगणमनमद्गौतमं तं नमामि३
आरूढा भीष्मसिंहं सुरजननिकरैः सेविता या नितान्तं
विघ्नव्रातं जनानां जिनपमतभृतां या हरत्यादरेण ।
इत्यार्षैर्वर्णिता या सुचतुरविजयेनागमे येन दृष्टा
देवी सिद्धायिका सा जयतु जिनरता स्रग्धरा सान्द्रमूर्तिः४

॥ इति ॥

॥ मङ्गलाष्टकम् ॥

(शार्दूलविक्रीडितम् ।)

नाभेयादिजिनोत्तमा जितभया विश्वे सदा पावनाः
सौभाग्यावलिकारकाः सुखकरास्तीर्थङ्कराः शङ्कराः ।
विश्वानन्दकरास्तमोदिनकराः कन्दर्पदर्पापहा
रोगातङ्कहरा जनस्य सततं कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥ १ ॥
सिद्धाः शान्तरसाः स्वभावविमलाः शान्तिं दधाना जने
सिद्धानन्तचतुष्टया जनिजरामृत्यादिभिर्वर्जिताः ।
राजन्तः शमिनां मनोऽमलगृहे ध्मातानि कर्माणि यै-
र्ये ख्याता भुवनेऽखिले खलु तके कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥ २
विख्याता भुवि पुण्डरीकगणिनः श्रीगौतमाद्यास्तथा
सूरीशा गुणशालिनो जिनमते श्रीभद्रबाह्वादयः ।
अङ्गोपाङ्गविशारदा गुणयुताः श्रीपाठकाः पापहा
दान्ताक्षा मुनयोऽनघाः खलु समे कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥३
सम्मेतार्बुदरैवतामरगिरिश्रीचित्रकूटाचलाः
श्रीसिद्धाचलपावकौ गजपदस्तारङ्गवैभारकौ ।
श्रीकैलासनगोत्तमो हिमगिरिश्चम्पा प्रभासादयो
विश्वे तीर्थमतल्लिकाः खलु समे कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥४॥
श्रीजम्बूमुनिवज्रसिंहगिरयः श्रीस्थूलभद्रादयः
सन्तः श्रेष्ठिसुदर्शनादय इमे गङ्गोर्मिशीलाश्चिताः ।
श्रीसङ्घो गुणसेवधिः प्रवचनाधारो जिनैर्वर्णितो
धर्मः सर्वदयामयः खलु समे कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥ ५ ॥
ब्राह्मी चन्दनबालिका च सुलसा सीता सुभद्राऽञ्जना
सेना शीलवती शिवा द्रुपदजा कुन्ती कलावत्यपि ।

रेणा राजिमती तथा नलनृपप्राणप्रिया देवकी
सत्योऽन्या अपि शोभनाः खलु समाः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ६
श्रीनाभिप्रमुखा जिनेन्द्रपितरः सिद्धार्थभूपस्तथा
विख्याता जिनमातरो जगति याः सौभाग्यभाग्यप्रदाः।
चक्राख्या भरतेश्वराश्च भरतश्रीब्रह्मदत्तादयः
शिष्टा ये श्रुतपारगाः खलु समे कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥७॥
शौर्यस्वाः प्रतिविष्णुविष्णुवलिनो मोक्षेच्छवो ये तथा
सङ्घे शान्तिकराः सदा गुणिरताश्चक्रेश्वरीमुख्यकाः।
श्रीमातङ्गकपर्दिमुख्यविबुधाः सम्यग्दृशां विघ्नहाः
सर्वे ते जिनशासनोन्नतिकराः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥८॥

(वसन्ततिलका)

नित्यं प्रभातसमये समचित्तवृत्ति-
र्यो मङ्गलाष्टकमिदं शुचिधीरधीते।
अत्यन्तशुद्धमनसश्चतुरस्य तस्य
प्रादुर्भविष्यति हृदि प्रवरात्मकान्तिः ॥ ९ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीमद्-हेमचन्द्राचार्यस्तुतिः ॥

(त्रोटकम्)

शुचिवाणिजवंशवियन्मिहिरं, शरवर्षमिते व्रतभारधरम्।
जनवाञ्छितपूरणकल्पतरुं, प्रणमामि सदा प्रभुहेमगुरुम् ॥१
वररूपधरं जनमोदकरं, विजितेन्द्रियवर्गमगर्वगिरम्।
रचिताद्भुतशास्त्रमपास्तशरुं, प्रणमामि सदा प्रभुहेमगुरुम्॥२
मुनिवृन्दनृपं भुवने विदितं, बुधलोकमतं नृपवृन्दनतम्।
विदितागमतत्त्वमभिज्ञगुरुं, प्रणमामि सदा प्रभुहेमगुरुम्॥३

नृपबोधकरं गुणरत्नधरं, भुवने भविनामुपकारकरम् ।
कविगर्वहरं दितमानतरुं, प्रणमामि सदा प्रभुहेमगुरुम् ॥ ४
मथितोन्मदमन्मथमादभरं, जितवादिगणं गतदोषभरम् ।
मतिवैभवनिर्जितदेवगुरुं, प्रणमामि सदा प्रभुहेमगुरुम् ॥ ५
भुवनोद्भटकर्मभटातिरथं, भविनामथ दर्शितमोक्षपथम् ।
करुणामृतसिक्तसुधर्मतरुं, प्रणमामि सदा प्रभुहेमगुरुम् ॥ ६

(वसन्ततिलका ।)

इत्थं स्तुतो मुनिपतिर्गुरुहेमचन्द्र-
श्चन्द्रांशुनिर्मलयशाश्चतुरेण भक्त्या ।
पञ्चासरेशभवने प्रथितावदातो
नित्यं तनोतु भविसद्मनि मङ्गलानि ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनुं स्तवन ॥

(अरणिकमुनिवर चाल्या गोचरी । ए देशी)

मुनिसुव्रतजिन तुज मुज अंतरु,
किम भागे भगवंतजी आंकणी ।
भवसागर प्रभु तें सेहेजे तर्यो,
हुं भवदरिये नाथजी ।
सुख अनंतां तमे प्रभु भोगवो,
मुजने नहि तस लेशजी ॥ मुनि० ॥ १ ॥
ज्ञान अनंतुरे प्रभु तुजने सदा,
लोकालोक प्रकाशजी ।

अज्ञाने करी हुं मुझ्यो घणुं,
मारगमां जिम अंधजी ॥ मुनि० ॥ २ ॥
दरशन चारित्रादिक गुण घणा,
तेहनो तुं भंडारजी ।
मुजथी सघला ते अलगा रह्या,
रंकथकी जिम भोगजी ॥ मुनि० ॥ ३ ॥
मोहादिक जे भावसुभटघणा,
जित्या तें निरधारजी ।
तेह तणे वश पडिओ हुं सदा,
छोडावो जगनाथजी ॥ मुनि० ॥ ४ ॥
राग द्वेष मुज मन मंदिर वसे,
नाठा तुजथी तेहजी ।
आठकरमनो मुजने भय घणो,
ते तो तुजथी त्रासेजी ॥ मुनि० ॥ ५ ॥
एम अनंता गुण प्रभु ताहरा,
कहेतां नावे पारजी ।
मुजमां अवगुण तेम अनंत छे,
शुं कहुं तुजने नाथजी ॥ मुनि० ॥ ६ ॥
तुज दरशनथी मुज कारज सर्युं,
अंतर थासे दूरजी ।
निर्मल आतमकीर्तिप्रकाशथी,
चतुर थसे निजरूपजी ॥ मुनि० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

॥ श्री महावीरस्वामिनुं स्तवन ॥

(अजित जिनंदसुं प्रीतडी । ए देशी)

वीरजिणंदसुं विनती,
मुज सुणजो हो, नीकी अरदास के।
तुज दरशन विना नाथजी,
हुं भमियो हो, भव वनमां अनाथके ॥ वीर० ॥१॥
सूक्षम बादर भेद जे,
थावरना हो, भाख्या बावीस के ।
काल अनंतो तेहमां,
हुं वसीओ हो, निश्चय जिनराज के ॥ वीर० ॥२॥
छेदन भेदन ताडना,
हुं पाम्यो हो, परवशता जोग के ।
जिम तिम विकलेंद्रि पणुं,
मुज मलीयुं हो, आपदनुं गेह के ॥ वीर० ॥ ३ ॥
तिर्यंच नारकने भवे,
दुःखराशि हो, सहि में विकराल के ।
करमलघुता योगथी,
हुं पाम्यो हो, नर निर्जर देह के ॥ वीर० ॥ ४ ॥
मान लोभ मद मोहथी,
रडवडीयो हो, वली नरक निगोदके ।
एम अनंता भव कर्या,
तुज शासन हो, विना सघला फोगके ॥ वीर० ॥५॥

पुण्य उदय पामी करी,
तुज शासन हो, आव्युं मुज हाथ के।
दुख दोहग दूरे टल्यां,
पामी स्वामी हो, मुज शिरनो ताजके ॥ वीर०॥६॥
शरण पड्यो हुं ताहरे,
मुज करजो हो, निज सद्दशरूप के।
आतम कांति उल्लासथी,
तुज सेवा हो, नही छोडे चतुरके ॥ वीर० ॥ ७ ॥

॥ इति ॥

मातर तीर्थका स्तवन।

(भैरवी-कव्वाली। दीनानाथ अबके दया दिलमें लाओ-देशी)

कृपानाथ अर्हन् प्रभु मुझको तारो,
सरण है मुझे नाथ तूं ही आधारो।
जगन्नाथ तारकपनेको विचारो-सरण-अंचली०
पंचम विन पंचमगति, होवे नहीं निरधार।
इम जानी पंचम प्रभु, लियो हृदयमें धार।
मेरे पंच परमाद दूरे निवारो-सरण०-॥ १ ॥
पंच पंचको त्यागके, कियो पंचसे राग।
पंचेंद्रिय निग्रह करी, पंचभिदा धुन लाग।
हुए शुद्ध तैसे ही मुझको सुधारो-सरण०- ॥ २ ॥
पंच दूर करी पंचका, दिया शुद्ध उपदेश।
पंच पदे धुरि राजता, जैसे ज्योति दिनेश।
धरुं ध्यान तुमरा यही जन्म सारो-सरण० ॥ ३ ॥

सुमति सुमतिको दीजिए, लीजिए सुजस अपार ।
रीजिए सेवक भक्तिसे, कीजिए भवजलपार ।
वली कर्मबलको पटकके पछारो—सरण० ॥ ४ ॥
मातर तीरथमंडनो, सुमतिनाथ भगवान ।
आतमलक्ष्मी कारणो, वल्लभ हर्ष अमान ।
कियो देव साचा मैं तुमरो दिदारो—सरण० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥



गवैया-प्राणसुखविरचितस्तवनसंग्रह ।

(१) श्रीमहावीरस्वामिस्तवन ॥

(रागिणी- पहाडी-लावणी. महावीर चरनमें-देशी)

महावीर जिनवर मेहरबानी, मुझसे तनिक करनाजी-म० अं।
तुमनाथ जगतमें बलिया, भवसंकट दूर हरनाजी-म० ॥१॥
तुमदयासिंधु कहलाते, मोरे शिरपर कर धरनाजी-म०॥२॥
मैं भवोभव भववन भटकी, तुमरा लिया सरनाजी-म०३॥
हम तुम कइ भवकी सगाई, वो ध्यानमें धरनाजी-म०॥४॥
मेरे कर्मकी कठिन कहानी, मैं क्या करुं वरनाजी-म०॥५॥
मेरे प्राणके प्यारे प्रभुजी, तेरे चहुं चरनाजी-म०॥६॥

॥ इति ॥

(२) श्रीशांतिनाथ जिनस्तवन ॥

(विहाग-ताल-अद्धा-नयना कटारीरे लागीलो-देशी)

मोरे मंदिरमेंरे आओ आओ महाराज-अंचली ॥
मोरे मंदिरमें जव तुम नाहीं, आ वसते चार चंडाल मांही
मेरो चले ना इलाज-मोरे० अंचली ॥
मुझको वनाकर मित्र मेरो माल धन सव खागयो,
ऐसो अधर्मी मोह कपटी जालमें लिपटागयो ।
कंकर हीरो परखी न जान्यो, अंध वनी वो मित्र ही मान्यो,
मेरो गयो सुखसाज-मोरे०॥१॥
क्रोध क्रूर कृतघ्न सव कर्त्तव्यमें साथी कियो,
शांति सुधारस छोड मैनें क्रोध विष प्यालो पियो ।
सुमति सियानी हैये न आनी, कुमति कुटलको रानी प्रमानी
भवमें फिरूं खोय लाज-मोरे०॥२॥

लालच लगाकर लोभने लूटा सरे बाजारमें,
किससे करुं फिरियाद को मिलतां नहीं संसारमें ।
सब जगजनमन वो हीं भायो, यही समझकर मैं गभरायो,
आयो तोरे घर आज–मोरे० ॥ ३ ॥
मुझको मैं समझा मैं ही हूं मुझसा नहीं कोउ जहानमें,
आगेकी थी क्या होगी क्या उसका किया नहीं ध्यानमें ।
अब पछताउं किससे सुनाउं, मनमें मुझाउं अब कहां जाउं
तुंही मेरो सिरताज–मोरे० ॥ ४ ॥
प्रभु तार या अब मार मैं तैयार वार हजार हूं,
मेरो अभी है एक या संसारमें आधार तूं ।
प्राणके प्यारा पार उतारा, नाथ हमारा काज सुधारा,
जयजय जपू जिनराज–मोरे० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

(३) श्रीशांतिजिनस्तवन ॥

(पील्लू–कहरवा । कनैया मोसे खेलो होरी–देशी)

श्रीशांति जिनेश्वर साहिबजीसे स्नेह लगाना,
स्नेह लगाना स्नेह लगाना स्नेह प्रभुसे सदा निभाना–शां०अं।
जग सरवर जिम कमल है प्रभु तिम, भ्रमर रंग मन लाना।
प्रभुगुण अनुप सुगंध रंगमें, अपना रंग मिलाना–श्रीशां० १॥
सोयरहा जीव काल अनादि, अव उसको ही जगाना ।
लूटतहै धन मोह लूटारा, खाली करत खजाना–श्री०॥२॥
तृष्णा नारके वस हो मांगत, घरघर भीख दीवाना ।
वाको अंत न आयो न आवे, काहेको जनम गवाना–श्री० ३

कूड कपट घट भीतर जबतक, होवत नाही ज्ञाना ।
आपको आपही सोचके अपना, सच्चा रूप दिखाना–श्री० ४
जिनवर भाषित तत्त्व पदारथ, दिलसे नाही भुलाना ।
प्राण परमसुख कारण निशदिन, गाओ प्रभुका गाना–श्री० ५

॥ इति ॥

(४) श्रीनेमिनाथजिनस्तवन ॥

(पीलू–खीमटा । हांरे राजा तिहारी नजरिया–देशी)

मोहे प्यारा प्रभुने विसार दियोरे ।
क्या मैं करुं कहां जाउं अरे–मोहे प्यारा० अंचली ॥
प्रीत विसारी भवभवकेरी, जबसे गये फिर नजर न फेरी,
मोरे स्वामीने कैसो ये काम कियोरे–क्या० ॥ १ ॥
दौलत औरत माल खजाना, सोही मेरे मन मिट्टीसा माना,
मोपे दाताने कियो कठिन हियोरे–क्या० ॥ २ ॥
जग जंजालमें क्यों लिपटाउं, भेष धरी भगवतको मनाउं,
मैंने दिल ये दुनियासे उठाय लियोरे–क्या० ॥ ३ ॥
शिवपुरवासी हे अविनासी!, एक ही तेरे दरसका प्यासी,
प्राणप्यारा जिनंदा जुग जुग जियोरे–क्या० ॥ ४ ॥

॥ इति ॥

(५) श्रीपार्श्वनाथजिनस्तवन ॥

(सोरठ– दादरा । काहु सोतनके घर बलम रहे–देशी)

तीन भुवनके सिरदार पार मोहे उतारजी
वामाकेनंदन आयो मैं वंदन तुमरे दुवारजी
दरसन तुमे देत नहीं, खबर हमरी लेत नहीं,
भवदधि बिच आन फस्यो हूं, मोहे उगारजी–तीन० ॥१॥

भव अंधेरी रैन भरी, उनमें सुझत नाहीं जरी,
बिपता मोपै आन परी, अनुचरपर नजर करी,
झगमगे प्रभु ज्योत तेरी, भवअंधेरी दियो उखेरी,
जगतमें जिनराज मेरो, प्राण आधारजी । तीन० ॥ २ ॥

॥ इति ॥

(६) श्रीपार्श्वनाथ जिनस्तवन ।

(पहाडी–लावणी । परदेशी सैयां नेहा लगाये)

जो घरी जाए प्रभुके ध्यानमें धन धन भवि मानो,
सारमें सार एही संसारमें विचारमें आचारमें
येह बात प्रमानो—जो घरी० अंचली ॥
मोह मदारी मनुष्यको, मर्कट ज्यूं ही बनाय ।
हरघरी हरपल हुकमसे, विध विध नाच नचाय ।
करावत सबको सलामी, उमरभर वैसी गुलामी,
अमूल्य नरभव जग पामी, ऐसा अवसर खोना नहीं–
संसारमें विचारमें आचारमें येह बात प्रमानो । जो० ॥१॥
बाहिर सुखके कारणे, अनेक कष्ट सहाय ।
सहसमें एक हिसाबसे, धर्ममें डिग न भराय ।
धर्मसे संपत पाई, वाकी कछु करले कमाई,
धर्म विन रहे न सदाई, प्राण परम सुख चाहे जो–
संसारमें विचारमें आचारमें येह बात प्रमानो । जो० ॥२॥

॥ इति ॥

(७) श्रीआदिनाथ स्तवन ॥

(झींझोटी–दादरा । जाओ जाओ सैयां मोसे न वोलो)

मानो मानो मेरी इतनी अरज हे जग तारक री ।
बीत गई सो गई अव विगरी आप सुधारकरी ।मानो०अं॥

आयो मैं आस धरी, तुमें छोडुं न एक घरी ।
आपजो ऐसे अनोखे रहो मेरो कौन उद्धारक री ।मा०१॥
देर करो न जरी, मोहे पीडत कर्म अरी ।
प्राणके पालनहार जपुं तुम नाम मुबारक री । मा० ॥२॥

॥ इति ॥

(८) श्रीआदिनाथ जिनस्तवन ।

(भैरवी—कव्वाली । मैं सो जाउं या मुस्तफा कहते कहते)

दीनानाथ अबके दया दिलमें लाओ ।
महामोह फंदेसे मइका छुडाओ ।
आनादि जो अरिहा प्रभुजी कहाओ । म० अंचली ॥
मैं जगवासी जीव हूं, जीवन धर्म अजान ।
जीवनकी जंजालमें, और कियो नहीं ध्यान ।
अधर्मीको धर्मी हेधर्मी बनाओ ॥ महा० १ ॥
बाल उमरमें मनुषको, जैसो हो व्यवहार ।
मानो बाल अजान मैं, तुम जगत्पिता आधार ।
परमपद पानेकी पोथी पढाओ ॥ महा० २ ॥
जगतगुरु जगनाथजी, जगके तारन हार ।
जो होवे तुमरी कृपा, तो रुलना मिटे संसार ।
करमके कटकको पटकके हटाओ ॥ महा० ३ ॥
लख चौरासी अगनमें, जरत मरत हरबार ।
धर्म नीर बिन जगतमें, कोई नहीं आधार ।
कठिन मेरे भवकी अगनको बुझाओ ॥ महा० ४ ॥
मृगजल सम जग आसकी, प्यासमें रह्यो लुभाय ।

ज्यूं आगे आगे चलूं, दूर ही दूर दिखाय।
प्रभु देशनामृत पानी पिलाओ ॥ महा० ५ ॥
मुझसम अधम अनेक ही, तारे तुंही जगदेव।
अब एक और ही तारिए, हे देवाधिदेव।
मेरे प्राणको आप जैसो बनाओ ॥ महा० ६ ॥

(९) श्रीवीतराग देवस्तवन।

(भीमपलासी–दादरा। रामबाण वाग्यां होय ते जाणे)

राग वीतराग मोहे लागत है प्यारो।
कोई गावत है महा पुण्यवारो,
कोई सुनत है महा भाग्यवारो ॥ राग० अंचली ॥
छ तीस राग रागिनीसे, एही राग है न्यारो।
तान ताल सुर लयकी संपूर्णता,
जाने कोई समकितवारो ॥ राग० १ ॥
आहत अनाहत भेद नादके, ज्यूं निश्चय व्यवहारो।
भेद अनाहत रागभवि तुमे, घटके भीतर धारो ॥राग०२॥
धनको राग तिरियाको राग, राग राग जग सारो।
प्रभुको राग वीतरागको माग, भवि तुमे ज्ञानसे विचारो३॥
रात दिनन व्यवहारिक धुनमें, निश्चय राग ना विसारो।
जैसे तारे वहुत हैं नभमें, रवि विन जग अंधियारो ॥रा०४॥
राग सहित प्रभु रागको जो भवी, निशदिन करत उचारो।
दिन दिन बढते पुण्य प्रभावसे,
होवे निज प्राणको सुधारो ॥ राग० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥

(१) वैराग्य पद । काफी–दीपचंदी ।

धर्मका ध्यान भूल मत भाई, तोरी वनत वनत वनजाई अं०।
जग सागरमें मोहरायने, अपनी जाल बिछाई ।
मनुष्य मीन एक छिन सुखकारन, उनमें जात फसाई–
खवर पेहले नहीं पाई–धर्मका० ॥१॥
काया कामिनीके संग सोते, रात दिनन लपटाई ।
आयु जल चल जावत पल पल, धर्मनाव न चलाई–
पीछे क्या हो पछताई–धर्मका० ॥ २ ॥
सोदागर कर सोदा ऐसा, जामें गांठ न जाई ।
ठग व्यापारीका ठाम यहां है, तोको भीख मंगाई–
पास न रहेगी पाई–धर्मका० ॥ ३ ॥
मेरी मेरी कर मरत विचारी, जगसे करके सगाई ।
मनुज जन्म एक रत्नको पाकर, यूं ही देत गमाई–
दिलमें कछु शोचत नांई–धर्मका० ॥ ४ ॥
वातें वनाके वीत गए दिन, अव मत रहे अलसाई ।
प्राण परम सुख चाहे जो चित्तमें, सेवत धर्म सदाई–
मोक्षकी मिले ठकुराई–धर्मका० ॥ ५ ॥

॥ इति ॥